1997

JANUARY ✻ MONDAY 06

ॐ

दादा भगवान की जीवनी

भगवान के गुण या महिमा कोई लिख नहीं सकता है। परन्तु भगवान के गुणों से उनकी महिमा के शास्त्र भरे पड़े हैं। अकथनीय रूप होते हुए भी उनकी कथा होती रहती है। एक संत ने कहा है ——

" सात समुद्र मसि करूँ, लेखनी सब बनराज
धरती सब कागज करूँ गुरु गुण लिखा न जाये। "

लेकिन वो ही शक्ति फिर भी भगवान बन कर लेखनी में आकर लिखाती है। सर्वशक्तिमान

JANUARY ✻ TUESDAY 07

सर्वत्र, परमेश्वर को सब तरफ से प्रणाम कर उसकी शक्ति से शब्द लिखा रहा है। वह अनाम रूप है, फिर भी वह प्रकट होता है। भक्तों के उद्धार हेतु साकार रूप में अपना आदर्श प्रस्तुत करने के हेतु वह ज्योति इधर आती है। धन-२ मती-२। मुश्किल से हाथ आता है हीरा कनी-२। दादा भगवान करुणा प्रेम के सागर, महात्मा, प्रभु पारब्रह्म परमात्मा, अकथनीय, अमर, दिव्य ज्योति अमृतदाता, निर्विकार, निरंजन, चन्द्रमा जैसे शीतल, पूर्ण भगवान अद्वितीय अलौकिक, अद्भुत आनन्द, प्रेम व करुणा की मूर्ति, अवर्णनीय ऐसे सच्चे भगवान नि० सा० रूप धारण कर जग में भक्तों के उद्धार के लिये प्रकट हुए। ब्रह्म ज्ञानी आप परमेश्वर। चर्म की जुबान, इन दिव्य पारब्रह्म परमात्मा का क्या वर्णन कर सकती है। उनका जीवन शान्त, मौन, अखण्ड आनन्द से भरपूर अद्भुत था। कुछ दिव्य आश्चर्य [illegible]

S		9	23	
M		10	24	
T		11	25	
W		12	26	
T		13	27	
F		14	28	
S	1	15		
S	2	16		
M	3	17		F
T	4	18		E
W	5	19		B
T	6	20		
F	7	21		9
S	8	22		7

ॐ

08 WEDNESDAY ✲ JANUARY 1997

पैगम्बर को लिख सकते हैं जो भक्तों ने देखी सुनी, अनुभव की। अधिक तो पूरे सतगुरु का जीवन सामने आदर्श और अनुभव प्रकाश है। पैगम्बर का जीवन ही ज्ञान है। ऐसे सच्चे पैगम्बर धरती पर हैं तो कईयों का उद्धार होता है। वैसे भी उनके vibration सारे पर रहते ही हैं।

ऐसे पूर्ण दादा भगवान इस पृथ्वी पर सन् 1891 में 3 जनवरी को प्रकट हुए।

Born with a golden spoon in mouth.

बचपन से ही उनका जीवन साधारण मनुष्य से कई गुना पवित्र और पावन था। दादा भगवान का बचपन भी असाधारण रहा। उनकी करुणा का दीदार, उनके विद्या अध्ययन के समय भी मिलता था। खुद पूर्ण जानकारी रखते हुए भी दूसरों के उद्धार के लिये

09 THURSDAY ✲ JANUARY

अध्यापक से प्रश्न करते थे, ताकि उन्हें पूरा उत्तर मिल सके। निष्कामना का गुण भी पहले से ही था जैसे रविवार के दिन लोगों को डाक व तार मिलने की कठिनाई होती थी तो पहले ही इकट्ठे करके रखते थे ताकि जरूरत के समय सबका काम निकले।

सृष्टि में हर पैगम्बर का जीवन कुछ खास विशेष कर्म के लिये होता है। दादा भगवान ऐसे सिन्धियों के उद्धार के लिये प्रकट हुए हैं। उस समय हैदराबाद सिंध में स्त्रियों पर खूब अत्याचार थे। विशेषतया खास त्योहारों पर जब उनके मायके से ससुराल में कुछ कम मिलता था। विधवा से भी अत्यन्त क्रूर व्यवहार होता था। इस प्रकार दुखी होकर कितनी स्त्रियाँ अपने को आग लगाकर मर जाती थीं। ऐसी स्त्रियों की दुर्दशा देखकर दादा भगवान को अत्यन्त करुणा होती थी कि कैसे इन अबोध स्त्रियों को कष्टों से छुड़ाया जाये। उनका हृदय कोमल था। पंचायत में भी इस तरह की चर्चा करते। ऐसा सच्चा

S		12	26
M		13	27
T		14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	
S	5	19	
M	6	20	
T	7	21	
W	8	22	
T	9	23	
F	10	24	
S	11	25	

JAN 97

ॐ

ॐ

व दृढ़ संकल्प उनका पूरा होकर ही रहा जो आज कई स्त्रियों को ताकत मिली है। जीने की कला खुद सीखकर औरों को भी ताकत देती है।

दादा भगवान का व्यवहारिक जीवन →

दादा भगवान का व्यवहारिक जीवन 50 वर्ष तक सुख आराम से ही बीता। व्यवहारिक जीवन में भी उनकी समझ थी - How to live. दुनिया में कई लोगों को दौलत है पर दिल नहीं, दिल है तो दिमाग नहीं। दादा भगवान हर तरह से शहंशाह होकर रहे। कपड़ो के अनेक कारखाने थे। विदेशों में उनका आना जाना था। मौज ऐसी थी जो कोई मेहमान आता था तो उसके लिए नई गाड़ी लेते थे। फिर उनको

घुमा फिरा कर बेच देते। कपड़े की दुकान में भी शकल पहचान लेते थे। किस quility का है। उसे उस तरह का कपड़ा दिखवाकर बिना बात के एक शब्द में सौदा कर लेते। एक बार दादा भगवान ने एक आदमी को तन मन से तकलीफ के समय बहुत मदद की। वह आदमी इतना शुक्राना करने लगा जो उसने कहा मैं अपनी चमड़ी के जूते भी बनाकर पहनाऊँ तो भी आपका एहसान नहीं उतार सकता। परन्तु दादा भगवान ने जरूरत के समय कुछ कहा तो उसने चमड़ी क्या दमड़ी से भी मदद न की। यह भी एक तरफ से अच्छा ही हुआ। भगवान

ने बचपन से ही देना सीखा था लेना नहीं।

दादा भगवान को व्यापार के कारण 5. विदेश में आना जाना पड़ता था। एक बार भगवान विदेश में थे। वहाँ से उन्होंने हीरे खरीद कर सिंध भेजे। उनके पास केवल चार आने बचे थे। और आने जाने के रास्ते बन्द

S	9	23	
M	10	24	
T	11	25	
W	12	26	
T	13	27	
F	14	28	
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	FEB 97
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

ॐ

ॐ

13 MONDAY ✲ JANUARY
✧ LOHRI ✧ 1997

हो गये। पैसा भी बाहर से आ जा नहीं सकता था। दादा भगवान बस की लाइन में खड़े थे अचानक ख्याल आया कि इधर से शरीर छूट जाये तो कोई लाश उठाने वाला भी नहीं होगा। उसी समय एक आदमी आया और भगवान से कहा कि मुझे हीरे खरीद दियो। भगवान ने उसे एक लाख के हीरे खरीद के दिये और दस हजार उनको कमीशन मिली। तो एक दम उनको अनुभव मिला, भगवान तो बड़ा मेहरबान है। भगवान क्या नहीं कर सकता है।]

6 दादा भगवान का कपड़ा बेचने का भी ढंग था। order पर कपड़ा बनवाते, एक डिजाइन का दो-दो मीटर कपड़ा बनवाते पैसा पूरे थान का देते, नहीं तो मिल वाले बनाकर नहीं देंगे। फिर दादा भगवान बेचते भी उसी हिसाब से और बड़े-2 घराने की स्त्रियां बड़े शौक से

14 TUESDAY ✲ JANUARY
✧ MAHA SANKRANTI ✧

कपड़ा पहनती क्योंकि एक के जैसा कपड़ा दूसरे के पास नहीं हो सकता था। वे बड़े शान से कहती हमने दादा भगवान से कपड़ा खरीदा है]।

7 [दादा भगवान इतनी करुणा वाले थे, कभी कोई स्त्री को कोई चीज दुकान पर पसंद आ जाती, परन्तु वो इतना पैसा खर्च नहीं कर सकती थी तो दादा भगवान उसको सस्ते में ही दे देते। वह इतनी खुश हो जाती और सभी को सुनाती]। [दादा 8
भगवान सभी को कपड़ा बड़े प्रेम से दिखाते चाहे उन्हें मालूम भी होता कि इतने कपड़ा नहीं खरीदना है। तो भी बड़े प्यार से दिखाते। कभी उनके लड़के नाराज भी होते थे तो दादा भगवान कहते इसमें भी हमारा फायदा ही है। इस बहाने कपड़े को हवा भी लग जाती है। और कहीं कोई कीड़ा छिपा होगा तो वह भी निकल जायेगा।]

9 [फिर एक दिन प्रकृति की लीला ~~बहुत~~ बदल गई क्योंकि भगवान का जब

S		12	26
M		13	27
T		14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	
S	5	19	
M	6	20	
T	7	21	
W	8	22	
T	9	23	
F	10	24	
S	11	25	

JAN 97

ॐ

ॐ

प्रकृति को ज्ञान प्रकाश करना मंजूर था।
अचानक ५० वर्ष में प्रकृति प्रातिकूल हो गई।
उनको विदेश से समाचार मिला कि उनके manager
ने दिवाला निकाल दिया है। लीला ऐसी हुई जो
ऐसा राजा जो एक दिन ऐसा आया जो रास्ते
में गुजर रहे थे तो जेब में नया पैसा भी न था।
प्रकृति की लीला देखकर शान्त में बगीचे में एकान्त
में जाकर बैठते। आन्तरिक खोज शुरू हो गई। सब
क्या है? पदार्थों की नाशवरता का अन्दर में बोध
होने लगा।

[एक दिन एक ज्योतिषी ने दादा
भगवान का हाथ देखकर कहा आपके हाथ में राजाई
लिखी हुई है। दादा भगवान ने कहा - मेरी तो
सारी राजाई खतम हो गई है। अब क्या है।
परन्तु यह बात सच ही निकली जो दादा भगवान
ने ज्ञान की परम राजाई प्राप्त हो
गई। ब्रह्म ज्ञान से सृष्टि के King हो गये।]

दादा भगवान को किसी प्रेमी ने आकर
लाल जी गुरु ब्रह्मज्ञानी की बात कही। वह प्रेमी
गुरु को करांची में ले आया था। दादा भगवान
को गुरु महाराज से मुलाकात हुई। सारे शहर
में मालूम हो गया था कि ऐसे गुरु आये हैं जिससे
कोई पहुँच नहीं सकता है। सब सन्त उनसे शास्त्रार्थ
के लिये गये पर लालजी भगवान के निश्चय
पर नमस्कार करने लगे। दादा भगवान को उनकी
बात से काफी आनन्द आया। सच की आन्तरिक
खोज शुरू हो गई। लाल जी भगवान ने दादा भगवान
को उपदेश दिया कि दिवाला तो व्यापार में
निकलता है। कभी नफा कभी नुकसान पर
तुम आत्माकार का तो कभी दिवाला निकल
ही नहीं सकता है। सच ऐसा था जो दादा
भगवान ने झट से catch कर लिया। वे तो
खुद ही अवतार थे। लीला मात्र खेल ऐसा

S		9	23
M		10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

FEB 97

ॐ

ॐ

17 FRIDAY ✻ JANUARY

1997

हुआ फिर उन्होंने गुरु से उत्तर प्रश्न करके सारा भ्रम निकाल दिया और एक वर्ष तक लगातार गुरु का संग किया।

11 [एक दिन दादा भगवान काफी आनन्द में बैठे थे गुरु के पास उनका दोस्त भी चला था वो जोरे-2 इशारा करता था उठो चलो उठो। उस दिन से दादा भगवान ने निश्चय कर लिया संत ~~दर्शन~~ दर्शन जाइये, साथ न लीजिये कोय।

14 दादा भगवान को ज्ञान से इतनो प्रेम हो गया जो रोज गुरु का जो वचन सुनते उसमें एक अक्षर कापी में लिख देते, फिर उस एक वचन पर सारा भजन बना लेते और रोज गुरु को सुनाते। गुरु भी बड़े प्रेम में आ जाते क्योंकि गुरु को ज्ञान का वारिस कौन होगा और जो उन्नति करे। 12 भगवान को रात को नींद में भी कोई भजन की Point याद

18 SATURDAY ✻ JANUARY

आती उसी समय उठकर लिख देते।

19 SUN

S		12	26
M		13	27
T		14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	
S	5	19	
M	6	20	
T	7	21	
W	8	22	
T	9	23	
F	10	24	
S	11	25	

JAN 97

ॐ

ॐ

दादा भगवान गुरू के पास गये →

दादा भगवान गुरु के पास गये। गुरु के शिष्य जो नीचे रहते थे उन सबसे अनुभव प्रकाश वचन विलास करके उनसे श्रद्धा ली और गुरु से पूरा ज्ञान ले लिया।। दादा भगवान अपनी जीवन की बात सुनाते थे। [एक दिन गुरु के पास गये, गुरु से कहा आप के पास बाला आई थी? गुरु ने कहा कौन बाला? वह स्त्री उसी समय गुरु से मिलकर नीचे उतरी थी। गुरु जी तो अपना ही रूप देखें तो नाम रूप को कैसे जानें। दादा भगवान ने बताया कि पहले तो यह निश्चय न हुआ पर जब खुद अनुभव हुआ तो जाना कि कैसे नाम रूप भूल जाना है।] [दादा भगवान सत्पन्न पूर्ण आत्मा थे तो कोई कहता दादा भगवान Dr. आया है, इन्जीनियर आया है। दादा भगवान नाहे में सब नाम रूप भूल जाते थे क्यों

कि दूसरा देखें तो याद करें।] [एक बार लालजी गुरु। जो सतसंग ने कहा जब तक मेरे को तन, मन, धन, समर्पण न करोगे तो ज्ञान न होगा। तब दादा भगवान ने विचार किया कि गुरु क्यों धन की बात करता है। शायद सब कुछ ले लेंगे। उसी समय गुरु ने कहा तुम्हारे अन्दर पाप बैठा है। तब दादा भगवान को पूर्ण विश्वास आ गया कि गुरु कैसे दर्पण जैसा साफ और सच्चा है। उसको हर बात पहुंचती है। फिर तो पूर्ण श्रद्धा विश्वास से ज्ञान प्राप्त किया। [दादा भगवान को समझने पर गुरु स्तुति करते तब गुरु औरों को सिखाते थे कि तुम्हारा मुँह जलता है जो गुरु की स्तुति नहीं करते शुकराना नहीं करते। वहां 36 जने बैठे थे गुरु ने कहा 36 से जो पहले आ गया। दादा भगवान पहले उठ गये। रेस के घोड़े हैं उनमें पहले पीछे की बात नहीं पर बिजली दौड़ तेज होवे। दादा भगवान को सच का तेज था तो आगे आ गये

S		9	23
M		10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

FEB 97

ॐ

ॐ

22 WEDNESDAY ✻ JANUARY

1997

एक दिन गुरु ने दरवाजा बन्द कर दिया जो शीश को ईश्वर पाये। सब प्रेमी लौट गये पर दादा भगवान ने पूर्ण समर्पण किया। गुरु ने बड़े प्रेम से कहा तू मेरे को झुकता है एक दिन सारी दुनिया तेरे को झुकेगी। गुरु वाक्यम् सत्यम्। जो आज सच का इतना फल निकला है। १२ महीने गुरु का लगातार संग करके आत्म साक्षात्कार किया। गुरु को कहा मिल गया जो था कि मिलना - काम क्या बाकी रहा उसके बाद कई साल आत्मा में पूर्ण सन्तुष्ट कर्म योगी सारी दुनिया से असंग खुद को पाकर खुद की सुजागी में रहा। इत्तफाक से कोई मिला तो उसे ज्ञान सुनाया। जब-२ धर्म ग्लानि होती है तब-२ पाप बढ़ जाता है तो भगवान प्रकट होता है ऐसे दादा भगवान भी स्त्रीयों के उद्धार के लिए प्रकट हुए स्त्रियाँ बिल्कुल गुलाम हो चुकी थी। मर्द स्त्री को बच्चा पैदा करने वाली मशीन

23 THURSDAY ✻ JANUARY

जानता था। सारा दिन जुल्म करते थे भगवान ने उनमें नई जागृता उत्पन्न की एक नई शक्ति। एक बार बम्बई में चौपाकली बन्दर पर दादा भगवान के गुरु आये थे। तब भगवान उनसे मिलकर आये आनन्द और नशे से भरे हुए थे वहां बगीचे में बैठ गये और उन्होंने ब्रह्मज्ञान सुनाना शुरू किया। स्त्रियाँ हैरान हो गई यह कौन है। दादा भगवान प्रकट हुए पर मूर्ख लोगों ने नहीं पहचाना। भगवान को चाह व करुणा हो गई कि कोई भी सच का आनन्द पाकर तृप्त हो जाये, क्योंकि वह तो सर्वत्र अपना आप ही देखते थे।

इतना उनको नशा था कि जो कोई पूछता था आज की ताजा खबर क्या है - भगवान कहते थे आत्मा है यही ताजा खबर है। एक आदमी ने कहा अगर आप भगवान हैं। तो बताईये मेरी [illegible] में क्या है? दादा भगवान ने कहा - आत्मा है मैं ही तो हूँ।

S		12	26
M		13	27
T		14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	
S	5	19	
M	6	20	
T	7	21	
W	8	22	
T	9	23	
F	10	24	
S	11	25	

JAN 97

ॐ

ॐ

1997 JANUARY ✲ FRIDAY 24

दादा भगवान का Jews को ज्ञान देना →

एक दिन दादा भगवान जहाज में सफर कर रहे थे। उसी जहाज में Jews लोग भी सफर कर रहे थे। उनको देश निकाला दिया गया था Christ की वजह से। Christ को Crucify करने के कारण उनको शाप था कि यह भटकते रहेंगे, उनका अपना देश न होगा। बेचारे अत्यन्त दुखी थे। उनको खाली हाथ देश से निकाला गया था। वह सब सोच रहे थे कि हम कहाँ रहेंगे, कहाँ सोयेंगे, क्या खायेंगे क्या पहनेंगे। उस समय दादा भगवान ने विश्वास दिलाया कि तेरी रोजी तुमको ढूँढे। तुम्हारी प्रारब्ध पहले बनी पड़ी है। God has already planned for you. उनको विश्वास दिलाया कि [illegible] पहले ही तुम्हारे लिये खाना तैयार करके रखा है। [illegible] को पहले तो शब्दों का आधार मिला। [illegible] दादा भगवान से पूछा आप कौन है? दादा भगवान ने कहा - I am Christ तो

JANUARY ✲ SATURDAY 25

[illegible] Christ है। तो दादा भगवान ने कहा [illegible] Christ होते। तो बोले, तो सब चुप हो गये [illegible] हुआ। वे जिस शहर में उतरे वहाँ एक ध्यानवान [illegible] रहता था। उसको मालूम था कि मेरी जात वाले को निकाल दिया है। उसने सब उनके लिये इन्तजाम करके रखा था। और [illegible] थोड़ा समय उसका आधार लेकर खड़े हो गये। कोई tailoring करे तो कोई जूते सिले और सबको ताकत मिल गई। उसके बाद world war हुआ तो सब चीज महंगी हो गई। उन्होंने थोड़े ही दिनों में बहुत पैसा कमाया। उस समय तो दादा भगवान शहर में नहीं उतरे पर कुछ सालों बाद उस शहर में गये तो सबने पहचान लिया और प्यार से दादा भगवान के गले मिलकर खुश होने लगे। उन्होंने दादा भगवान को

SUN 26

✧ REPUBLIC DAY ✧

पीठ पर बिठाया। और सारे शहर में रथ लेकर सजाकर घुमाया और जोर-2 से प्यार से कहने लगे — Our Lord Christ has come, Christ has come. उन लोगों ने दादा भगवान की बहुत स्तुति की प्रेम किया। ऐसे भगवान कभी राम, कभी कृष्ण कभी Christ बनकर अपने प्रेमियों के लिये आये और उन्होंने अपने प्रेम जल से सींचकर आबाद किया।

S		9	23
M		10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

FEB 97

ॐ

ॐ

Paul Brunton से मुलाकात →

दादा भगवान की Paul Brunton से मुलाकात एक होटल में हुई। Paul Brunton ने भारत की खोज और रमण महर्षि का पुस्तक जीवन चरित्र का लिखा है। होटल में एक और सिन्धी श्री रामचन्द्र थे, उन्होंने Paul से लिखवाया। Paul ने लिखा - You have come from heaven & you will have to go to heaven.

दादा भगवान ने इस वाक्य को पढ़कर कहा क्या वह इसका अर्थ नहीं बतायेगा। तब भगवान ने ~~कहा~~ उसका यथार्थ अर्थ बताया। वाक्य का यथार्थ अर्थ जानकर Paul Brunton दादा भगवान की ओर आकर्षित हुए और वार्तालाप किया। Paul को [illegible] कहीं दूसरी ओर जाना था। वार्तालाप अधूरा रहा पर दादा भगवान

तो हमेशा free थे। उन्होंने Paul से पूछा आप किस train से जायेंगे। दादा भगवान उसी train से reservation लेकर पहुंचे। Paul हैरान हो गया कि उनको कैसे टिकट मिली। पर वह यह नहीं जान सका कि सृष्टि के मालिक के लिए असम्भव क्या नहीं है। सारी रात बात करके मौज की। तब Paul हैरान हो गया कि भारत में साधारण रूप में बलशाली हुए हैं।

S		12	26
M		13	27
T		14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	
S	5	19	
M	6	20	
T	7	21	
W	8	22	
T	9	23	
F	10	24	
S	11	25	

JAN 97

ॐ

ॐ

दादा भगवान का ज्ञानी और लालो को बात सुनाना →

हैदराबाद में दादी ज्ञानी एक सन्त के पास जाती थी। दादी
लाली का पति उस वक्त जकारता में था। लड़ाई के कारण
रास्ते बन्द थे। अत: पैसे जो वहाँ से आते थे वो बन्द हो
गये। दादी के परिवार में एक बेटी और ससुर थे सरकार
की ओर से उन्हें 30/- मासिक मिलते थे। उनका गुजारा
अच्छा भला चलता था। एक बार सन्त ने दादी ज्ञानी
से 100/- माँगे। दादी का मन चलने लगा कि ऐसी
गरीबी में 100 रु. कैसे दे पाऊँगी. फिर भी सोचा दे दूँगी
दादी के पास लोकूमल आये वो दादा भगवान के दोस्त
थे। उन्होंने दादी की भगवान के प्रति लगन व प्रेम देखा
तो कहा [illegible] भगवान तो ब्रह्मज्ञानी है। इनका तिलकचारी
के वह [illegible] है, वहाँ जाओगे सच्चा ब्रह्मज्ञान मिलेगा।
दादी ज्ञानी दूसरे दिन वहाँ पहुँची। दादा भगवान से कहा
आप मुझे पहचानते हैं दादा भगवान

ने [illegible] से कहा [illegible] और मैं एक ही हूँ। फिर तो
[illegible] शुरू [illegible] दादा भगवान को लोकूमल ने पहले
[illegible] बाती तैयार है तीली लगाने की
देर है [illegible] भगवान तो खुद ही जाननहार थे। फिर
[illegible] से ज्ञान शुरू हुआ 5 बज गये। पानी खाना
सब भूल गया। दूसरे दिन भी ज्ञानी वहाँ पहुँची तो 9 बजे
से 5 बजे तक सत्संग चला। फिर तो दादी ज्ञानी को
प्रेम हो गया। दादा भगवान से नशा चढ़ा तो फिर छूटा
नहीं। कई बन्धन भी आये पर सत्य की जीत हो जाती है।
गुरु सच्चा होवे और भगत सच्चा होवे तो दो मिलकर
एक हो जाते हैं। फिर तो दादी ज्ञानी को जो खुद को
मिला, वह और भी प्रेमियों को वहाँ लाने लगी।
दादा लाली को भी लाया। उसने भी जब ज्ञान
सुना तो नशा चढ़ गया। एक दिन रात को
2½ बजे घर से निकल पड़ी उस समय का
मालूम न पड़ा। रास्ते में Police wala कहने
लगा — भाई आपको मालूम है समय कितना हुआ

FEB 97			
S		9	23
M		10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

ॐ

ॐ

31 FRIDAY ✲ JANUARY 1997

है। आप कहाँ जा रही है? पर वो तो नशे में थी। सच
में भगवान का ऐसा आकर्षण है जो सुध-बुध भूल जाती है
उनको कोई बन्धन भी न भाये। जो बन्धन सच के, सच के
रास्ते में सैकड़ों को संशय है पर आखिर सत की
जीत होकर ही रहती है एक दिन उनके पति दादी लाली को
अपने गुरु के पास लेकर गई। वहाँ दादी लाली ने ऐसी बात की
जो गुरु हैरान हो गया। कहा इसको साधारण मनुष्य नहीं भगवान
मिला है। जिससे ये जाग गई है। उसको इतना नशा का जो हीरा
गुम हो गया उसको मालूम न पड़ा फिर सात दिन में काम
करते-2 मिल गया। आज भी वह शान्त प्रिय, प्रेम स्वरूप
मौन का mount होकर रहती है। भजन गा-गा कर सब
को मस्त करती है। कईयों की यह प्रेम कहानी है। आज
दादा लाली जकार्ता में सत्संग करती है। एक बार दादा
भगवान की एक प्रेमी से भेंट हुई वह सात बेटियों का बाप
था और बेटियों की चिन्ता ने उसका दिन रात का चैन लूटा था

01 SATURDAY ✲ FEBRUARY

दादा भगवान ने जब उसकी उदासी का
कारण पूछा तो उसने बताया कि उसको हर वक्त चिन्ता शादी
की और दहेज में देने के लिये धन की चिंता हर समय
लगी रहती है। यह बात सुनकर दादा भगवान ने कहा तुम्हारी
चार बेटियाँ तो मैं अपने चार बे[illegible] बाकी तीन
की तुम चिन्ता न करो। दो शादियों [illegible]
चिन्ता छोड़ शान्ति से जी। यह सुनते ही वह आराम में आ गया
उसकी चिन्ता कपूर की तरह उड़ गई। समय आने पर सभी
लड़कियों की शादी अच्छे घरानों में हो गई। दादा भगवान
का एक भी बेटा लेना न पड़ा। पर दादा भगवान ने उसका
आधार बनकर उसे हर तकलीफ व चिन्ता से छुड़ा दिया।

2 SUN

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31								

JAN 97

ॐ

ॐ

दाया भगवान को लक्ष्मी भगवान से अमर मुलाकात

दाया भगवान को स्त्री उद्धार के लिये योग्य साथी की जरूरत थी। इत्फाक से जैसे वह चाहते थे, लक्ष्मी भगवान के रूप में साथी मिल गया। भगवान लक्ष्मी जी आज हमारे समक्ष है। परम पवित्र सौम्य दिव्य मूर्ति साहसी दिव्य परम तेजवान भगवान लक्ष्मी व उनके स्वजन घर वाले भक्ति किया करते थे भगवान लक्ष्मी तो Born great अमर अवतार है। पर प्रकृति की लीला लोगों के आदर्श के लिये है भगवान लक्ष्मी को किसी प्रेमी ने आकर दाया भगवान के लिये बताया कि वे ग्रहस्थ में ब्रह्मज्ञानी है। भगवान लक्ष्मी दादा भगवान से दुकान में मिले। ज्ञान चर्चा हुई फिर दाया भगवान मंदिर में आये, दूसरे दिन पड़ोस में वहाँ सुबह 9 बजे से बैठे रहे। एक दो बज गये खाने का किसी को ख्याल न रहा फिर एक प्रेमी थाली में खाना लायी। वहीं एक ही थाली में सबने खाना खाया, फिर

सत्संग शुरू हो गया - रात के सात बज गये। सब का मन इतना एकाग्र था जो न पानी, न bath room, न हिलना, न डुलना अजीब नशा सा था। उसी दिन से भगवान लक्ष्मी को दादा भगवान से विश्वास आ गया। भगवान लक्ष्मी को बचपन से ही सन्त साधु में विश्वास न था। परन्तु जब दादा भगवान का ज्ञान सुना तो नींद फिर गई और उनको पहले से ही भावना थी जो मेरी नींद फिटायेगा, उसी को ही सच्चा गुरू मानेंगे। और दाया भगवान को भी विश्वास हो गया कि इनसे बहुत बड़ा कार्य होगा। क्योंकि दूर से ही सत्य की झलक देखी। दाया भगवान ने सं० किया कि मैं इनको रानियों की रानी बनाऊँगा और आज सच में सृष्टि के मालिक ही है। रानियाँ भी इनकी सेवा के लिए तरसती है।

थोड़े ही दिनों में भगवान लक्ष्मी हैदराबाद से कराची जा रहे थे किसी कार्यवश। दाया भगवान को पता चला तो वो भी कराची के लिए रवाना हो गये। उनके सत्संगी प्रेमी के बेटे की शादी

S		9	23	
M	31	10	24	
T		11	25	
W		12	26	
T		13	27	
F		14	28	
S	1	15	29	
S	2	16	30	
M	3	17		MAR 97
T	4	18		
W	5	19		
T	6	20		
F	7	21		
S	8	22		

ॐ

ॐ

05 WEDNESDAY ✲ FEBRUARY 1997

कराची में थी (वह तो बहाना था) दादा भगवान के
सत्संगी भी भगवान को पहचानते थे फिर तो एक ही घर
में दोनों रहे और ज्ञान चर्चा चल पडी और अमर मिलाप
हुआ जो लागी छूटे ना। फिर भगवान दादा हैदराबाद चले
आये। भगवान लक्ष्मी को ज्ञान से ऐसा प्यार हो गया जो
ज्ञान के सिवाय एक क्षण भी अच्छा न लगे। ज्ञान ही जीवन
हो गया। सुबह शाम ज्ञान ही भोजन हो गया। ब्रह्मज्ञानी का
भोजन ज्ञान। आजतक वही कार्य चल रहा है। पूर्ण पात्र
भगवान लक्ष्मी को पाकर दादा भगवान की बाहर की माया
भी पूर्ण रूप से खत्म हो गई। पहले थोडा व्यवहार भी होता
था लेकिन पूर्ण पात्र पाते ही प्रेम में सब व्यवहार छूट गया
छोडा नही पर निष्काम प्रेम में छूट गया। ऐसे ही सच्चे के
मिलने से ब्रह्मज्ञानी भी निहाल हो जाता है। भ० लक्ष्मी की
तो ऐसी अलौकिक कहानियाँ हैं जो पूरी पुस्तक भर जाये।
दादा भगवान को सत्य सरलता वाला पसन्द
था होशियारी, चतुराई, चालाकी

06 THURSDAY ✲ FEBRUARY

वाला पसन्द न था फिर दादा लक्ष्मी भगवान का
इकट्ठा कार्य शुरू हुआ।

S		9	23
M		10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

FEB 97

ॐ

ॐ

भगवान दादा लक्ष्मी नाम कैसे पड़ा →

भगवान दादा लक्ष्मी इकट्ठा नाम सुनते सब आश्चर्य चकित हो जाते है। कि यह क्या नाम है - न स्त्री, न पुरुष जो अपने को स्त्री या पुरुष समझता है वो इस गूढ़ पहेली को नही समझ सकेंगे। परमात्मा न स्त्री है न पुरुष। फिर भी अपना आदर्श प्रस्तुत करने के लिये साकार रूप भी प्रकट होता है दादा भगवान ने पूर्ण रूप से सर्व सम्पन्न भगवान लक्ष्मी को देखा और इकट्ठा कार्य करते रहे। एक दिन दादा भगवान ने आपे ही लक्ष्मी भगवान का नाम अपने से जोड़ दिया। "दादा लक्ष्मी" पहले भगवान ने एक चिट्ठी के पीछे लिखा from Divine Dada Laxmi. तो सब चिट्ठियाँ दादा लक्ष्मी के नाम से आने लगी। दादा भगवान ने स्वयं अपना नाम इनके साथ जोड़ दिया। वैसे कहा जाता है अपना नाम ही तो दादा भगवान ने जोड़ दे दिया। दुनिया में कहावत

है दो शेर इकट्ठे जंगल में नही रह सकते है पर दोनों अपनी हस्ती गंवाये तो रह सकते है। दोनो ने हस्ती गवाई। तो इकट्ठा यह कार्य अच्छी तरह से चला जो आज तक चल रहा है। राधा श्याम हो गई, श्याम राधा हो गया।

दादा भगवान के रहते ही लक्ष्मी भगवान ऐसे थे जैसे है ही नही और दादा भगवान भी अपना आप मिटाकर रहते भगवान लक्ष्मी से पूछो। दादा लक्ष्मी एक है और लक्ष्मी भगवान ने भी यह नाम निभाया। जब दादा भगवान के शरीर शान्त होने पर एक ने चिट्ठी में खाली लक्ष्मी भगवान लिखा। उसी समय भगवान ने

जोश में वाणी चलाई आज भी दादा भगवान है। आपने नाम क्यों मिटाया? जो एक बार गुरु ने नाम बनाया तो हमेशा रहेगा। जो आज तक दादा लक्ष्मी ही नाम चलता है। कोई नये भगत आते है उन्हें भी दादा भगवान के लिए प्यार है क्योंकि भगवान ही उन्हें प्रकट करके बैठे, ये ही सच्ची तपस्या है हमेशा गुरु

S		9	23
M	31	10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

MAR 97

ॐ

ॐ

10 MONDAY ✤ FEBRUARY 1997
✧ ID-UL-FITTAR ✧

को ही प्रकार करे नहीं तो देह अध्यास जायेगा नहीं - केवल आत्मा बोलकर अपने को ठगेंगे।

पटियाला की रानी को ज्ञान सुनाना →

एक औरत थी जिसको न्यूरस्थीनियाँ की बीमारी थी। उसको ठीक करने के लिये किसी पहाड़ पर लेकर गये। उसको Dr. ने कहा यह औरत सिर्फ खुशी से ठीक हो सकती है। वहाँ पर दादा भगवान ने उसे पूर्ण दिल जान से प्यार किया, हँसाना, Bad-minton खिलाया। वहाँ दादा भगवान के मित्र ने कहा हम पटियाला के राजा के पास चलते है। उसकी रानी को हर आधे घन्टे के बाद उल्टियाँ होती थी। भगवान दादा का ज्ञान सुनते ही उसकी

11 TUESDAY ✤ FEBRUARY
✧ BASANT PANCHMI ✧

उल्टियाँ बन्द हो गई ५ घन्टे तक Vomit नहीं हुई इस पर राजा को रानी पर शंका हुई कि वह पर पुरुष के साथ इतना लम्बा समय क्यों बैठी। रानी ने कहा क्या आपने करामात नहीं देखी कि ५ घंटे में एक भी उल्टी नहीं आयी। ये तो पूर्ण भगवान है पटियाला के राजा ने रियासत की हद बताकर कहा कि यह मेरी हद है दादा भगवान ने कहा तुम्हारी जितनी जमीन है वह नक्शे के माप में कितनी जगह हुई। उसे यह वचन सुनकर शर्म आ गई। दादा भगवान ने कहा तू हद का मालिक है मैं बेहद का मालिक हूँ सृष्टि के मालिक की हद देखकर क्या खुशी होगी। दादा भगवान भावना का दीदार राजा व रानी को हुआ।

FEB 97		
S		9
M		10
T		11
W		12
T		13
F		14
S	1	15
S	2	16
M	3	17
T	4	18
W	5	19
T	6	20
F	7	21
S	8	22
S		23
M		24
T		25
W		26
T		27
F		28

ॐ

ॐ

1997

FEBRUARY ✱ WEDNESDAY 12

दादा भगवान का T.B वाली लड़की को ज्ञान देना

सिंध हैदराबाद में एक लड़की को T.B. की बीमारी थी। वह अपनी बीमारी की वजह से बिस्तर पर ही रहती थी और हर चीज बिस्तर पर ही मांगती थी दादा भगवान ने उसको बहुत ही प्यार और ज्ञान दिया। उसको अमृतसर ले गये। भगवान लक्ष्मी भी साथ में ही थी कुछ दिन उसकी सेवा की, फिर एक दिन उसने पानी मांगा। दादा भगवान ने कहा तुम आपे ही उठाकर पियो। अमृतसर में पम्प चलाकर पानी लेते थे। उसने कहा मैं गिर जाऊँगी। दादा भगवान ने कहा तू पानी भर, तू गिरेगी तो मैं उठाऊँगा। तो उसने हिम्मत करके पम्प चलाकर पानी भरा और पिया वह नहीं गिरी तो उसको विश्वास हो गया कि मैं चल फिर सकती हूँ फिर वह अपनी सेवा आपे ही करने लगी। भगवान दादा लक्ष्मी घूमने जाते थे। तो वह लड़की बहुत धीरे-२ चलती

FEBRUARY ✱ THURSDAY 13

थी। एक दिन भगवान ने कहा तू आज चल हम पीछे आयेंगे तो उसको शर्म आ गई। इस प्रकार धीरे चलने की कमजोरी भी उसकी चली गई ब्रह्मज्ञानी की सच्च की ताकत व वचनों से उसकी बीमारी जो ६ वर्ष से थी वो कुछ ही दिनों में ठीक हो गई।

S		9	23
M	31	10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	MAR
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	97
F	7	21	
S	8	22	

ॐ

ॐ

14 FRIDAY ❋ FEBRUARY 1997

भगवान दादा लक्ष्मी का उदयपुर आना, वहाँ पर ज्ञान फैलाना-

सन् 1947 में जब हिन्दु मुसलमानो की लड़ाई लगी हुई थी। भगवान दादा ने भगतो को कहा - चलो हम तीर्थ यात्रा पर चलते है। लोग तो डर से घर छोड़ रहे थे। और कुछ बैठे भी थे। परन्तु भगवान को मालूम था। आगे क्या होने वाला है तो पहले ही सिंध छोड़ दिया ब्रह्मज्ञानी का जहाँ पांव पड़ता है वही तीर्थ हो जाता है। तो भगवान सिंध से उदयपुर आ गये। उदयपुर को लोग अदहपुर माना अन्धेरा शहर कहते थे पर भगवान के वहाँ जाने से वह रोशनपुर हो गया वहाँ भी कितनो को जागृता मिली जो आज भी वह आपस में मिलकर सत्संग करते है। ब्रह्मज्ञानी को जहाँ पैर वहाँ खैर। वहाँ पर एक Civil hospital का Dr. रहता था भगवान की मुलाकात उससे हुई। Dr. ने बताया कि वह बहुत दुखी है उसको नींद नही आती है। दादा भगवान ने कहा मै तुमको गीता का ज्ञान सुना कर ठीक कर सकता हूँ। उसने

15 SATURDAY ❋ FEBRUARY

कहा गीता तो मुझे जुबानी याद है। कितनी धार्मिक पुस्तकें है पर मुझे शान्ति नही है। उसने बताया कि मै सरकारी Dr. था मुझे गरीबो के लिये मुफ्त दवाईयां व injection मिलते थे। मैं वह बिक्री कर देता था और गरीबो को पानी के injection देता था इससे कितने गरीब लोग मर गये। और अभी वो ही रात को आ-आकर मुझे डराते हैं कि तुमने मुझे मारा है। मै रात भर डर के मारे सो नही सकता। मेरी शिकायत भी सरकार को गई थी पर उदयपुर के राजा का सिफारिश से मै बच गया। राजा ने सरकार को लिख दिया कि इस नाम का डाक्टर इधर नही है और वो retire हो गया। उदयपुर के

16 SUN राजा ने इसलिये Dr. को बचाया क्योंकि उसने राजा को बीमारी से ठीक किया था और राजा ने खुश होकर उसको 13 लाख की जागीर दी थी तो Dr ने बताया मेरे पास लाखों रुपये है जो भगवान ने एक बेटा भी मुझको नही दिया और मेरे मन को शान्ती नही। मैंने 100 कोठियां भी सन्तो के नाम बनाई है। सत्संग सुनता हूँ सन्तो की सेवा करता हूँ सब सन्त कहते है दान-पुण्य

S		9 23
M		10 24
T		11 25
W		12 26
T		13 27
F		14 28
S	1	15
S	2	16
M	3	17
T	4	18
W	5	19
T	6	20
F	7	21
S	8	22

FEB 97

ॐ

ॐ

1997

FEBRUARY ✲ MONDAY 17

करे - मैं पूछता हूँ दान करने से मेरा ~~पुण्य~~ पाप माफ हो जायेगा। तो वो कहते हैं। सत्कर्म का फल सत मिलेगा, बदकर्म का फल बद मिलेगा। दादा भगवान ने उसको ज्ञान दिया और बताया ज्ञान भया तो कर्म ही नाश और बोले तुम पछताओगे और दुबारा पाप नहीं करोगे तो तुम्हारा पाप माफ हो जायेगा। जैसे सपने में कोई खून करे तो जागने पर उसको सजा नहीं होती। ऐसे ही तुमने अज्ञान में यह कर्म किया अब तू ज्ञाता है। इस प्रकार भगवान का ज्ञान सुनने से उसको अच्छी नींद आने लगी और वह सोचने लगा मुझे कैसे भगवान मिले। भगवान ने तो उससे एक कौड़ी भी नहीं मांगी। ब्रह्मज्ञानी के संग रहने से चिंताओं की tension दूर जाती है ज्ञान से। और बिमारियाँ खलास हो जाती हैं क्योंकि अधिकतर बीमारियाँ मन में है। 98% mental & spritual, 2% Physical जब mental ठीक हो जायेगा तो Physical आपे ही ठीक हो जाता है।

FEBRUARY ✲ TUESDAY 18

एक दिन एक स्त्री दरवाजे के पास उदास खड़ी थी भगवान दादा लक्ष्मी उधर से गुजरे। लक्ष्मी भगवान ने उससे उदासी का कारण पूछा। उसने बताया कि मेरे पेट में गोला है और मेरा पति अन्दर डा० से बात कर रहा है उसने ऑपरेशन करने के लिए बोला है तो दादा भगवान ने कहा कि तुम सात दिन मेरा ज्ञान सुनो तुम्हारा गोला ठीक हो जायेगा। इतने में उसका पति आ गया। यह सुनकर उसने operation की तारीख बदल दी और उस स्त्री ने लगातार ज्ञान सुना तो गोला ठीक हो गया। जब Dr को दिखाया तो वो हैरान हो गया कि गोला किधर गया। सब रोगन की औषिधि नाम। पूरे गुरु की कृपा से क्या नहीं हो सकता है।

S		9	23
M	31	10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

MAR 97

ॐ

ॐ

19 WEDNESDAY ❖ FEBRUARY

धोबिन को ज्ञान उदयपुर में →

भगवान ने धोबिन को ज्ञान दिया। उसने तीन दिन ज्ञान सुना उसको इतना नशा चढ़ा कि हर समय कहती मैं आत्मा हूँ। तीन दिन के बाद उसको कालरा हुआ और वह आत्मा-२ करके शान्त हो गई तीन दिन में वो लड़की मुक्त हो गई।

इस प्रकार उदयपुर में एक वर्ष तक ज्ञान फैलाकर दादा लेखराज भगवान उदयपुर से बम्बई आ गये और वहाँ से अभी तक ज्ञान का प्रकाश चारों दिशाओं में फैला रहे हैं।

20 THURSDAY ❖ FEBRUARY

भगवान दादा का निर्इच्छापन →

भगवान दादा सारी उम्र वैराग्य में और निर्इच्छा होकर रहे। अपनी देह की तो उनको परवाह नहीं थी। वह बोल रखा था कि कभी मेरे लिए खाना बनाकर नहीं रखना। जो बचेगा ठीक नहीं तो छुट्टी। भगवान का वैराग्य साधारण नहीं था जिससे कि कपड़े बदल लेते हैं। लेकिन उनका तन मन वैराग्य से रंगा हुआ था। वैराग्य यानी राग रहित। अवस्था की झलक उनके दैनिक जीवन में ऐसी घुली हुई थी जैसे दूध में शक्कर। और घरवाले भी यह समझकर कि दादा भगवान लक्ष्मी के हो चुके हैं। तो बेपरवाह रहते थे। ऐसे वैराग्य पूर्ण अवस्था में एक दरवाजे से घर में प्रवेश और दूसरे से निकल जाते। मौन उनके जीवन की खासियत रही। मौन में आना, मौन में जाना। उनके जीवन से किसी को कुछ महसूस नहीं हुआ। घर में चार बेटों के चार कमरे देकर खुद बाहर गैलरी

S		9	23
M		10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

FEB 97

ॐ

मैं छोटे से थैले पर सोते थे) अपने (कपड़े भी तकिये के नीचे रखकर सो जाते थे जो किसी को तकलीफ न होवे, तो सुबह उठकर चले जाते थे। माना हवा जैसे हल्के होकर रहे। शरीर की सुध लेना उनमें नाममात्र भी न थी कुर्ते का कालर फट जाता था तो उसको उल्टा करके काम चलाते थे। उनका टका भी अपने खर्चे के लिये नहीं था। कितनी बार उनकी Pocket में पैसा न होता तो घरवाले देखते कि किराये के लिये पैसे नहीं हैं। तो कोई पैसे जेब में डाल देते थे। भगवान बिन कौडी बादशाह होकर रहे। धन जो मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वह धन भगवान के लिये तुच्छ रहा।

Money is useless है ये Practical में दिखाया और अपना सारा तन, मन, धन निष्काम में लुटाया। घर वालों का विरोध होते हुए भी उनका यज्ञ चालू रहा। कभी-२ उनकी पत्नी कहती थी कि बच्चे व्यापार में होशियार नहीं हैं - आप सलाह दें। भगवान दादा

कहते थे मैं जीते जी मर कर देखता हूँ कि मेरे बाद कैसे चलेगा। जीते जी गृहस्थ में रहकर अपना मौत किया जो आज हमें भी सिखाया "जीवन मुक्त सो आश्चर्य — — ।

खाने की टेबल में जितना खाना मिला ठीक है दूसरा मांगते भी न थे फिर भगवान लक्ष्मी ने ही उनकी बहुओं को कहा आप अच्छी तरह सब रख दो, पूछो नहीं कि खाओगे। वो तो निराहारी हैं वो नहीं बोलेंगे कि किसी चीज की चाहिये। दादा भगवान ने सब की चाह मिटा दी तो खुद कैसे कहेंगे कि चाहिये। "मर जीव भरिया" का सिद्धान्त उनके जीवन में रहा जो कि हमें प्रसाद के रूप में मिल रहा है। दादा भगवान के बड़े भाई जो ज्येष्ठ थे। दादा जी के परिवार में ससुर का Part अदा करते थे। दादा

कुछ बनके नहीं रहते थे। भगवान का घर में होना न होना एक सा था। खुदी को मिटाकर खुदा हो गये थे। इतना खुद को मिटाना कि घर का नौकर भी इज्जत नहीं करता था। कभी दादा भगवान कहते सत्संगी आया है कुछ सामान लेकर आओ तो..

S		9	23	
M	31	10	24	
T		11	25	
W		12	26	
T		13	27	
F		14	28	
S	1	15	29	
S	2	16	30	
M	3	17		MAR 97
T	4	18		
W	5	19		
T	6	20		
F	7	21		
S	8	22		

ॐ

24 MONDAY ✡ FEBRUARY 1997

मौका जवाब दे देता कि वह का काम है उसके बच्चे
घुमाने ले जाना है दादा भगवान ऐसा व्यवहार देखकर भी
मौन भंग न करते थे। जीते जी अपने को फना कर दिया था
लेकिन अपने प्रेमियों के लिये हमेशा आतुर रहते थे।

दादा भगवान अपनी स्त्री से इतना विरक्त होकर
रहे जो एक शब्द का व्यवहार नहीं होता था। वह इतना ही
चाहती थी कि दादा केवल एक बार बोले रोटी खा या प्यार
से देखे। उस वक्त भगवान की अगोलता का दीदार होता था
कईयों के कहने पर भी कि आप को माया touch नहीं करती
आप स्त्री से जरा बोल दो खुश हो जायेगी। कभी वह घूमने
की इच्छा करती, भगवान उधर भी धार्मिक बातें करते।
सुख-दुख सम कर जाना और मान अपमान। कभी प्यार
की बात करती तो कहते करतूत पशु की मानस जात लोक
प्यारा करे दिन रात"। ऐसी बाते सुनकर दुखी हो जाती थी क्योंकि
उसे ज्ञान में पूरा रस नहीं आता था। दादा भगवान ने double त्याग

25 TUESDAY ✡ FEBRUARY

किया। अपना मोह न होवे; दूसरा भी
मोह न रखे। भगवान ने अपना भी मोह काटा। भगवान
दादा कहते थे घरवालों की सात चमड़ियां में मोह होता है
दादा भगवान इतने नशे में रहते थे कि पत्नी से एक कमरे
में रहते हुए भी उनसे बेखबर रहते थे। 15 दिन पत्नी मायके
चली जाती थी उनको पता भी नहीं चलता था। वाह-क्या
निर्मोही अवस्था थी पत्नी सारी उम्र दुखी रही पर अन्त में
उनको भगवान के रूप में पहचाना और बाहर मैंने पहले नहीं
पहचाना यही दुर्भाग्य है फिर दादा लक्ष्मी भगवान की आरती
किया।

S		9	23
M		10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

FEB 97

ॐ

उसके बच्च
खवा भी
कर दिया था
थे ।
खन्त होकर
इतना ही
या प्यार
यार होता था
तो नहीं करती
। वह घूमने
जाते करती।
कभी प्यार
इस जात लेकर
जाती थी क्योंकि
able त्याग
दूसरा भी
ता। भगवान
चाह होता है
एक कमरे
पत्नी मायके
था। वाह-क्या
दी पर ध्यान में
मैंने पहले नहीं
गवान की आरती

S	9	23	
M	10	24	
T	11	25	
W	12	26	
T	13	27	
F	14	28	
S 1	15		
S 2	16		
M 3	17		F
T 4	18		E
W 5	19		B
T 6	20		9
F 7	21		7
S 8	22		

ॐ

दादा भगवान इच्छा का दुश्मन →

दादा भगवान इच्छा के सख्त दुश्मन थे कि प्रेमी की भी इच्छा पूरी नहीं करते थे। इच्छा अक्सर उनको पसन्द न था हमेशा उनके वचन थे — "इच्छा का ~~छल~~ गला घोट। इच्छा है ऐसी बलि — — —।" "इच्छा मात्र अविद्या, गुरु बताता है यह विद्या। चाह गई चिन्ता मिटी मनवा हुआ बेपरवाह। जिस जीव को चाह नहीं सो शाहों का शाह।"

इच्छा काटना →

दादा भगवान दो लड़कियों को बगीचे में ले जाते एक को apple खिलाते, एक को नहीं। तो उसके अन्दर छिपी हुई इच्छा निकल आती और उसको ज्ञान मिल जाता। ऐसी रमज करते जैसे कि इच्छा बचे ही नहीं। दादा भगवान कहते तुम इधर ज्ञान सुनने आयी है या apple खाने आई है। सब मूरख अपना क्यों न समझा — इस तरह शिक्षाओं में ज्ञान देते थे।

एक बार दादा भगवान के साथ हरिराम कोरवेली वाले कानिक पर गये। ज्ञान सहज शुरू हुआ। हर एक प्रेमी ज्ञान में झूम रहा था। दोपहर का भोजन खाया सबने। शाम के समय हरिराम ने दादा भगवान को, अन्य प्रेमियों को चाय के लिये प्रेम भरा आग्रह किया लेकिन दादा भगवान ज्ञान में लीन थे और सब भक्तों ने ना कर दी। हरिराम अपनी इच्छा को रोक न सके। चाय पीने को चला गया उसके जाने के बाद भगवान भक्तों को लेकर शरणागति लौट आये। हरिराम जब लौटे तो भगवान को अन्तरध्यान पाकर दुखी हो गये और अपनी इच्छा पर रोया कि चाय की चाह ने भगवान से दूर कर दिया। कहने लगा आज इच्छा पूरी न करता तो भगवान से दूर न होता।

9	23	
10	24	
11	25	
12	26	
13	27	
14	28	
15	29	
16	30	
17		M
18		A
19		R
		9
		7

ॐ

ॐ

28 FRIDAY ✻ FEBRUARY 1997

भगवान दादा कीर्ति से दूर रहे →

दादा भगवान को कीर्ति पसन्द न थी। कामिनी, कंचन, कीर्ति तीनों ही रुकावट है। ऐसा जानते और हमेशा कहा करते Majority Consists of fools. ज्यादा आदमी जहां इकट्ठे होते है तो वह बेवकूफ है। इस तरह जब भी ज्यादा भीड़ हो जाती थी तो कभी-2 सत्संग बन्द कर देते। कभी शान्ति में बैठते और कभी गालियां देते ताकि सच्चे बैठ जाये, झूठे निकल जायें। दादा भगवान को कहते आप का दर्शन करना है तो झट से कहते किसका दर्शन, नाक का, कान का, मुख का - किसका दर्शन? ऐसे-2 वचन कहते जो उभागे वाला आदमी आ० में खड़ा हो जाये। कभी कोई कहता दादा भगवान हम आपके कपड़े पहन लेंगे तो हमको ज्ञान हो जायेगा क्योंकि आपके कपड़ो में भी Vibration है। दादा भगवान कहते तुम मेरा शरीर भी पहन लो तो भी ज्ञान न होगा। जब तक अपने को न पहचाना। "जिस-2 जानिया

01 SATURDAY ✻ MARCH

तिस सदा सुख होय।" कभी कोई सत्संग-यानी कहती दादा देखो इतने लोग बन गये है, बहुत सत्संग सुनते है। जब वह चली जाती तो दादा भगवान कहते यह बेचारी कीर्ति में खुश हो रही है। कीर्ति कहर का घर है, ऐसा जानते थे। फूल, हार, Photo निकालना सब के बर-खिलाफ थे कहते फूलों पर पैसे क्यों गंवाते हो। हमेशा कहते माया त्यागी तो क्या जो मन न त्यागा जाय। कई संत साधु माया तो त्याग देते हैं। पर कीर्ति की सूक्ष्म वासना पड़ी रहती है। इसी वासना के कारण फिर माया को भी लेते है। शिष्य बनाने आश्रम बनाने में लग जाते हैं, अपने को famous कराते हैं। अपना त्याग वैराग्य सारी दुनिया को प्रगट कर दिखलाते

2 SUN

है। जैसे एक सन्त के पास गये, उसके आश्रम में बहुत फल मिठाइयां पड़ी थी। सन्त कहने लगा यह सब मेरी तपस्या का फल है। तो तपस्या का फल तो भगवान को जानना होना चाहिये या सांसारिक पदार्थ। ब्रह्मज्ञानी का तो जन्म ही दिव्य है और कर्म भी। लोग उनको नहीं पहचान सकते पर जिज्ञासु सच का अमरफल लेकर अमृत पान करते है कामिनी, कंचन, कीर्ति

S		9	23
M		10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	
S	2	16	
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

FEB. 97

ॐ

ॐ

1997

MARCH ✲ MONDAY **03**

को ही lust करके बोलते । Lust for fame, Lust for gold & Lust for Safer side.

भगवान दादा सदैव मौन गम्भीरता में रहते थे

भगवान सदैव सागर सी गम्भीरता, मौन, शान्त, वैराग्य में रहते थे। खुद कहते थे "जाया कहे सो मसखरा खोया----" अल्लाह कहूँ तो क्या कहूँ, कहूँ तो को उपकार।"

भक्तों को खुश कर कहते जितना तुम खुश है मैं नहीं। यही तो वैराग्य की परिपूर्ण अवस्था है। वह खुशी गम से अपर थी। द्वन्दातीत, इन्द्रीयातीत, आनन्द स्वरूप तृप्ति। बाहरी खुशी में खुश होना - वैराग्य निर्दोष है। वैराग्य में ही सच्चा आनन्द है सब दुखन का मूल है मन चंचलता मोह। किसी सत्संगी ने लिखा आपका पत्र पाकर खुशी हुई। दादा भगवान ने उसे पत्र जाकर जागृत किया। पत्र पाने में खुशी हुई तो न पत्र पाने में रंज होगा यहाँ भगवान ने इन्द्रीयातीत आनन्द की ओर इशारा किया। उनकी करुणा का क्या कहना कहीं कोई क्षणिक धन छोड़ कर छोटी खुशी

MARCH ✲ TUESDAY **04**

में न खुश हो जाये। उनको मौन इतना प्रिय था जो अखबार लेकर बैठ जाते ताकि कोई व्यर्थ बात-चीत कर उनका और अपना समय न गवाये। मूर्ख लोग उनको अखबार पढ़ते देख उनकी कापी करते थे। लेकिन दादा भगवान तो अपने में ही आनन्द मगन रहते थे। कभी संयोगवश पिकनिक या सैर करने जाते तो भी अपनी कापी पेन साथ लेकर जाते और एक-2 Point का खूब आनन्द लेते, ट्रेन में भी। शुरू में बस की टिकट पर भी काम लिखते। आनन्द मौन में ज्ञान हो या और आकाश के सदृश खाली।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

05 WEDNESDAY ✲ MARCH 1997

भगवान दादा की निर्भयता →

दादा भगवान की यह एक अलौकिक खुदाई निर्भयता थी कि जब स्त्रियाँ पूरे बन्धन में थी उन्हें ज्ञान सुनने में जरा संकोच न हुआ। गृहस्थ में रहते हुए उनकी यह अलौकिक शक्ति थी कि उन्हें भगवान जाना गया। सन्त साधु को तो भगवान कहना सरल है पर साधारण वेष में गृहस्थी को भगवान कहना क्या सरल था। दादा भगवान अनेकों रुकावटों के बावजूद भी स्त्री उद्धार में लगे रहे। मन्दिर मठों में साधारण सत्संग हैं ही लेकिन भगवान ने अपना ज्ञान बाग-बगीचे, तालाबों व समुन्द्र के किनारे शुरू किया। लोक लज्जा का त्याग कर जान हथेली पर रखकर स्त्री उद्धार में लगे। खास निन्दा हुई जब भगवान लक्ष्मी इनको मिले। पूरा दिन भगवान के साथ रह कर कार्य करना असाधारण काम था। दादा भगवान को भगवान रूप में प्रकट भगवान लक्ष्मी ने किया। धन्य है

06 THURSDAY ✲ MARCH

भगवान दादा की निर्भयता और लक्ष्मी भगवान की हिम्मत। बड़ी निर्भयता से सबको महाबलेश्वर माथेरान और अन्य कई स्थानों में लेकर जाते थे। निष्काम थे इसलिए निर्भयता भी आ गई।

" नही भय किसको देता है, नही भय मानत।
आप कह नानक सुन रे मना ज्ञानी तेह परवान। "

कहते थे - Why fear when I am here.

निराकार का विश्वासी कभी पराधीन नही होता है वो सबको भी निर्भय करते थे। एक दिन किसी सत्संगयानी ने कहा दादा भगवान को कि हम जिधर सत्संग सुनने जाते हैं, उनके घरवाले कहते है कि हम तुम्हे आग लगाकर जला डालेंगे तो दादा भगवान ने कहा उसे कि उन्हे जाकर कहो कि हमने लोहे की कवच पहन ली है। आग क्या करेगी। सच का नगारा बजाते चलो डरो नही। जहाँ सच है वहाँ भय नही। जहाँ झूठ है वहाँ डर है। एक बार बगीचे में सत्संग कर रहे थे। दादा भगवान नीचे उतरे तो हम हत्या कर देंगे। परन्तु भगवान बेपरवाह होकर सत्संग करते रहे। किसी की भी हिम्मत आगे आने की नही

S		9	23
M	31	10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

MAR 97

ॐ

ॐ

होती थी पीछे-२ बहुत शोर मचाते थे। पर सामने आने पर साहस न होता था। एक बार पुना में थे जैसे ही सत्संग से निकले एक आदमी ने छाते से भगवान को मारना चाहा। परन्तु भगवान लक्ष्मी ने उन्हे कालर से पकड़ा और दादा भगवान को मार नही लगी। शोर हो जाने से बात पुलिस में गई। उस आदमी ने इस लिये छाता उठाया क्योंकि दादा लक्ष्मी भगवान ने उसकी लड़की को ज्ञान दिया था। वह वैराग्य में रहती थी और शादी नही करती थी। जब पुलिस ने पूछा तुम्हारी लड़की की उम्र कितनी है और उसने बताया २२ वर्ष की है। तो पुलिस ने कहा वह अपना बुरा भला सोचने की पूरी हकदार है। तुम जाओ। इस घटना के बाद वह आदमी बहुत बीमार हुआ और उसका लड़का भी वहाँ ही था। उसकी भी शादी कही होती न थी। उसने जब भगवान से माफी मांगी, घर बुलाकर सत्संग किया तब वह ठीक हो गया और लड़के की शादी भी थोड़े दिनों में हो गई। मतलब कि कितनी तकलीफे

रास्ते में आई बेपरवाह बादशाह निष्काम होकर रहे। निर्भय थे इसलिए किसी को बनाने के लिए तीखा भी बोलते थे, गाली भी देते थे ताकि अन्दर का रोग निकले। जैसे डाक्टर को मरीज का रोग निकालने में कितनी हिम्मत करनी पड़ती है सर्जन operation कर सकता है Dr. नही। इस तरह साधारण मनुष्य या सन्त गाली नही दे सकते। ब्रह्मज्ञानी ही गाली देकर मन को मौन कर सकता है। और शुभ अशुभ शब्दों से ऊपर करके अशब्दी ब्रह्म में टिका देते है।

एक बार एक सत्संगयानी के पति का शरीर शान्त हो गया। उसके घरवाले बिगड़े हुए थे कि दादा भगवान आये

तो हम देखेंगे। दादा भगवान ने यह बात सुनी फिर भी प्रेमियों के साथ चल पड़े वहां सत्संग हुआ सबने शान्त में सुना, किसी ने कुछ न कहा। उस समय सत्संगयानी को बड़ा साहस आ गया जो पहले डर रही थी। जोर से सारी सभा ने कहा "दादा लक्ष्मी भगवान" की जय।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

10 MONDAY ✲ MARCH

दादा भगवान की नम्रता →

आत्मा रुपी निर्भयता और सबसे प्रेम, नम्रता सब थे। बच्चे के सदृश्य रबड़ की तरह मुड़ जाते। कोई कहता उठो, बैठो खाना खाईये सत्संग करिये या बन्द करिये, मौन, शान्त, गम्भीरता में जाते। ब्रह्मज्ञानी ऊँच से ऊँच गुण है। सबसे नीचा, इतनी नम्रता भी थी। तभी तो इनको प्यार कर सके। निर्भयता के संग नम्रता फिर तो आनन्द ही आनन्द। वृक्ष की डाल जितनी फल से लद जाती है उतना ~~झुक~~ झुक जाती है एक बार एक प्रेमी ने कहा भगवान मुझे मन आता है तो भगवान ने नम्रता से कहा मैंने ५० वर्ष से ज्ञान सुना है मुझे भी मन आता है। फिर क्या हुआ तू तो साक्षी द्रष्टा है। उसके दिल में ताकत आ गई और वह सृष्टि से ऊपर हो गई। कई बार प्रेमियों को बड़ी नम्रता से कहते आज मैं जो कुछ सीखा हूँ वो तुम सबसे।

11 TUESDAY ✲ MARCH

दादा भगवान की निष्कामता व निर्माणता →

परम पूज्य दादा भगवान का जीवन सदैव निष्काम में रहा। अपना सर्वस्व सबको भेंट कर दिया। भगवान कहते अगर दान देना है तो अपना आप ही दान कर दो। अपने तन का मन का दान दूजे को, दे जो दान वो सच्चा इन्सान रे इस इस धरती का भगवान है उनकी हमेशा करुणा रहती कि एक-२ घड़ी हमेशा सर्व के हित में गुजारे। दादा भगवान कभी फल लेकर आते कोई कहता आप किसके लिये लाये है. भगवान उसी समय खोलकर कहते तुम्हारे लिए ही है। घर में कभी कुर्म के घर से मेवा या कोई अच्छी चीज आती तो सब प्रेमियो में बाँट कर खिला देते। घर वाले ढूँढते तो कहते जिनको जरूरत थी उनको मिल गया है। कई बार भोजन बनाकर लाते सब प्रेमियों को खिलाते। सब को Picnic पर ले जाते और

S		9	23
M	31	10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

MAR 97

ॐ

सबको कहते तुम कुछ न लाना खाली अपने को लेकर आना। वहाँ चीजे लेकर उनको खिलाते। खिलाने में उनको बड़ा मजा आता था खुद के लिए बचे या न बचे घर में जब भगत प्रेमी आते, उनको चाँदी के बर्तनों में खिलाते जैसे बड़े आदमी आये है घरवाले जलते, कहते जिन्होंने कभी स्टील के बर्तनों में नही खाया उनको तुम चाँदी के बर्तनों में खिलाते है पर भगवान का प्रेम ऐसा था। भगवान सब सत्संगियों को कहते तुम सब मेरे दामाद हो, क्योंकि मैंने अपनी बेटी ब्रह्मविद्या तुमको दी है इतनी कुर्बानी जो सुबह कल्याण के लिए निकलते और शाम को वापस आ जाते। जाते धक्के खाते सबको ज्ञान देते। कभी प्रेरणा आई कोई प्रेमी याद करता तो गर्म फुलका थाली में छोड़कर उठ जाते और वहाँ पहुच जाते दिल में इतना प्यार कि सबको तृप्त करते। I may die that you may live. उन्होंने कितनी जगह करके दिखाया। कितने ऐसे Patient जो घरवाले भी उनके पास नही जाते थे तो दादा

लखमी भगवान खुद वहाँ जाकर उनकी सेवा करते किसी विधवा को देखते तो उनका दिल भर जाता कि इसे हर तरह से तृप्त करे। कभी किताब लेकर बैठते कोई पूछता आपको किताब में क्या मिलता है, भगवान कहते है तुम्हारे लिए Point ढूढता हूँ कि कैसे इन को Point सुनाऊँ जिससे इनका अज्ञान निवृत हो जाये। खुद दिन को भी 3½ बजे उठकर बैठ जाते, चाय पी के कापी लेकर सत्संग के लिये बैठ जाते। जो उनके कमरे में सोते थे वह समझते थे कि अभी तो सोये और भगवान तो निष्काम, नि. जागंदी ज्योत उनमें आलस्य कहाँ। निरंकार फिर इतने जो सबको कहते हमको टर करके ही बुलाओ और समय पर कहते मैं सब कुछ तुम्हारे से सीखा हूँ। उनके प्रेम से कईयों को जीवन मिला आज जो भी सत्संग की महिमा हो रही है वह दादा लखमी भगवान की कुर्बानी का फल है। उनका Motto (मत) था दुख ही दुख है सुख लेने में, सच्चा सुख है सुख देने में। To give is to live.

भगवान कहते – I want to be happy but I

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

14 FRIDAY ✻ MARCH

want to be happy till I make you happy too. Life is worth living when I am worth giving. I got, I give same to you too.

अगर जीवन में दे सकते है तो क्यों न तुमको देकर तृप्त करे। दुनिया में जीते सभी तो सभी है पर सच्चा जीना उसका है जो औरों को जीवन दे। वक्त पर देखते कि मधुबन के बंगले पर मिट्टी है तो स्वयं ही उठकर झाड़ू लगा देते। दूसरे को शर्म आ जाती। कभी कपड़े धोते तो दादा भगवान हल्के होकर सृष्टि में रहे। समय पर प्रेमियों का bathroom Latrine उठाते भी इन्हे संकोच न हुआ। एक स्त्री के शरीर में तकलीफ थी वह भगवान के पास मधुबन गई हुई थी और शौच क्रिया के लिये कमोड इस्तेमाल करती थी। एक दिन जमादार नही आया। कमोड साफ होवे नही तो bathroom कौन जाये, तो दादा भगवान ने कमोड साफ कर दिया। सब गुरु शिष्य की सेवा, तन, मन, धन लेते है। परन्तु इधर भगवान ने अपने

15 SATURDAY ✻ MARCH

मुख से पैदा किये हुए बच्चो पर तन, मन, धन वार दिया। और अपने संसारी बच्चों की तरफ आंख उठाकर भी नही देखा। अपना आप जानकर पूर्ण से निष्काम में सर्व की सेवा की। सबको खाना फल काट कर खिलाना। 75 वर्ष एक ट्रेनो बसों में दूर-दूर जाते। कभी एक-2 दिन में तीन चार जगह जाते। ट्रेन की भीड़ में कहते आओ-2 सब आओ बेटे की शादी है। खुद कभी किसी को न कहते खिसको तो हम बैठे। इतना भी कह कर इस भगवान को तकलीफ क्यों दूं। हमेशा कहते I am 80 years young. गीता उनको बहुत प्रिय थी। एक-2 श्लोक का सूक्ष्म अर्थ निकालकर सब को मिलाते। सब को मधुबन, हरिद्वार ले जाते

16 SUN

तो एक दिन एक Dr. ने सवाल किया कि आपको भय नही लगता। कोई रास्ते में मर जाये या कोई और तकलीफ आ जाये दादा भगवान कहते तो दादा भगवान कहते निष्काम में कोई उल्टा फल दोष नही निकलता। और ऐसे कई एक खेल हुए पर कभी कोई नुकसान नही हुआ। एक बार भगवान भक्तो के साथ National Park में बैठे थे तो एक ऊपर छत्री पर सांप था।

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
	31					1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30						

MAR 97

ॐ

ॐ

भगवान ने कहा तुम चुप बैठ जाओ यह साँप आप ही चला जायेगा। कुछ समय बाद वह नीचे उतर कर चला गया। एक बार भगवान पुना के बगीचे में गये वहाँ सब अच्छी तरह आराम से बैठे। उसी समय भगवान ने कहा इधर से उठकर दूसरी जगह बैठते है अन्दर में सबको आया कि यहाँ तो अच्छे बैठे थे पर गुरु वाक्यम् सत्यम् करके गये। वहाँ बैठकर देखा वहाँ साँप आया उसी गुफा से होकर चला गया। सबको विश्वास हो गया भगवान के वचन पर व निष्कामता की सच्चाई पर। एक बार भगवान हरिद्वार गये वहाँ दो लड़कियाँ डूब गई तो उनको भी कोई बचाकर लाया। दादा भगवान शान्त बैठे रहे। खुशी रंज से ऊपर। निष्कामी फल की इच्छा से रहित है तो प्रकृति भी उसे साथ देती है मौसम भी उसे साथ देता है वायु भी उसके कदम चूमती है। सभी देवता उसके आगे सिर झुकाकर खड़े हो जाते है जैसे सूर्य में चमक पड़ा होता उसे

कोई रस नहीं आता ऐसे अनेकों का उद्धार करते हुए भी कहते अपने ऊपर कृपा की है अपने को हमेशा छिपाना ही उनकी निष्कामता है। विधवाओं को भगवान ने अपने प्रेम व त्याग से उठाया। वे आज अपना जीवन धन्य मानकर दादा भगवान का गुणगान करती है। निर्बल को बल दिया, कमजोर को शक्ति दी नर से नारायण बनाने वाला, कलर से केसर बनाने वाला सद्गुरु है। जिसका नाम निष्काम है वो कर्म नहीं जो बोलता है मैंने निष्काम कर्म किया तभी बीमारी भी आती है वह निष्काम कर्म हुआ ही नहीं जहाँ मैं आई। मैं में ही तो हूँ सब रोग है दादा भगवान की सच्ची भक्ति थी वहाँ कोई आवाज न था। भगवान पूर्ण निष्काम था। उनकी निष्कामता के कुछ उदाहरण लिखते है।

जब भगवान सबके साथ सैर करने जाते थे। कोई थक जाता तो उसके पाँव दबा देते, जैसे माँ बच्चे की सब थकावट हर लेती है।

APR 97

S		13 27
M		14 28
T	1	15 29
W	2	16 30
T	3	17
F	4	18
S	5	19
S	6	20
M	7	21
T	8	22
W	9	23
T	10	24
F	11	25
S	12	26

ॐ

ॐ

19 WEDNESDAY ✲ MARCH 1997

अगर कोई दवाई वाला शर्म करता तो भगवान कहते मैं अपने को खुश करता हूँ

एक सत्संगयानी की छाती में बीमारी थी वह मास के गन्दे टुकडे निकाल कर बाहर फेंकती थी। वह Bombay में अपने रिश्तेदार के यहाँ इलाज कराने के लिए आई। उन्होंने Dr. का इन्तजाम किया वह Dr. रोज पट्टी करके जाता था पर कुछ आराम न हुआ। वह 5-6 कपडे सारे दिन में बदलती थी। दादा भगवान भी Bombay में थे। आराम न हुआ तो भगवान उसको लेकर hospital गये वहाँ 4 घन्टे खडे होकर Dr. को दिखाया। उसको दूसरे दिन से ही फायदा होने लगा। वह थोडे ही दिनों में ठीक हो गई। और बहुत शुक्रिया शुक्राना मानने लगी कि ऐसा गुरू भी होता है जो अपने भगत के लिये इतनी तपस्या करे अपने को जलाकर औरों को रोशनी दे।

दादा भगवान जब किसी को चिट्ठी लिखते तो उससे link जोडकर उसके भीतर चले जाते, फिर

20 THURSDAY ✲ MARCH

उसको जरूरत के मुताबिक खत लिखते। और पत्र लिख कर कहते कि अभी Post करो तो कोई बोलता भगवान पीछे Post कर देंगे तो कहते अभी जाकर दादर में Post करके आओ ताकि आज ही निकल जाये तो चिट्ठी पूरे वक्त पर भगत को मिलती थी। कभी-2 कोई भगत लिखता था भगवान आपका पत्र सही वक्त पर न मिलता तो मैं आत्महत्या कर चुका होता।

S		9	23
M	31	10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	MAR
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	97
F	7	21	
S	8	22	

ॐ

ॐ

जसी बूटानी को ज्ञान देना →

दादा भगवान ने जैसे ही ज्ञान लिया तो यह सं० किया कि यह ज्ञान स्त्रियों को दूंगा और उनको ताकत देकर मर्दो को मर्द बना दूँगा। उनका यह सं० पूरा हुआ। एक स्त्री जसी नाम की विधवा हो गई। उसके 5 छोटे-2 बच्चे थे वह सारा दिन कहती थी ये बच्चे कैसे पलेंगे और कहती मैं सारी उम्र रोकर काटूँगी. मै कभी न हँसुगी। पर दादा भगवान ने उसको ऐसा हँसाना कि हमेशा के लिए आँसु सूख गये उसे ज्ञान का प्रेम देकर बहादुर बना दिया। पहले सोचती थी बच्चे कैसे पलेंगे पर ज्ञान में आकर देखा बच्चे आपे ही समर्थ होकर चलने लगे। इतना तक उसने कहते आप सतसंग में जाओ हम पूरी पकोडी बनाकर खायेंगे जब बड़े हुए एक-2 बच्चा विदेश चला गया। अब भी सब अपने पैरों पर है। आज खुद भी उनके

साथ अमेरिका रहती है। वहाँ ज्ञान यज्ञ चलाती है। जो भी सामने मिला उसे ज्ञान व प्रेम देकर तृप्त करती है। ज्ञान से जीने की कला मिल जाती है जीओ और जीआओ।

✧ HOLI ✧

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

24 MONDAY * MARCH 1997

दादा भगवान का बड़ी उम्र वालो से प्रेम →

भगवान को बड़ी उम्र वालो से प्यार व करुणा होती थी। कि इसकी भावना पूरी करे, जैसे उसमें कोई वासना न रहे। लखनऊ में एक पुनवानी नामक बुढ़िया थी। उसे इच्छा हुई कि दादा भगवान के साथ hill station पर जाऊँ किसी को दिल न थी कि यह साथ चले, इसे कौन सम्भालेगा। सेवा करनी पड़ेगी। दादा भगवान ने कहा पहले इसकी टिकट आयेगी पीछे मेरी। भगवान ने उसे प्रेम करके घुमाया तृप्त किया। वो भी प्रेम में जवान हो गई। अब भी भगवान के गुणगान करती है। उसको पूरा ग्रन्थ का ज्ञान था पर अर्थ नहीं समझा वो सब इधर समझा। दादा भगवान बूढ़ो को कहते "गुरुमुख कदी न बूढ़े होय"। दादा भगवान बूढ़ा मण्डली गये, उनको बताया, गीता पढ़ो, समझो तो बुढ़ापे मौत से दूर जायेगें।

25 TUESDAY * MARCH

एक बूढ़ा खास बरली से दादा भगवान के मुख से ज्ञान सुनने आता था। उसको दांतो की तकलीफ थी। परन्तु वह रोज आता था। भगवान के मुख से बहुत सुनने। भगवान कहते तू बहुत है तो वह सब भूलकर उसके आनन्द में आ जाता। कभी भगवान को बाहर से सत्संग करके आके लौटने में देरी होती तो भी वह बूढ़ा बैठा ही रहता और भगवान के मुख से बहुत सुनकर जाता। भगवान के आने से पहले इसको कहते तू बाहर क्यु देखता है घड़ी-2। तुमको ज्ञान सुनने से मतलब है चाहे किसी मुख से निकले पानी तो पानी है ना चाहे शेर के मुख से आये, चाहे गाय के मुख से। तो वो भगत कहता तुम सत्संगी, ब्रह्मज्ञानी के मुख से निकला ज्ञान बन्दूक की गोली जैसा आर पार जाता है। "गुरुमुख नाप जपे इक बार"।
फिर जब वह बूढ़ा बीमार हो गया तो भगवान उसके घर जाके ज्ञान सुनाके आते और अन्त समय जब उसने भगवान को पुकारा तो भगवान बारवली में थे। लक्ष्मी भगवान ने दादा भगवान को कहा चलो बूढ़ा याद करता है। वहाँ चलो। चाय तैयार

S		9	23
M	31	10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

MAR 97

ॐ

ॐ

भी एकदम दौड़कर चल दिये और पूरे वक्त पर उसके पास पहुँचे। ओम-2 की धुनि में उसका शरीर शान्त हुआ। अन्त समय वो भगवान का दर्शन कर अन्तर पुरुष और मुक्त हो गया। उसके घर वाले पहले ही बोलते थे: तुम्हारी लाश भगवान ही उठायेंगे। तुमने जितना चिन्तन किया है पहले वह गलत तरह से भी चिन्तन करता था कि दादा लक्ष्मी मालूम नहीं कहाँ जाते हैं। पीछे जभी विश्वास हुआ, सच देखा तो कहने लगा लक्ष्मी भगवान जैसी गुरु भक्ति कोई न कर सकेगा और सच में सच्चाई की प्राप्ती कर और प्रकट कर निहाल हो गया।

दादा भगवान का चनदनी को ज्ञान देना →

एक लड़की शादी के 6 महीने के बाद ही विधवा हो गई, वह बहुत रोती थी बिस्तर पर पड़ गई, बीमार हो गई। कुछ न खाती पीती, कहती वह वापिस आयेगा। वह कहती मैं उसकी सोने की मूर्ति बनाकर पूजा करूँगी वह जरूर वापस आयेगा। ऐसे समय में भगवान दादा लक्ष्मी उसके पास गये। उसको बहुत प्यार किया ज्ञान सुनाया, प्यार से खिलाया पिलाया। उसको जो भ्रम था कि पति वापस आयेगा वह निकाला बताया कि भगवान ही सबका पति परमात्मा है धीरे-2 वह ठीक हो गई उसको भगवान अपने साथ सैर पर आदि जगहों पर भी लेकर जाते चनदनी ठीक तो हो गई पर एक जोड़ो के दर्द की तकलीफ रह गई। वह कहती भगवान मेरा यह भी दर्द ठीक करो। भगवान कहते नहीं, यह

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

28 FRIDAY ✲ MARCH 1997

मैंने तुमको दर्द इसलिये दी है ताकि तू घर में बैठी रह। और मैं कभी भी तुम्हारे पास आऊंगा तो मिलेगी नही। संसार में धक्का खाने से बचने के लिए तुमको तकलीफ gift समझ कर रखना चाहिए। भगवान उसको प्यार करते उसके पास जाते हर दिवाली को वह भगवान के इन्तजार में बैठती भगवान उसके पास जरूर जाते।

एक दिन भगवान चनदनी को लेकर कहीं ज्ञान सुनाने गये, वहाँ रास्ते में चनदनी को कहा apple खाओ वह बोली दाया रास्ते में अच्छा नही लगता कैसे खायेंगे। फिर बोली छुरी नही है काटने के सिवा कैसे खायेंगे, ऐसे करके घर वापस आ गई जब घर आ गई तब बोली सब मिलकर apple खाते हैं दाया, भगवान ने कहा उस जगह ही खाना है जहाँ दाया भगवान कहा है और बिना काटे ही खाना है फिर वहीं ही उसे जाकर खिलाया। भगवान ऐसे मन का स्वभाव व जिद बदलते थे।

29 SATURDAY ✲ MARCH

दादा भगवान का राजा को ज्ञान देना →

दादा भगवान को बीमारी पर बहुत करुणा आती थी कि उन्हें ऐसा ज्ञान मिले कि बिमारियो, दुख, बुढ़ापे की तकलीफों से दूर जायें। लखनऊ के पास गोपालखेड़ा के गाँव के राजा रानी भगवान का ज्ञान सुनते थे। कुछ समय के बाद राजा बीमार पड़ गया। दादा भगवान बम्बई में थे। उसकी बीमारी को सुनकर इतना प्रेम आया कि इसे चिट्ठियों द्वारा ही मुक्त करूँ। दादा भगवान इधर से रोज

30 SUN

ही चिट्ठी लिखते - No sick, no sin no, death is un Atma. दादा भगवान इतना उसको दिल में रखकर चिट्ठी लिखते जो जरूरत के समय उसको मिलती थी और वह बड़ा खुश हो जाता था। सब लखनऊ वाले उसको चिट्ठियाँ सुनाते थे। दादा भगवान की करुणा में वे डूब जाता था। और

S		9	23
M	31	10	24
T		11	25
W		12	26
T		13	27
F		14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	
T	4	18	
W	5	19	
T	6	20	
F	7	21	
S	8	22	

MAR 97

ॐ ॐ

ॐ

1997 — MARCH ✲ MONDAY 31

जब उसका शरीर शान्त हुआ, सब सत्संगी बैठे थे, हरि ॐ की धुनि लगी थी। हरि ॐ में हरि ॐ हो गये। फिर दादा भगवान की इतनी नम्रता फिर इतना जो सब लखनऊ वासियों को लिख दिया कि तुम सब की कृपा से राजा का शरीर मुक्त हुआ। ऐसा ब्रह्मज्ञानी का अकालीपन है। सदके जाऊँ ऐसे ब्रह्मज्ञानी पर।

दादा भगवान का गरीबो को ज्यादा प्यार देना →

भगवान दादा ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर। उनके लिए गरीब शाहूकार सब सम ही है। पर गरीब जो अपने को गिरे हुए समझते हैं। उनके लिये खास करुणा थी कि निर्बल को बल दे। जिन को दुनिया तिरस्कार करती थी उन्हे दादा भरपूर प्यार देते थे। इन्होंने Love Poverty पर जोर दिया। उनके प्यार ने गरीब को गरीबी मिटाकर शाहंशाही दी।

APRIL ✲ TUESDAY 01

✧ BANK HOLIDAY ✧

दादा भगवान की दी हुई शाहूकारी को प्राप्त कर वह कहते अच्छा ही हुआ जो गरीबी की सौगात मिली, जिससे परमात्मा का प्यार पाया है। दादा भगवान गरीबो को शाहूकारो के घर ले जाते। उन्हे हर प्रकार का अनुभव कराते कि शाहूकारी क्या है, गरीबी क्या। ज्ञान लेकर सब अनुभव कर अपने को राजाओं का राजा समझने लगे। जब मोटर गाड़ी आती भगवान उनको पहले बिठाते। दादा भगवान को खाने के लिये कोई बढ़िया चीज देते, देने वाला Kitchen में जाता तो दादा भगवान जो गरीब प्रेमी सामने बैठा होता उनको खिला देते ताकि हर चीज खाकर तृप्त हो जाये कि स्वाद क्या है साहूकारी क्या है कोई आकर कहता भगवान भगवान मैं नौकरी करता हूँ। दादा भगवान बड़ी करुणा और प्यार से कहते नौकरी शब्द न कहो, सेवा होती है अत्यन्त कृपा कर सबको उठाते।

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

MAY 97

ॐ

ॐ

02 WEDNESDAY ✲ APRIL 1997

एक बार दादा भगवान आगरा गये, वहाँ सब अच्छा
घर छोड़कर एक गरीब लड़की के घर रहे। उसको बहुत
-२ हिम्मत और आनन्द मिला। उसका घर ऐसा था
जो bathroom में दरवाजा भी न था। चारपाई आगे
रखकर दरवाजे का काम लिया जाता था। घर में किसी
प्रकार सुविधा नहीं थी। परन्तु भगवान ने उसकी दिल बड़ी
करने के लिये सब कष्ट सहा। ऐसा था गरीब के लिये
प्यार उनका।

भगवान के मुख से हर वक्त ज्ञान ही निकलता
था। दादा भगवान से किसी ने पूछा ज्ञान के बाद सुना
है। आप 14 वर्ष मौन में रहे, किसी से ज्ञान चर्चा न
की। दादा भगवान ने कहा मुझे 15 मिनट पहले की बात
याद नहीं है तो 14 वर्ष की बात क्या बताये। एक बार
दादा भगवान शरणागति के Kitchen में गये, एक प्रेमी
खाना बना रही थी उसने देखा भगवान खड़े है तो बड़े
प्यार से कहा आप क्या खायेंगे?

03 THURSDAY ✲ APRIL

उसने समझा भगवान जरूर खट्टा खारा या मीठा
भोजन कहेंगे परन्तु भगवान ने कहा हम तुम्हारा अहंकार
(ago) खायेंगे। तो वह आश्चर्य में पड़ गई कि ब्रह्मज्ञानी
२४ घंटे सच में रमण करता है जो सब को भी सच में
ही सुजाग करते है। दादा भगवान ने कहा मेरा नाम मगनमल
है मैं सब में मगन रहता हूँ। दादा भगवान की स्त्री
का जब शरीर शान्त हुआ तो भगवान श्मशान गये। जब
वापस आये तो किसी प्रेमी ने पूछा आप श्मशान गये
तो भगवान ने उसी समय बोला मैं गया था क्या, आत्मा
में आना जाना भासता नहीं।

S		13 27
M		14 28
T	1	15 29
W	2	16 30
T	3	17
F	4	18
S	5	19
S	6	20
M	7	21
T	8	22
W	9	23
T	10	24
F	11	25
S	12	26

APR 97

ॐ

ॐ

1997

पहेलियों में ज्ञान पक्का करना →

APRIL ✲ FRIDAY **04**

कभी किसी की निन्दा या स्तुति करके देखते थे तो यह आत्मा है या देह में आ जाती है। जैसे जड़ भरत ने बाप के आगे पहले ऐसा हँसा पीछे उसका बाप emotion में आ गया। जड़भरत ने कहा अभी ज्ञान नहीं लगा क्योंकि आत्मा emotionless है।

कभी किसी की टिकट कराई और जब वो आई हुई होती तो कि सामान भी तैयार है तो भगवान कहते अभी टिकट कैंसल करा दो। भगवान देखते कि यह हिल जाते हैं या शांत रहते हैं कभी-२ प्रेमियों से बाजार से गुजर रहे होते तो कहते यह चीज ले लो sale लगी है सस्ती मिलेगी तो सच्चे भक्तों के वैराग्य की परीक्षा हो जाती। सच्चा प्रेमी तो ये कहता कि हमको पदार्थ तो जड़ लगता है। हमको कुछ नहीं चाहिये - आपका ज्ञान ही काफी है।

APRIL ✲ SATURDAY **05**

मैंधरान में एक आदमी को कहा तुम आज 10 बजे की गाड़ी से बम्बई चले जाओ। उसने कहा ठीक है, वह उठा तो बोले नहीं 12 बजे जाना। 12 बजे तैयार हुआ तो 3 बजे वाली गाड़ी से जाना। जब 3 बजे तैयार हुआ तो बोले नहीं अब बैठ जाओ। तुम्हारी परीक्षा हो गई, तुमने मन को मोड़ लिया है।

कभी किसी को कहते तुमको घर की ही साड़ी पड़ी है इसी में कालका चलो। ज्ञान के लिये बाल भी न बनाओ, ऐसे दे० आ० करते थे। खुद भी कभी किसी के जोर करने पर किसी की शादी में जाते तो चप्पल पहन कर ही चले जाते। जो पहले हीरों में, राज में रहे ज्ञान के बाद पूरा ही दे० आ० मिटा दिया।

SUN 6

मैंधरान में भगवान जब सब प्रेमियों के साथ सैर करने निकलते तो एक भगत को एक जोड़ा चप्पल थैले में रखने को कहते और हमेशा किसी न किसी का चप्पल रास्ते में टूट जाता और वह चप्पल थैले में बनने के लिये पहुँच जाती।

MAY 97

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

ॐ

07 MONDAY ✲ APRIL 1997

एक दिन एक सत्संगवाली ने किसी को केला खाने को कहा, तुम्हारा घर है जो केला दिया।

दादा भगवान ने एक दिन एक औरत को कहा सत्संग में चलते हैं तो वह कहने लगी मुझे बुखार है बढ़ जायेगा। फिर दादा भगवान ने लक्ष्मी भगवान से कहा - भगवान के शरीर में भी 101 बुखार था पर भगवान ने कहा - चलेंगे तो उतर जायेगा और सच में ऐसा ही हुआ। भगवान का बुखार उतर गया और उसको बैठकर बुखार बढ़ गया। दादा भगवान का जोड़ प्यार और भगवान लक्ष्मी का दृढ़ निश्चय मिलकर एक हो गया तो बुखार को टिकने की जगह न मिली।

सच्चा व पक्का ज्ञान यज्ञ लक्ष्मी भगवान के आने के बाद ही शुरू हुआ जो कि भगवान दादा की बची हुई माया उनके संग में कट गई या तो किसी का बन जाना था या किसी को अपना बना ले। दादा भगवान

08 TUESDAY ✲ APRIL

के घरवाले पहले दादा भगवान में मन रखते थे पर घर के काम में लगे रहे - भगवान ने रमज से उनके घर में बता दिया बैल की आँख पर पट्टी बाँधकर गोल-2 घुमाते हैं कि वह न देखे कि मैं गोल घुमता हूँ। ऐसा आप दादा भगवान को घुमाओ मत अब सच के रास्ते में free छोड़ो। पहले तो नहीं समझते थे पर फिर सच्चाई, त्याग, वैराग्य देखकर शांत हो गये। दादा भगवान ने भी भगवान को मंदिर की मूर्ति बना दिया। लक्ष्मी भगवान सौ-2 प्रेमियों को खाना बनाकर सबको खिलाते, प्रेम करते। एक दिन भगवान ने कहा - वचन में जाकर देखो। भगवान तो निश्चय में पहले ही अडोल थे और भगवान शांत होकर बैठ गये क्योंकि ब्रह्मज्ञानी कर्म करे या न करे - है स्वार्थ के सिवाय। फिर जब दादा भगवान ने कहा बनकर कभी-2 देखो तो भगवान ने वैसे ही किया।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

लक्ष्मी भगवान का पर्स छुड़ाना →

दादा भगवान ने एक दिन लक्ष्मी भगवान से कहा
पर्स छोड़ो। भगवान तो पहले ही निर्मोही होकर बैठे
थे। उन्हें क्या माया की परवाह। जहाँ पर्स छोड़ा वहीं
ही पड़ा रहा। ~~10~~ 10 वर्ष तक हाथ न लगाया। 10 वर्ष
बाद एक लड़की ने अलमारी से निकाला। भगवान हर
परीक्षा में पास रहे। वो तो शुरू से भगवान हैं पर प्रकृति
की लीला में Part पूरा करके आदर्श दिखाया। कभी पैरों
में दर्द भी होता - दादा भगवान कहते चलो तो चल
पड़ते। 4-5 मील दूर कभी उफ नहीं किया। कभी किसी
शहर में बोलते तो चल पड़ते। अपने शरीर का कभी ध्यान
न किया। किसी शहर का पानी ठीक न लगता। छः-२
महीने पानी की वजह से पेट में तकलीफ होती, सारा
खून पानी बन जाता तो भी कभी न कहते दूसरे शहर में
चलो। भगवान कहते प्रकृति-२ को

आप ही देखेगी। इतना त्याग, वैराग्य, सच्चाई।
भगवान लक्ष्मी ने तेरी रजा में रजा रहा सिद्ध करके दिखाया
भगतों से मान अपमान भी कराया परन्तु भगवान सदा
अडोल रहे। दादा भगवान देखते थे कि लक्ष्मी भगवान
को सब जिज्ञासु पहचानें, जिज्ञासु ही उनके सामने बैठें।
जो जिज्ञासु होते उन्हें भगवान ऐसी बात बताते जो भगवान
बाहर से ~~दिखाते~~ दिखाते कि भगवान में मन न रखें।
लक्ष्मी भगवान तो उनकी हर पहेली को जानते हुए
मुस्कराते रहे। लोग उनके पवित्र सच को जानकर
मुस्कराते रहते और जिज्ञासु सर झुकाते रहते। जय हो
सतगुरु भगवान दादा लक्ष्मी ने एक दूसरे की आत्मा
में चढ़ाया और एक दूसरे को माया के पंजे से मुक्त कराया
दादा लक्ष्मी भगवान शीशे के दो बाजू की तरह थे जैसे
देखने में दो पहलू आते हैं पर है एक, ऐसे देखने
में दो हैं पर हैं एक। एक कमरे जो दादा भगवान
सत्संग करते तो वो ही दूसरे कमरे में भगवान करते
थे। जिस्म पर आत्मा एक ही है

MAY 97			
S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

ॐ

ॐ

1997

11 FRIDAY ✲ APRIL

दादा भगवान की नम्रता तथा अपने को गुप्त रखना →

दादा लक्ष्मी भगवान ने बताया कि जब वह दादा भगवान के साथ यज्ञ करते तो कई लोग उत्सुकता वश उनसे पूछते कि आप दोनों में head कौन है। उस समय दादा भगवान मौन में रहते। भला जो गुरु शिष्य का भेद मिटाकर समान हो चुके उन्हें head का पता कैसे चले। इसी नम्रता व समरसता ने आज समरता का संदेश दिया।

दादा भगवान बहुत बार बोलते थे इस ज्ञान कार्य में ही हमको भगवान लक्ष्मी ने ही head किया है। उसकी ही हम पर बड़ी कृपा है। देखो आज लक्ष्मी की हिम्मत न होती तो तुम सब कैसे पहुंचते। हम एक दूसरे की मदद से आगे बढ़े थे। कभी मेरे से भूल होती थी तो लक्ष्मी भगवान मेरे को सावधान करती थी तो फिर सुजाग हो जाते थे। वह सत्संगी एक दूसरे के प्यार में चढ़ सकते हैं मेरे को भी तुम सब का प्यार मिला है।

12 SATURDAY ✲ APRIL

तभी आज मेरी यह शक्ति है। कभी नहीं बोलते मैं गुरु हूँ। ऐसा साथ कहते थे कि मैं सीखता हूँ। ऐसे थे मेरे भगवान दादा निर्माण, निरंहकारी, सच्चे मार्गदर्शी होकर भी अपना नाम नहीं किया। दादा भगवान की देह विस्मृति भी अजीब थी। देह रूपी घोड़े से उनको नित्य कार्य होते हुए भी कहते मैंने कुछ नहीं किया है 70 वर्ष की उम्र में भी कैसे चुस्त दुरुस्त थे। कि उनके आगे आज का भी शर्मा जाता। जब-2 मैवासान अपने प्रेमियों के साथ जाना होता था तब-2 खुद उनकी सेवा करते थे। कपड़े व बर्तन धो देते थे सब्जी, फ्रूट, अनाज के बड़े-2 थैले खुद उठाकर

13 SUN

चलते थे मजदूर का नाम लेने पर कहते हम किसी की सेवा लेना नहीं चाहते, सेवा देना ही जानते हैं।

✧ BAISAKHI ✧

दादा भगवान की सेवा नम्रता से कई लोग सीखते और उनको शर्म आती कि हम लोग कैसे धार में चलते हैं। जो बात 100 उपदेश से भी न हो सकती थी वह दादा भगवान के प्रत्यक्ष सेवा व नम्रता ने उनको सिखाई।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

दादा भगवान का करुणामयी आँसुओं से लक्ष्मी भगवान को प्रकट करना →

✧ AMBEDKAR JAYANTI ✧

लक्ष्मी भगवान की लोक की बेटी का जब देहान्त हुआ तो उनके मुख पर कोई रेखा न थी। एक दम अडोल एक रस। भगवान दादा लक्ष्मी शाम को फिर सत्संग गये। लोकारीती वालो ने बहुत दिन का ऊपर नीचे शब्द कहे। वह भला इस अद्वैती परम पुरुष को कैसे जाने कि कितने मोह से दूर है। नहीं तो घर में कुत्ता भी मरता है तो दुख होता है। उसी समय दादा भगवान ने अत्यन्त करुणामयी स्वर से कहा कि सुनते है ब्रह्मज्ञानी को पानी पर लकीर के भाँति जाग्रत को दुख भासता है। पर आज देखते है पानी पर लकीर मात्र भी नहीं है। सच्चाई तो सच्चाई है जो प्रकट होकर रहती है तब अन्दर में सच को जानकर झुक गये।

एक समय देहली में भी भगवान दादा ने बहुत सबको सजाग किया कि हमने भी तुम सब के कहने से इनकी बहुत परीक्षा ली। तुम सब को खुश किया पर सूरज को कौन ढक सकता है - सच तो प्रकट होकर ही रहेगा। भगवान लक्ष्मी भी उस समय भाव विभोर थी - लेकिन भगवान को लक्ष्मी भगवान को प्रकट करना ही था। इस तरह सच को डा० स्वराज को सदरपुर में एकान्त में बताया था कि वह (लक्ष्मी भगवान) एक महान शक्ति है - उन्हे झुकना। यह इशारा तो सबके लिए था - चाहे निमित Dr. स्वराज रहा।

दादा भगवान ने लक्ष्मी भगवान को पहले ही निहार जाना था। लेकिन ऐसा गुप्त और शान्त स्वरूप भी हमेशा भगवान को आगे रखता है कि कोई-२ प्रेमी ही यह अनुभव कर सका। एक बार दादा भगवान की २ नों का जब शरीर शान्त हुआ तो दादा भगवान बिल्कुल शांत रहे। लक्ष्मी भगवान को सत्संग करना है ऐसा प्रकट किया। फिर क्या था लक्ष्मी भगवान तो दादा भगवान का साक्षात रूप ही है। सब दादा

S		11	25	
M		12	26	
T		13	27	
W		14	28	
T	1	15	29	
F	2	16	30	
S	3	17	31	
S	4	18		
M	5	19		
T	6	20		MAY
W	7	21		
T	8	22		
F	9	23		97
S	10	24		

ॐ

ॐ

16 WEDNESDAY ✲ APRIL

✧ RAM NAVAMI ✧

भगवान के रिश्तेदार ज्ञान सुनकर हैरान रह गये जिनको बहुत शंकायें थी वह सब दूर हो गई । बोले आज जाना सच्चाई क्या होती है अन्त समय में भी दादा भगवान की पत्नी ने भी लक्ष्मी भगवान को भगवान जानकर आरती किया । दादा भगवान के घरवालों की आंखों में पछतावे के आंसू थे ।

लक्ष्मी भगवान ने दादा भगवान की बहुओं, बेटियों को प्यार करके लोकारीत और बन्धनों से मुक्त किया तीनों दिन सत्संग चला और ऐसा लगा कि दादू शोभिया दास की अपना नाम न ले ।

17 THURSDAY ✲ APRIL

जकार्ता वाली सुलक्षणी को ज्ञान दिया ⟶

सुलक्षणी जकारता से बम्बई इलाज के लिए आई हुई थी उसके पति को Cancer था । डा० ने जवाब दे दिया था वह बहुत दुखी थी और अन्दर ही अन्दर प० को पुकार रही थी कि भगवान मुझे शक्ति दो । भगवान दादा लक्ष्मी वहाँ पहुँचे । और उसको और उसके पति को ज्ञान दिया । दादा भगवान उस आदमी से बोला तू तो आत्मा है अजर-अमर है । काल की क्या मजाल जो तुमको छू सके । उसकी स्त्री ने पूछा भगवान यह नहीं मरेंगे ना ? ज्ञान सुनने से उसको अपनी बीमारी भूल गई । उसके बदन से बहुत बदबू आती थी । रिश्तेदार भी पास नहीं आते थे परन्तु भगवान दादा लक्ष्मी उनके पास हर रोज किंगसर्कल से कोलाबा पहुँच जाते थे । और उनको ज्ञान अमृत पिलाकर शीतल करते थे । बीच में कभी खाने का समय होता था प्यास लगती थी तो पानी का गिलास

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

1997

APRIL ✡ FRIDAY 18

ID-UL-ZUHA ✧

भी नहीं माँगते थे। खाने के समय उन दोनो का खाने पीने का बहुत ख्याल रखते थे। भगवान दादा लक्ष्मी उनको बोलते थे हमको थोड़ा काम है अभी आते है और कहीं से भी थोड़ा bread या कुछ खरीद कर खा कर आ जाते थे फिर शाम तक बैठकर उनको ख्यालात से ज्ञान सुनाते थे। वह भी उतना समय अपना दुख भूल जाते थे। एक दिन दादा भगवान का बोरावली में सत्संग था चार बजे। उनके हाथ में चाय का कप था। दो घूट पीकर अचानक दादा भगवान ने कप रख दिया और चप्पल पहनकर लक्ष्मी भगवान को बोला चलो अभी कोलाबा चलना है। एक प्रेमी ने कहा दादा चाय तो पियो बोले नहीं समय कम है वहाँ से सीधा कोलाबा पहुँचे तो वह आदमी अन्तिम स्वास ले रहा था। दादा भगवान ने अपनी गोद में उस का सिर रखा और ओम की ध्वनि हो गई। सुलक्षणी ने बताया कि दादा भगवान आपके

APRIL ✡ SATURDAY 19

लिये ५ बजे पूछा था तो मैंने कहा वो तो बोरावली में है। वो पहुँच तो गये पर भगवान आप ज्ञानी जाननहार है। आप तो पहुँच गए ऐसे आत्मा के द्वारा से उनका शरीर शान्त हो गया और मुक्ति को प्राप्त हुआ। सुलक्षणी ने कहा दादा भगवान आपने तो कहा था यह नहीं मरेगा। दादा ने कहा ये अभी भी नहीं मरा है, आत्मा अमर है। प्रेमी की पुकार पर आता जरूर हूँ वाला वायदा कि भगवान ने निभाया। सुलक्षणी आज भी दादी ज्ञानी से मिलकर या सत्य भी जकातों में सत्संग करती है। उससे भी कितनो को शान्ती मिलती है।

SUN 20

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

MAY 97

ॐ

ॐ

21 MONDAY ✲ APRIL

1997

अश्रद्धालु को तकलीफ देखनी पड़ी →

✧ MAHAVIR JAYANTI ✧

दादा लखमी भगवान के पास दो बहने सत्संग सुनने आती थी। एक बहन को बहुत श्रद्धा थी। दोनो भगवान के साथ बगीचे में ज्ञान सुनने गयी। दादा भगवान सबको छोड़कर वृक्ष के नीचे कापी लिख रहे थे तो जिसको अत्यन्त श्रद्धा थी वह जाकर भगवान के पास बैठ गई और ज्ञान सुनने लगी। दूसरी बहन ने जाकर अपने पिता से कहा कि वह आज अकेली दादा से बैठी थी बस वह आदमी बहुत गुस्से में आ गया। अपनी बेटी को छाते से बहुत मारा और दादा भगवान को पुरुष समझा थोड़े ही दिन में उसका शरीर ऐसा फूला जो डा० भी हैरान हो गया, इसको क्या तकलीफ है डा० को उसकी बीमारी समझ में नही आती थी। यह तो सच्ची बात थी पारब्रह्म स्वयं परमेश्वर के ऊपर जो

22 TUESDAY ✲ APRIL

झूठा शक-शंका रखेगा तो उसकी क्या हालत होगी फिर सबने कहा तुम जब तक दादा भगवान से माफी नही मांगोगे तभी तक ठीक न होगे। फिर उसने जब माफी मांगी तो वह ठीक होने लगा। --- ॐ, ॐ, ॐ ---।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

दादा भगवान सबकी आसक्ति निकालते थे →

दादा भगवान सबको बगीचे में ले जाते थे। सब खुशी से बैठ जाते - दादा भगवान देखते यह सब उलझ गये है कि बगीचा बड़ा सुन्दर है, मनोहर है तो उसी समय कहते उठो अब दूसरी अच्छी जगह ले चलते हैं। कितनो को लगता अभी तो बैठे है थोड़ा तो आनन्द ले परन्तु फिर प्रेम में उठकर चल पड़ते। दादा भगवान लक्ष्मी भगवान के साथ काश्मीर गए। दादा लक्ष्मी भगवान खुद बस में बैठकर पहलगाँव घूमने गए। अभी बस से उतरे तो उसी समय दादा भगवान ने कहा दूसरी बस तैयार है, वापस जाने के लिए चलो। दादा भगवान देखते थे कि भगवान की आसक्ति है कि पहलगाँव घूमे। भगवान मालिक स्थिति के ज्ञानी जानन हार वह पाँच तत्व में कैसे अटके वापस चले आए। दादा भगवान कभी भगवान को कहते आपको कलकत्ता काकी नही

घुमाया। भगवान कहते बड़े मजे से क्या देखना है। ऐसे दादा भगवान देखते कौन आसक्ति से रहित है। दादा लक्ष्मी भगवान एक समय नेपाल गए। किसी प्रेमी ने दादा लक्ष्मी भगवान को टेलीग्राम करके बुलवाया दादा भगवान दो दिन जाकर उसे तृप्त करके आए भगवान जब वहाँ पहुँचे तो भगवान तो शान्त में जिस जगह पहुँचना है वह पहुँच कर बैठ गए। भगवान के साथ दो-तीन सत्संगी जो गए उनकी इच्छा हुई घूमने की, पर अकेले जाये कैसे सो टैक्सी कार लेकर आए। तो आप भी घूमने चलो तब भगवान गए. वैसे दादा लक्ष्मी भगवान ऐसे आसक्ति रहित जो जान लिया कि ज्ञान के बिना स्थिति के कौन सी वस्तु देखने लायक है उन्होंने इस बात की Practice करली है ऐसे हम रोज किसी जगह भी और घूमने न जाओ ये तो बड़ी बात है।

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

MAY 97

ॐ

ॐ

25 FRIDAY ✲ APRIL 1997

भगवान दादा हर बात मे सुजाग →

एक दिन दादा भगवान National park में रूमाल छोड़ के आए। जब कुछ दूर चले आए तो याद आया तो वापस जाकर लेकर आए। कोई तो कहेगा ज्ञानी को रूमाल की क्या परवाह, पर हर कर्म में सुजागी थी कि ऐसे क्यूं गवांना। मैंवरान में बत्ती फजूल जलती थी कहते थे बन्द कर दो। ज्ञान देते थे सिपाही को बोल दो ना चाबी एक जगह ऐसे रखो जो अन्धेरे में भी ढूंढ के निकालो।

26 SATURDAY ✲ APRIL

दादा भगवान सबको एनकरेज करते थे →

एक लड़के ने ज्ञान सुना तो उसे ज्ञान सुनाने में बड़ा मजा आता था। तो वह जब भी आता तो दादा भगवान अपनी कुर्सी से उठकर उसको बैठाते कि तू सबको ज्ञान सुना और स्वयं नीचे बैठ जाते थे। इतनी नम्रता थी और दूसरे को भी encourage करते कि तुम बहुत होशियार है। घर में एक दिन एक लड़का छोटा बीमार हो गया। दादा भगवान उसको दिल बड़ी करने के लिए कहा खेलते हैं और हर बात ऐसे किया जो बच्चा जीता। बच्चे

27 SUN

को खुशी आ गयी और उसकी बीमारी हट गयी।

दादा भगवान के घर में एक बहू गरीबों की थी। उसको जो बच्चा हुआ वो लड़की भी कमजोर पैदा हुई। उस बच्चे को उठाने की कभी किसकी दिल नहीं हुई होती थी। दादा भगवान ने देखा कोई नहीं उठाता है। तो खुद उसे उठाते नचाते

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

1997 APRIL ✲ MONDAY 28

जब सबने देखा दादा भगवान उसे प्यार करते है तो खुद भी वो प्यार करने लगे ऐसे दादा भगवान सबको ताकत देते थे।

कोई भजन अच्छा गाता तो उसको बोलते भजन सुनाऊँ तो वह खुश हो जाते थे। ऐसे जो जिस बात मे होशियार होता उसको और बढ़ावा देते और प्रेम-२ में उसके अन्दर ज्ञान डाल देते। दादा भगवान ऐसे ज्ञान देते थे जैसे कि उनकी गरज है।

सबके अन्दर जाग्रति आये बार-२ ज्ञान सुनाते थे परन्तु लेने वालो ने इतनी कदर न की जितनी करनी चाहिए थी भगवान को निश्चय था "मैं ही तो हूँ" तो हमसे छिप कर हमारे अन्दर ज्ञान डाल देते थे।

APRIL ✲ TUESDAY 29

दादा भगवान अपने को मोडते →

दादा भगवान से किसी ने पूछा आप कैसे रहते है हमको शब्द आवाज सब सुनाई देता है दादा भगवान ने कहा असंग होके रहना है। फिर अपनी बात सुनाई कि कमरे में कोई बात करता है हमको नही सुनना है तो हम दूसरी तरफ मुँह करके सो जाते है एक कान कुछ कम सुनता है तो वह ऊपर की तरफ करके सो जाते है। मतलब दुनिया को नही मोड़ना है अपने को मोड़ो।

एक बार किसी ने कहा बाहर किधर शादी में बहुत जोर से शिकाई बजते है नींद नही करने देते। दादा भगवान ने कहा उनका तो कभी-२ दिन आता है। खुशी करने को कुछ तो रोज नींद करते है। उनको खुशी पूरी करने दो। दादा भगवान का शरीर भक्तों ने ले लिया क्योंकि बहुत ज्ञानी अपनी हस्ती मिटाकर रहता है। भगत भी अपनी

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

MAY 97

ॐ

ॐ

मत अनुसार भगवान को चलाते, कहते, उठो, बैठो सत्संग करिए, बन्द करिए। भगवान हर बात में हाँ कहते और मुड़ जाते। एक दिन बड़ी करुणा में सबको सिखाया जैसे मैं तुम्हारे लिए मुड़ जाता हूँ ऐसे तुम भी हरसमय मुड़ना सीखो। जो मुड़ेगा वह जुड़ेगा। अहंकार में हस्ती लेकर न चलना। रबड़ की तरह मुड़ जाइये। दादा भगवान का आदर्श ही जीवन है।

हर समय मौज ⟶

दादा भगवान कभी-2 अपनी जीवन लीला प्रेमियों के कहने पर सुनाते तो बड़े आनन्द से कहते कि मैंने जीवन में मजे ही मजे किए हैं। दादा भगवान ने जीवन को मौज में बिता दिया था। कभी अपने अनुभव की दुख की बात नहीं सुनाई। हर वक्त मौज ही बताई यही ब्रह्मज्ञानी से आदर्श मिलता है। दुनिया में कोई अनुभव सुनाएगा तो सब दुख-सुख Mix सुनाएंगे कि ऐसे दुखों से उठा ब्रह्मज्ञानी के घर सदा आनन्द। ब्रह्मज्ञानी का जीवन हर वक्त हँसी, हरवक्त खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

APR 97

ॐ

ॐ

1997

MAY ✱ FRIDAY 02

निर्मोही भगवान दादा →

एक बार जर्मनी में लड़ाई लगी। दादा भगवान का लड़का भी उधर था। उसको भी पाँच-छः गोलियाँ लगी थी परन्तु वह बच गया। उसकी सब गोलियाँ निकल गई परन्तु एक गोली रह गई और वह हिन्दुस्तान में आया। यहाँ पर सब प्रेमियों ने दुख प्रगट किया। परन्तु भगवान अपना बेटा होते हुए भी (भगवान तो नाम रूप से न्यारे थे। उसे बोले मैं तुमको बधाई देता हूँ कि इस बहाने तुम बिस्तर पर लेट कर गीता का ज्ञान सुनोगे नहीं तो तुम्हें कभी काम से फुरसत नहीं होती थी कि बैठ कर ज्ञान सुने। वह 3 महीने की जगह एक महीने में ठीक हो गया

MAY ✱ SATURDAY 03

दादा भगवान की करुणा →

एक लड़की दूसरे शहर में भगवान के पास आई हुई थी वह बहुत भोली थी तो सब लोग उसे बोलते थे कि यह का, वह का, बाजार से लेकर आ। उसको सब कम नजर से देखते थे। दादा भगवान की करुणा होती थी कि कोई भी किसी को कम नजर से ना देखे। दादा भगवान ने उसको बुलाकर कहा तुम अपने घर जा तब यह तुम्हें भगवान की नजर से देखेंगे तभी आना। इस बात से सबने अपनी गलती महसूस की और फिर वह जब भी आती उसे प्यार से देखते।

SUN 4

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

ॐ

05 MONDAY ✡ MAY 1997

मौन में ज्ञान देना →

एक लड़का भगवान के पास आया उसने लिखकर दिया मुझे मौन में ज्ञान चाहिए तो भगवान ने उसको आँखो में देखना शुरू किया। कुछ समय के बाद वह उठकर चला गया। भगवान के मौन से भी बहुत ज्ञान मिलता था। घर से कितनी भी विपत्ता लेकर आओ इनके सामने बैठने से सब अपने आप गल के बह जाता था अन्दर एक अजीब ठंडक महसूस होती।

06 TUESDAY ✡ MAY

निस्वार्थ ज्ञान →

एक बार भगवान देहली में ज्ञान अमृत वर्षा करके लौट रहे थे तो स्टेशन पर बहुत लोग जोर और प्यार से खाने-पीने का सामान उठाकर प्लेटफार्म पर फेंक दिया और बहुत जोश किया। तुम समझता है। भगवान आता जाता है भगवान तो है ही है। तुम लोगो ने इतने दिन क्या ज्ञान सुना। तुम मुझको हर में भगवान देखते है। भगवान को एक गिलास पानी भी स्वीकार न था। अपना तन-मन-धन सब लुटाया पर स्वयं किसी की पाई भी स्वीकार न की। सदा भगवान सबको कहते किसी के घर ज्ञान सुनाने जाओ पानी के गिलास तक की किसी से इच्छा न रखना।

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

MAY 97

ॐ

ॐ

1997

MAY ✲ WEDNESDAY 07

स्त्रियों को आत्म साक्षात्कार कराया →

एक बार भगवान के पास दो स्त्रियाँ आई थी। उन्होंने बहुत ही साधना की थी। कई संत साधुओं से संग भी किया था। पर शान्ति न मिली थी। आत्मा का अनुभव न हुआ था। वे दोनों भगवान की महिमा सुनकर भगवान के पास आई। दो चार दिन ज्ञान सुना उनको पहले दिन ही विश्वास आ गया कि सच्चा सतगुरु मिल गया। फिर एक दिन दादा भगवान से ज्ञान सुन रही थी जब ज्ञान सुन चुकी तो एक ने पूछा भगवान व्यवहार में कैसे रहे तो दादा भगवान ने उसको बहुत गालियाँ दी और कहा तुम इतना ज्ञान सुना और फिर व्यवहार क्यूं पूछा। वह दोनों घर चली गई। घर जाकर अजीब आनन्द का अनुभव किया तो एक दूसरे को फोन करती है। मुझे तो अन्दर आनन्द ही आनन्द है दूसरी ने कहा मुझे ऐसा ही अनुभव हो रहा

MAY ✲ THURSDAY 08

है। दादा भगवान ने उनके अज्ञान का पर्दा हटाकर आत्म साक्षात्कार करा दिया था। सामने से लगता था कुछ नहीं दिया परन्तु अन्दर मालामाल कर देते थे। जैसे भगवान कृष्ण ने सुदामा को सामने कुछ न दिया परन्तु जब वह घर आया तो मालामाल हो गया था। ऐसे ही दादा भगवान की वाणी से सबको आत्मसाक्षात्कार हो जाता था। फिर उसी भर्म से वो माया से उठकर अपनी आत्मा का निश्चय करते।

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

09 FRIDAY ✲ MAY 1997

दिल्ली में एक भटके हुए को राह दिखाना →

एक बार जब दादा लख्मी भगवान दिल्ली में थे तो दूर-2 से प्रेमी आकर सत्संग का लाभ लेते थे। उनमें से दो बहनें जो बहुत दूर रहती थी सुबह पांच बजे घर से निकली और सुबह की अमृत वाणी का रसपान करते। उनका बड़ा भाई बहुत बिगड़ा हुआ इनसान था। उनको जब मालूम पड़ा तो मन ही से बहुत ही गलत ख्याल करने लगा। एक दिन बहुत चोरी छिपे से दोनों बहनों का पीछा करता हुआ सत्संग में बैठ गया। उस दिन दादा की अमृतवाणी उसके दिल को छू गयी। वह अन्दर ही अन्दर अपने को धिक्कारने लगा। घर गया तो दादा भगवान के वचन हर वक्त हलचल मचा रहे थे। सारी रात नींद न आई, सुबह 5 बजे उठकर सत्संग के लिए चल पड़ा। रास्ते में किसी

10 SATURDAY ✲ MAY

बाग से दो फूल तोड़ लिए - सबसे पहले आकर हाल में बैठ गया। जब दादा लख्मी भगवान हाल में आकर बैठे तो दोनों फूल उनके कदमों में रख दिये और नमस्कार करके कहने लगा। प्रभु मुझे माफ कर दो मैंने बहुत पाप किये हैं। फिर सारी अपनी बात सुनाई। दादा भगवान ने उसको बोला जो तुम्हारे आँसू हैं वो ही सच्चे फूल हैं बाकी इन चोरी के [illegible] फूलों को लाने की कोई जरूरत न थी। इन बेचारों को क्यों अलग करके लाए हो। बस उस दिन से तो वह प्रेमी का तो जीवन ही बदल गया उसके सब घर वाले निहाल हो गए। उनकी माता का

11 SUN

उन दिनों गर्मी के कारण एक टाँग खराब थी लेकिन वह माता एक टाँग पर जो नाची जो देखने लायक था। ऐसे दादा पतित को पावन करने वाले।

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

MAY 97

ॐ

भगत करामते देखते थे →

भगवान की सबसे बड़ी करामात है जो जीव से ब्रह्म बनाते है। वह मन जिससे सारी दुनिया दुखी और परेशान है। जो किसी के वश में नही आता ऐसे मन को मोड़ देना, वश कर लेना, बड़े से बड़ी ~~करामात~~ करामात है। भगवान की कृपा से सबको दृश्य और अदृश्य फल मिलता है। यहाँ दो चार बाते लिखते है। एक प्रेमिन की बाँह में बहुत दर्द था। बाहे ऊपर नही उठती थी। उसने भगवान से कहा आप हाथ लगा दो मेरी बाहे ठीक हो जायेगी भगवान के हाथ लगाया उसी वक्त उसकी बाहे ठीक हो गई। दूसरी ने फिर रीस करके कहा मेरी भी बाँह में दर्द होता है। मुझे भी हाथ लगाओ पर उसे श्रद्धा नहीं थी तो फायदा क्या होगा। श्रद्धा वाला ही करामत देखता है। एक बार एक सत्संगी के घुटनो में बहुत दर्द रहता था वह लाठी पकड़कर चलते

थे एक दिन भगवान ने उसके दोनो घुटनो पर एक-एक हाथ रखा कहा लाठी फेंक दो। सीधा होकर चलो, उस दिन से वह सीधा होकर चलने लगी। लाठी की फिर कभी जरूरत न पड़ी। एक बार भगवान मथुरा में थे। एक लड़की जो भगवान के पास ज्ञान सुनने आती थी एक दिन कहने लगी कि मेरे पिताजी कहते है कि अगर तेरा गुरु भगवान है तो उसको बोलो लड़ाई बन्द कराए (क्योंकि उसका लड़का भी लड़ाई पर गया हुआ था। तो भगवान ने कहा मैं अभी इन्द्रागाँधी को फोन करता हूँ कि लड़ाई बन्द कर। तो थोड़े ही समय के बाद रेडियो में लड़ाई बन्द होने की खबर आई। वह आदमी हैरान हो गया और उसको विश्वास हो गया वह फल की टोकरी लेकर भगवान के पास आया तो भगवान ने कहा हम कुछ लेते नही। अपना फल वापस लेकर जाओ नहीं तो टैक्सी करके तुम्हारे घर पहुँचाना पड़ेगा।

JUN 97			
S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

ॐ

ॐ

14 WEDNESDAY ✲ MAY 1997

अन्दर का सं. भगवान को पहुँच जाता ⟶

एक बार एक स्त्री को मालूम पड़ा कि उसके पड़ोस में भगवान आने वाले है। उसने भगवान को देखा नहीं था। लेकिन नाम सुना तो उसने मन में सं० किया कि आज मैं दही बड़ा बनाऊँगी, अगर भगवान है तो अपने आप माँगकर खायेंगे। तो भगवान आये। सत्संग के बाद जब दोपहर का खाना खाने बैठे तो बोला दही बड़ा लेकर आओ तो उस प्रेमिन ने कहा भगवान दही बड़ा नहीं बनाया है तो भगवान ने कहा पड़ोस से लेकर आओ। वह स्त्री उठकर एकदम दही बड़ा लेकर आई और उसका भगवान में विश्वास आ गया। फिर जब भगवान उसके पास जाते तो वह प्रेम से दही बड़ा ही बनाती थी। दादा भगवान और लक्ष्मी भगवान का तो सं० हमेशा एक ही रहता। इधर दादा भगवान कहते हम भी यही कह रहे थे। भगवान कहते चलो इस प्रेमी के यहाँ चलते तो भगवान पहले ही

15 THURSDAY ✲ MAY

कहते थे रूम में सत्संग होता जो दादा भगवान कहते वो ही भगवान भी उस कमरे में कहते क्यों कि वो दो नहीं और आज तक एक ही है।

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

MAY 97

ॐ

अचानक पहुँचकर मुर्दे को जीवन देना →

एक स्त्री hospital में पड़ी थी। उसके घर में कोई सेवा करने वाला न था तो वह बहुत दुखी होती थी और ख्याल करके बीमार होती थी। एक दिन उसको लगा अब मैं बचूँगी नहीं। बहुत दिल हार चुकी थी। उसने सोचा घर जाकर ही शरीर छोड़ना है। उसकी लड़की उसको ले जाने के लिये आ गई। और सब सम्बन्धियों को telegram कर दिया कि इसके बचने की कोई आशा नहीं है। जब hospital से नाम भी कटवा दिया और बिल्कुल घर जाने को तैयार हुई, उसी वक्त दादा लक्ष्मी भगवान पहुँच गये। जैसे मुर्दे को अमृत मिल गया और वह फिर से जी उठी। भगवान को देखते ही वह हँसने लगी। उसके अन्दर अजीब खुशी और शक्ति भर गई। भगवान ने उसको जीवन दान दिया और प्यार, व ज्ञान से तृप्त किया फिर बोला तू इधर hospital में ही रह

MAY ✻ SATURDAY 17

यहाँ Dr. नर्स सब माँ हैं और तुम्हारी अच्छी तरह सेवा करेंगे और ऐसा कह कर फिर से उसका नाम लिखवाया। और उसके बाद वह जल्दी ही ठीक हो गई। और बहुत वर्ष जीवित रही।

SUN 18

✧ MUHARRAM ✧

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

19 MONDAY ✲ MAY 1997

अचानक पहुँचकर एक भगत को मुक्त करना →

एक बार अचानक भगवान चेम्बूर गये, वहाँ सत्संग किया और एक बीमार भगत को बुला भेजा और ज्ञान चर्चा शुरू की। वह भगत अपनी बीमारी भूलकर आ० के नशे में आ गया। प्रेम और ज्ञान का प्याला पी कर मुक्त हो गया। जब सत्संग पूरा हुआ कुछ प्रेमी उनको घर छोड़ कर आये घर पहुँच कर ही उनका शरीर शान्त हो गया। इस प्रकार अन्त समय आत्मा के निश्चय में शरीर छोड़कर वह मुक्त हो गई। भगवान नि० अन्तरयामी घट-2 वासी, ज्योति स्वरूप थे बिल्कुल आकाशवत खाली थे। सृष्टि के मालिक परमेश्वर को अपनी सृष्टि का क्या नहीं मालूम था यही कारण था, भक्तों की पुकार को एकदम जान लेते और दौड़-2 आते। उनके संकल्प और भावनायें पूरी करते

20 TUESDAY ✲ MAY

और उनके दुख दर्द मिटाते। नया जीवन देते। सारा जीवन सबकी भलाई में दे दिया। दिन रात ज्ञान यज्ञ शुरू किया। हर वक्त हरि के जो हाल के लिए उनका दरवाजा खुला था। स्वयं पूर्ण ब्रह्म होते हुए भी सबको आदर्श के लिए, लोक संग्रह के लिये हमेशा वैराग्य में रहे। एक आना भी अपने साथ नहीं लिया। उनका उठना बैठना चलना, बात करना सब भक्तों के लिए होता था। अपने लिए नहीं। भगवान की तो जितनी महिमा करे, कम है शब्द अशब्दी ब्रह्म को क्या गा सकेगा।

S		11	25	
M		12	26	
T		13	27	
W		14	28	
T	1	15	29	
F	2	16	30	
S	3	17	31	
S	4	18		
M	5	19		M
T	6	20		A
W	7	21		Y
T	8	22		
F	9	23		9
S	10	24		7

ॐ

ॐ

1997

MAY ✵ WEDNESDAY 21

भगवान भगत के वश में →

एक बार भगवान दूसरी जगह जा रहा था। सब सामान बन्द कर दिया था। बिल्कुल जाने को तैयार थे कि एक विधवा स्त्री रोने लगी - भगवान हमको छोड़ कर न जाओ। मैंने अभी तो ज्ञान सुना है। अभी ही तो मैं थोड़ा समझी हूँ और आप मुझको छोड़ कर जा रहे हो। भगवान ने उसी वक्त जाना कैंसिल कर दिया और सब सामान खुलवा दिया। भगवान भगत के वश में हैं। अपनी तो कोई इच्छा है ही नहीं तभी सबकी भलाई होती है।

MAY ✵ THURSDAY 22

✧BUDH PURNIMA✧

भगत की भावना पूरी करना →

एक प्रेमिन सुबह का नाश्ता भाव से भगवान के लिये बनाकर table पर बैठ गई कि अभी भगवान आयेंगे। उनका पूरा विश्वास था। कि मेरा सं० भगवान को पहुँचेगा। वह अन्दर ही अन्दर भगवान को पुकार रही थी। और इधर भगवान सत्संग पूरा होते ही भगत की भावना में खिंचे चले गये। किसी ने कहा भगवान नाश्ता तैयार है खाकर जाइये तो भगवान ने कहा वह नाश्ता लेकर बैठा है। वहाँ चलो। इसी प्रकार उसकी भावना पूरी हुई की।

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

ॐ

23 FRIDAY * MAY 1997

ज्ञान से जीवन बनाया →

भगवान का एक वचन लाख रुपये का है क्योंकि लाख रुपया भी जो काम न करे वह भगवान का वचन काम करता है एक सुइपरिन है। उसकी बहुत भारी ड्यूटी थी। कभी भी आधी रात को भी बुलावा आ जाता। वह बहुत थक जाता और तंग होता था। एक दिन भगवान का वचन सुना तू घोड़े सवार है, शरीर तुम्हारा घोड़ा है बस उसी दिन सवार कहने लगा कि अब मैं इस घोड़े से कितना भी काम लेता हूँ, यह थकता नहीं और सचमुच वह बहुत काम करता था। भगवान का एक वचन है कि हर हाल में शुक्राना करो। एक आँख चली जाये तो भी शुक्राना करो कि एक तो बची है। दाता लच्छमी भगवान दिन में कहीं जा रहे थे। वहाँ एक लड़की सोडा की बोतल खोल रही थी तो वो बूच जाकर आँख में पड़ा उसी समय आँख

24 SATURDAY * MAY

निकल गई। इतनी पीड़ा में भी उस लड़की ने बड़े जोर से कहा शुक्र है एक आँख बच गई।

एक दिन भगवान ने कहा कि तुमको सुबह पेशाब ठीक आये तो भी भगवान का शुक्राना करना तो एक आदमी - यह बात सुनकर कहने लगा इसमें शुक्राना करने की कौन सी बात है - फिर वह दिल्ली चला गया। वहाँ जाकर उसको पथरी की बीमारी हो गई और पेशाब बन्द हो गया। वह बहुत दर्द में छटपटाने लगा और उसको कदर पड़ी कि भगवान क्यों कहते हैं। कि पेशाब जाओ तो भी शुक्राना मानो, फिर जब ठीक हो गया तो भगवान

25 SUN

से क्षमा याचना की और हमेशा के लिये सीख गया।

एक प्रेमिन का काफी रुपया किसी के पास था। उसे चिन्ता लग गयी अब क्या करें भगवान से पूछा - भगवान ने कहा Be - Still शान्त हो जाओ. वह शान्त हो गई। थोड़े दिन के बाद आते ही वो आदमी पैसा देकर चला गया।

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

MAY 97

ॐ

ॐ

1997

MAY ✻ MONDAY 26

जनरल-कर्नल को ज्ञान देना →

भगवान दिल्ली में मिलिटरी कोपिल में एक सत्संगी के पास जाकर रहते थे उस Area में बिना Permission और Signature के सिवा कोई भी आ नहीं सकता था परन्तु भ० वहाँ जाकर रहते तो उनकी कृपा से पहरेदार भी शांत हो जाते और किसी को भी आने जाने में तकलीफ न होती थी भगवान का प्रेम ही ऐसा है जो सब कायदा कानून तोड़ देता है। वहाँ एक जनरल भी रहता था। वह भगवान का ज्ञान बड़ी श्रद्धा व प्रेम से सुनता था। वह जनरल जब रास्ते में चलता था तो सब मिलिट्री मैन उसको सैलूट करते थे। भगवान दादा ने उसे कहा बड़ा आदमी तुम नहीं है जो तुमको सैलूट करते है पर बड़ा तो तुम तब है जब तुम किसीके आगे झुक सके। एक दिन दादा भगवान को जनरल ने घर बुलाया वहाँ उसके अपने मेहमान भी आ गये, वह उलझन में पड़ गया

MAY ✻ TUESDAY 27

कि भगवान का ज्ञान न सुन सकूँगा। दादा लख्मी भगवान आ गये पर वह उनकी खुशामदी में पूरा रहा। पर उसका दिल भी नहीं लग रहा था आखिर जब आया उनको पूरा करके तो दादा भगवान ने speech चलाई - Who is brave man. Who can say no. तो इस बात से सीख गया। क्योंकि यह बात सबसे बड़ी है जो लिहाज करके ~~इस~~ मनुष्य अपनी सच की शक्ति खो बैठता है।

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

ॐ

28 WEDNESDAY * MAY

1997

आँखों के Dr. को ज्ञान देना →

एक बार भगवान आँखो के बड़े Dr. से मिले। उस Dr. ने दादा भगवान को बताया कि उसने हजारों की आँखे ठीक की है। तो भगवान ने पूछा क्या कभी ऐसा हुआ किसी की आँखों में थोड़ी रोशनी थी, तुम्हारे operation करने से वो भी चली गई तो उसने कहा ऐसा भी होता है कि किसी की एक आँख ठीक होती operation करने से उसकी दोनों आँखे चली जाती है तो भगवान ने कहा फिर उनको सूरदास भी तुम बनाते होगे। यह बात सुनकर डा० हैरान हो गया और कहने लगा कि ऐसी बात तो मैंने कभी नही सुनी न सोची। अभी मुझको विश्वास हो गया कि भगवान ही करन-करावन हार है मैं कुछ भी नही।

29 THURSDAY * MAY

बीमारी के समय →

इस प्रकार 30-35 वर्ष तक लगातार ज्ञान यज्ञ चलता रहा। भगवान ने अपने को छिपाकर रखा, प्रकट होने नही दिया। न कोई नाम, न आश्रम, न पुस्तक, न चिन्ह न अखबार में बात निकाला। न किसी से पाई पैसा लेना। अपने को बिलकुल छिपाकर रखा तो भी वह छिप न सका। उनका ज्ञान प्रकाश संसार में चारों दिशाओं में फैल गया। सूर्य को कौन हाथ देकर ढक सकता है भ० के ज्ञान ने हमको शक्ति दी, बीमारियो से छुड़ाया उनका प्रकाश घर-2 में फैल गया और धर्म की स्थापना हुई। भगवान निष्काम यज्ञ में इतने तल्लीन थे जो अपने शरीर की तो परवाह ही नही थी। कभी खाने में नमक ज्यास्ती मिला तो कहते जुलाब की जरूरत थी। मीठे खट्टे मिले तो कहेगो पेट को जरूरत है। प्रेमियों के उद्धार के कारण शहर-2

MAY 97			
S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	31
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

ॐ

ॐ

भी जाना, वहाँ पानी गलत मिलना पर ध्यान न होवे - कहाँ मच्छर कहाँ गर्मी, कहाँ अधिक सर्दी।

एक समय ऐसी लीला हुई जो पुना के शहर में लू चल रही थी। दादा लक्ष्मी भगवान वही थे। और दादा के शरीर में हर्बीस की बीमारी हो गई। चेहरा सूख गया। इस बीमारी में बहुत दर्द होता है। परन्तु भगवान एक दम शान्त थे और उन्होंने यह भी नहीं कहा Dr. को बुलाओ परन्तु उनकी बिगड़ती हालत को देखकर भगतों ने Dr. को बुलाया। डा० ने आकर पुछा आप कैसे है भगवान ने कहा- I am better than before. यह बात सुनकर Dr. हैरान हो गया और चेक करके दवाइयाँ दी और जब-2 भी Dr. आता भगवान कहते I am better than before. कभी बीमारी का नाम नहीं और बाद में भी जो Dr. उनमें श्रद्धा प्रेम रखते उनको भी भगवान कहते, तुम मुझे Patient न समझना - मैं जो हूँ सो हूँ। तुम मेरा Patient है तुम सीखने के लिये आना।

जब बीमारी का समाचार भगतों को मिला तो बहुत दूर-2 से भगत दर्शन के लिए आने लगे कई एक दो प्रेमी को बहुत इच्छा थी भगवान की सेवा करे पर दादा भगवान ने सब को मना कर दिया मेरी सेवा के लिये इधर किसी को न रखना सबको भेज दो - कोई भी इधर न रहे और न ही मुझे किसी की सेवा चाहिये। क्योंकि भगवान पहले ही एक दृष्टांत सुनाया करते थे कि ——

एक बार एक गुरु कीचड़ में गिर गया तो उसके शिष्य उसको निकालने आये तो गुरु ने निकालने से इंकार कर दिया। कहा कि तुम्हारी सेवा मुझे नहीं चाहिये। तुमको अहंकार आ जायेगा तो सारा

ज्ञान तुम्हारा पानी हो जायेगा। मुझे राह चलते कोई भी निकाल देगा। मतलब भगवान ने सेवा कबूल न किया।

भगवान लक्ष्मी ने सब भक्तों को वापस भेज दिया और जब दो ~~बच्चे~~ लड़कियाँ रोने लगी कि हम वापिस नहीं जायेंगी तो भगवान ने उनको अपने

ॐ

S	1	15	29	
M	2	16	30	
T	3	17		
W	4	18		
T	5	19		
F	6	20		
S	7	21		
S	8	22		
M	9	23		J
T	10	24		U
W	11	25		N
T	12	26		
F	13	27		9
S	14	28		7

ॐ

02 MONDAY ✲ JUNE 1997

पास रहने दिया । बीमारी की हालत में Dr. बोलते आप न बोलो पर भगवान निष्कामी ने Dr. को कहा तू मेरे को सच बोलने से रोक नहीं सकता है और उठकर इतनी गर्जना की आत्मा की, जो सबके कपाट खुल गये । बम्बई में कई प्रेमी उन्हें देखने जाते । दादा भ० को Dr. की मनाही होते हुए भी प्रेम से वाणी चलाते तुम मेरे को देह समझते हो या आत्मा ? क्या देखने आये हो ।

एक दिन बड़ी ही Serious हालत हो गई । भगत आँखें डालकर देखने लगे । दादा भगवान ने वो गर्जना की, सब शान्त हो गये । फिर लक्ष्मी भगवान ने देखा कि सब बड़े Serious हो बैठे हैं । आत्मा तो एक रस है तो सबको प्रेम से एक एक पन्ने पर जो-जो जिसका भाव का भजन था लिखकर दिया कि आप गाओ । सबने बड़े प्रेम से गाया । सब आत्मा के

03 TUESDAY ✲ JUNE

प्रेम के नशे में आ गये । भगवान की शुरू से ही आदत थी सबको high temper नीचे करके प्रेम से एकरसता में ला देते । यही तो दादा भगवान की खातिरी थी ।

एक आदमी को तो ज्ञान ही पूना में उस समय लगा । क्योंकि वह हमेशा समझता था कि दादा लक्ष्मी भगवान तो घूमते फिरते हैं - ये इतने पूर्ण नहीं हैं । पर बीमारी की अवस्था में उनको पूर्ण ज्ञानी देखने का समय मिल गया वह कमरे में एकान्त में दादा भ० लेट जाते, वह पंखा लगाता कि मक्खी न आये । वह दादा भगवान को शान्त देखकर हैरान हो गया कि बीमारी में इतनी शान्ति कैसे है । उसने कहा दादा भगवान को इतना समय न जाना पर आज बीमारी में मेरा सिर झुकाया । भगवान दूसरे कमरे में सत्संग भी करते - सब का मन लेते सबको शान्त करते ।

एक दिन पूना में इसी समय में एक सत्संगयानी ने दादा भगवान से कहा जब आत्मा ही है तो शुक्राना कौन माने किस का माने ।

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

ॐ

1997 — JUNE * WEDNESDAY 04

दादा भगवान ने बड़े ही करूणामयी नेत्रों से भरकर कहा कि तुम भोला कहके और देह को ही भगवान मानने लगी। देह का अहसास भूलेगी जब घट-घट वासी को देखेगी। एक-2 चीज का शुक्राना मानना है नहीं तो देह न भूलेगी और बीमारी में इस देह की बहुत कदर पड़ती है। फिर उसको समझ आयी और वह शान्त हुई।

दादा भगवान के भक्तों की वजह से जीवन मिला जो इतनी बड़ी हालत में शरीर की सौगात फिर सबको 5 वर्ष मिली, जिसमें कितने प्रश्न संशय निवृत हुए, कितनों का जीवन बना। दादा भगवान के पलंग पर बैठने से ही कईयों का उद्धार हुआ। कितनों ने बाद में पहचाना सच्चाई तो आदि से थी पर लोगों की आदतें है हालत में ही बलाजानी को परखते है कि इसको कीलों में लगा कर देखे और देखे कि इसके चेहरे पर शिकन आती है दादा भगवान की एकरसता, प्रेम, मौन, समानता व सरलता भरी जीवन ने भक्तों को जाग्रति दी

JUNE * THURSDAY 05

कई सपने से जागे। दादा भगवान का शरीर जो एक बार बिगड़ा तो फिर पूरा ठीक न हुआ 5 वर्ष ऐसा ही चला। उनकी बीमारी से भी सबने बहुत सीखा। कैसे वह इतने कष्ट में एकरस रहते थे। आत्मा bodyless है, ज्योति स्वरूप है शरीर में रोग है पर चेहरा सूर्य की तरह चमकता है। तकलीफ में भी वह सेवा करते रहते। I may die you may live, प्रत्यक्ष प्रमाण था। उनके vibration इतने strong थे जो कि उनके पास कोई मौन में भी बैठता तो thoughtless हो जाता। भगवान कहते यह शरीर एक दीवार है। जैसे दीवार को हथौड़ा लगाने कुछ नहीं होता, ऐसे शरीर को भी कुछ नहीं होता।

No death, No Sick is in Atma, यह उनका Motto था। खास उन दिनों में जैसे कहते, वैसे उनके जीवन में देखा। हम देखते कि गर्मी-2 में हाथ जलते थे पर उनके चेहरे पर एक भी किसी प्रकार की लकीर न होती, बिल्कुल शान्त होते। कभी-2 ऐसा भी समय हुआ जो पूरी body में shivering

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

JUL 97

ॐ

ॐ

06 FRIDAY ✲ JUNE

1997

हो जाती, हाथ कांपते और दादा भगवान कुछ न कहते - शांत, मौन, एक रस। एक बार गर्म-2 चाय उनके उनके ऊपर गिर गई, परन्तु उनके मुख से कोई भी आवाज न निकली। जिसके हाथ से गिरी वह रोने लगी। भगवान ने उसे भी मुस्कराके कहा - तुम्हारा क्या कसूर है सब लीला है। दूसरा भगत गुस्से में आ गया ये क्या हुआ दादा भगवान शांत, मौन, चुपचाप उठ गये, कपड़े बदलने गये किसी ने दवाई लगा दी जैसे कुछ हुआ ही नहीं। भगवान ने शरीर को बिलकुल भक्तों पर छोड़ दिया। वो पानी पिलाते तो पीते, खाना खिलाते तो खा लेते। जैसे भगवान को भक्त चलाते, वैसे ही चलते थे। उनको कोई रोक नहीं सकता था। वह 4-5 घंटा भी बात करते। भगवान की करुणा होती थी कि यह आज ही बात समझ ले। शरीर से बेपरवाही भी थी, सर्व समर्थ भी थे। जैसी उनमें कोई भावना श्रद्धा रखता, वैसा ही फल पाता। एक

07 SATURDAY ✲ JUNE

बार किसी ने भगवान को दवाई खिलाई। 5 मिनट के बाद दूसरी आई वह भी वही दवाई खिलाने लगी तो तीसरी एकदम बोल पड़ी - अभी तो यह दवाई दी है तो वह रुक गई - परन्तु दादा भगवान तो बिलकुल शांत और मौन थे। भगवान ने बीमारी के बाद शरीर को कभी नमक नहीं दिया क्योंकि शरीर के लिये नमक ठीक न था। एक दिन भगवान खाना खा रहे थे तो एक नया भगत आया था उसने देखा भगवान बड़े स्वाद से खाना खा रहे हैं। तो उनके मन में [illegible] आया यह भी तो रस लेते हैं परन्तु जब उसको मालूम पड़ा, कि खाने में नमक ही नहीं है। भगवान तो सब चीज में अपना स्वाद डालते हैं तो उसको अपने ऊपर ही

8 SUN

शर्म आ गई। भगवान को देख कर कितने ही अपनी तकलीफ भूल जाते। उनको भी हिम्मत आ जाती वे कहते भगवान के शरीर को इतना कष्ट है वह कभी कुछ नहीं कहते, वैसे एक रस हैं। तो हम भी क्यों शरीर की बात करें। हम भी क्यूँ न एक रस रहें। कभी कोई भगत सीढ़ियाँ न चढ़ सकता और नीचे से ही

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

ॐ

भगवान को पुकारता तो भगवान के शरीर में इतनी तकलीफ होते हुए भी एकदम नीचे उतरकर उनको ज्ञान देकर, प्रेम देकर तृप्त करते। कभी कोई भगत श्रद्धा व प्रेम से भगवान को घर जाने के लिए आग्रह करता तो भी भगवान उनकी भावना पूरी करते उनको कुर्सी पर बैठा कर चढ़ाया व उतारा जाता था और कुर्सी उठाते व चढ़ाते झटका भी लगता तो भ० भगत के लिये भी सब करते अपने को जला-2 कर प्रकाश सबको दिया ऐसा दो प्रेमी खास आते थे। कि दादा भगवान को कार में हवा खिलाने के लिए ले जाये, कभी कहते घूमने ले जाये - भ० दादा बड़े प्रेम व करुणा से कहते मुझे कुछ नहीं होना। कोई प्रेमी कहता हमारे शहर में चलो, वहाँ पानी की सुविधा न होती दादा भगवान फिर भी कहते हम चल सकते है पानी नही तो सोडा भी लेंगे, मतलब हर बात के लिए अपने को तैयार रखते। अपनी इस नम्रता व निष्ठुरता ने सजगता ने सब को जीवन

दिया हमेशा उत्साहित रहते कभी हालत न दिखी उनके चेहरे पर देखने वाले को डर होता दादा भगवान के शरीर के लिये - सोचते पर दादा भगवान तो शरीर से असंगत हुए बेपरवाह बादशाह होकर रहे। कुर्बान जाऊँ ऐसे ब्रह्मज्ञानी पर बाकी तो शब्द नहीं जो वर्णन कर सके। अवर्णनीय का क्या वर्णन।

S		13 27
M		14 28
T	1	15 29
W	2	16 30
T	3	17 31
F	4	18
S	5	19
S	6	20
M	7	21
T	8	22
W	9	23
T	10	24
F	11	25
S	12	26

JUL 97

ॐ

ॐ

बीमारी का कारण →

कितनो के मन में यह सवाल उठता कि ब्रह्मज्ञानी को कष्ट क्यों आता है वो तो बिल्कुल प्योर व निर्दोष है उनका तो सारा जीवन सर्व की ही भलाई में ही जाता है शास्त्रों में ऐसा लिखा होता है कि शिष्यों की भूल, शिष्यों के पाप गुरु को भोगने पड़ते है। या कोई सन्त ऐसा बोलते है दादा भगवान पहले इस बात को नही मानते थे कहते थे गुरु की करनी, गुरु भरेगा, चेले की करनी चेला फिर जब देखा चेला तो गुरु के संग रहता है वो भूल करेगा तो जरूर भोगना गुरु को पड़ेगा। शिष्य गलत — से गलत खाना बनाके गुरु को खिलायेंगे तो जरूर गुरु के शरीर में effect होगा। आत्मा में तो कोई बात नही क्योकि शिष्य ने शरण लिया गुरु की तो उसका भार गुरु के ऊपर होगा जैसे plane में जो भी बैठे है उनकी रक्षा

का भार Pilot के ऊपर है। टेक्सी में कोई बैठता है। उसका भार टेक्सी driver पर होता है भगवान ने एक दिन करुणामयी आवाज में सबको बताया कि या तो तुम भगत ही न बनो जो भगत होता है तो पूरी तरह से surrender करे। अपने पापों से ऊपर हो जाओ। दादा भगवान का शरीर इसी वजह से खराब नही तो 78 वर्ष तक उनका शरीर बिल्कुल सुन्दर सत था। दादा भगवान कहते इतने 25 गिनी देकर अमरीका में शरीर दिखाया है तो उसने कहा तुम्हारा शरीर ऐसा तन्दुरुस्त है जो अपनी वजह से सारी उम्र कष्ट न होगा। बाकी कोई accident आये तो और बात है। इतना ठीक शरीर भक्तों ने मोह में खराब कर दिया इसका एक खास कारण यह है कि भगवान को जो शरीर करके देखते है व शरीर से मोह करते है उनको नही जानते है। उससे ब्रह्मज्ञानी का शरीर बहुत खराब होता है बहुत विषयी लोग उनके शरीर को छियेंगे प्यार लेंगे पर विकार न छोड़ेंगे - इसलिये Christ ने कहा who has touch me. or why do you see me. Lord if you do not practice upon my teachings.

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
29	30												

JUN 97

ॐ

ॐ

भगवान का लखनऊ जाना →

मोह से खिलोने से भी शरीर खराब होता है भगवान का ध्यान सुनकर भी मन दुखी हो जाना या शिष्यों का आपस में राग द्वेष करना यह भी भगवान के शरीर को खराब करता है क्योंकि यह सब ने सुना है कि रुकमणी ने राधा को गर्म-२ दूध पिलाया तो कृष्ण के पाँव में छाले पड़ गये। "सतगुरु सिख की आत्मा, सिख सतगुरु की देह"। इतना करीब का सम्बन्ध है तो शिष्य की गलतियों की सजा सतगुरु को देखनी पड़ती है क्योंकि योग क्षेम का भार गुरु उठाता है। फिर भगवान कुछ भक्तों के आग्रह पर लखनऊ व उदयपुर गए। भगवान का शरीर उस time बहुत नाजुक हो चुका था कुछ भक्तों ने मना किया - भगवान आप नहीं जाओ पर अकर्ता भगवान भक्तों को कैसे दोष दे। कहाँ मुझे वहाँ की धरती पुकार रही है भगवान से किसी ने वायदा किया था कि आप लखनऊ जरूर आयेंगे

भगवान भक्त का वचन रखता था। इस बात से हमको अनुभव मिलता है कि हम ~~भक्त~~ भगवान को कभी मजबूर न करें। हम उनकी रजा पर चले। कौन कहे साहब को यूं कर यूं न करो। हम उनके वचनों पर मरके मिटे न कि मजबूर करें। कुछ दिन लखनऊ में ज्ञान यज्ञ चला, फिर भगवान उदयपुर चले, वह छोटा सा गाँव है न वहाँ पर बिजली पूरी थी। मच्छर और गर्मी। पानी वहां पर सोर दिन में आधा घंटा आता था इतनी तकलीफ में भगवान वहाँ रहे। भगवान पर भगवान की तकलीफ दिन प्रति दिन बढ़ती गई। वहाँ पर अच्छे डाक्टर का भी बन्दोबस्त न था। परन्तु भगवान बिल्कुल मौन शांत थे वहां

भी प्रेमी दूर-२ से आकर जीवन सफल बनाते रहे यहाँ रुद्रपुर में दाया भगवान के पास नाई मुसलमान बाल काटने आता था। कभी-२ भगवान आराम में लेटे रहते वो बाहर ३ घण्टे भी बैठ जाता। उसे कहते, जाओ आज कुछ और काम करके आओ - वो कहता नहीं पहले खुदा के दर्शन करूंगा पीछे कहीं जाऊंगा

JUL 97
S 13 27
M 14 28
T 1 15 29
W 2 16 30
T 3 17 31
F 4 18
S 5 19
S 6 20
M 7 21
T 8 22
W 9 23
T 10 24
F 11 25
S 12 26

ॐ

ॐ

16 MONDAY ✻ JUNE

1997

एक बार उसके दुकान पर गए तो वह मस्ती में भजन गा रहा था। "जब अपने ही घर में खुदाई है व तू अपने घर में जरूर आ जा"। कहता था भगवान को देखकर एक अजीब व अलौकिक आनंद का अनुभव करता हूँ। यही बात है जो बलबानी के घर में जात पात का भेद तो है ही नहीं। जहाँ सच है वहाँ रहता है भगवान उदयपुर में बहुत कम बात करते परन्तु उनकी मौन से भी अन्दर ही अन्दर कितनो को ज्ञान मिलता था। वो अनुभव करते थे कि हमने भगवान से बात की। भगवान लक्ष्मी दिन भर ज्ञान यज्ञ चलाते सब भक्त तृप्त हो जाते।

एक दिन दादा भगवान आधी रात को करीब दो बजे उठकर भक्तों को उठाकर ज्ञान सुनाने लगे। इतनी गम्भीर वाणी चली कि सबको नशा चढ़ गया। भगवान ने कहा तू भगवान है। भगवान से ऊपर क्या है जो तू बनना चाहता है कुछ भी बनेगा तो भगवान से कम ही होगा इस तरह कुछ समय अमृत वर्षा की

17 TUESDAY ✻ JUNE

भगवान के ज्ञान की अन्तिम ज्ञान वर्षा थी दादा भगवान के शरीर की हालत दिन प्रति दिन बढ़ती गई। एक दिन भगवान ने कहा अपनी जो भावना हो पूरी कर लो तो एक भगत ने अपनी भावना पूरी करने के लिए भगवान को नए कपड़े पहनाये। उनका संकेत सुनकर भी किसी ने समझा किसी ने नहीं समझा। जब हालत बहुत खराब हो गई तो भ० को लखनऊ लाया गया। भगवान लक्ष्मी ने एक को पहले ही लखनऊ भेज दिया था। कि वहाँ पर स्टेशन पर एम्बुलेंस लेकर आए। लखनऊ लाने के समय भ० दादा के शरीर में बहुत कष्ट हुआ रास्ते बहुत खराब था। गाड़ी बार-2 बहुत उछलती थी जिससे उनके शरीर में तकलीफ होती थी भगवान लक्ष्मी ने उनको झटको से बचाने के लिए गोद में लिटाया। heart बहुत weak हो चुकी थी सांस लेने में काफी तकलीफ हो रही थी परन्तु oxygen का भी इन्तजाम न था। इस प्रकार आखिर लखनऊ आ पहुँचे पर आश्चर्य यह था कि भगवान शान्त थे उनके फेफड़ों में खून इकट्ठा हो गया था। डाक्टर भी हैरान

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

ॐ

1997

JUNE ✡ WEDNESDAY 18

हो रहा था कि वो इतने शांत कैसे है उनके यह वचन याद आए, कहते थे तुमको आत्मा में आना मुश्किल लगता है। मुझे देह में आना मुश्किल लगता है।

धन्य-2 गुरुदेव चारों तरफ से कोटि-2 प्रणाम।

फिर ऐसी हालत आई कि भगवान का शरीर बेसुध हो गया बाहर की बिल्कुल सुध-बुध न रही। सब एक दम गुम हो गये कि क्या होगा। फिर उसी वक्त उठकर बैठ गए और चुटकला सुनाकर सबको हँसा दिया। फिर ब्रह्म ही ब्रह्म की बात की। यह भगवान के अन्तिम शब्द थे। उनकी जितनी महिमा करें कम है। शरीर छोड़ते-2 भी सबको हँसा दिया। धन्य है भगवान दादा। इस प्रकार वह ब्रह्म-2 कहते शान्त हो गये और शरीर भी शांत हो गया। इससे पहले कभी भगवान लक्ष्मी जिनको सब खुद बुलाते कमरे में जाते तो दादा भगवान को कहते आप कहाँ हैं। दादा भगवान कहते तेरे में ही हूँ। इतनी सब लीला के साथ भगवान लक्ष्मी सारा दिन ध्यान यज्ञ चलाते रहे।

JUNE ✡ THURSDAY 19

शरीर शांत होने पर दादा भगवान के शरीर को बर्फ पर लिटाया गया ताकि दूर-2 से आने वाले भगत उनका दर्शन कर सके। भक्तों ने अपनी भावना अनुसार उनको फूलों से सजाया। एक भगत ने बताया उसके सिर में जबरदस्त दर्द रहता था। बहुत इलाज करने पर भी ठीक न होता था। दादा भगवान का शरीर शांत होने पर उसने उनके पाँव की धूल लेकर सिर पर लगाई तो उसका दर्द हमेशा के लिए ठीक हो गया। भगत दूर-2 से आने लगे। भगवान लक्ष्मी रात दिन ध्यान, ओम की धुनि लगाते रहे। भगत आँखों में आँसुओं का गुबार लेकर आते परन्तु भगवान ने ऐसा सतसंग किया जो किसी को भी रोने नहीं दिया। अगर थोड़ी भी ढील किसी को रोने की दी होती तो शायद आँसुओं का समुन्द्र उमड़ पड़ता। भगवान लक्ष्मी ने कहा रोने का क्या काम है। भगवान दादा ने तुमको क्या नहीं दिया है। शुक्राने गाओ। फिर सब शुक्राने गाने लगे। भ०

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

JUL 97

ॐ

20 FRIDAY * JUNE

लक्ष्मी ने भी कहा आज हमारी शादी है जो 35 वर्ष की मुलाकात आज अच्छी तरह निभ गई। सच्ची शादी तो आज है और बड़े जोर से भजन गाए। वाह भगवान वाह, धन्य-2 अमर ज्योति को नमस्कार। भगवान ने किसी को भी नीचे नहीं आने दिया। लखनऊ में ही दादा का अंतिम संस्कार हुआ। बहुत से भगत पूना, दिल्ली से पहुँच गए। दादा भगवान के शरीर के सम्बन्धियों को भी खबर मिली पर उनको किसी को भी टिकट नहीं मिली, उनमें से कोई न पहुँचा। यह भी नि० का अजीब खेल है। भगवान भक्तों के थे तो वो कैसे पहुँचते। हम भक्तों के, भक्त हमारे - वाली बात सही निकली जब दादा भगवान के शरीर को वैन की छत पर रखा जाने वाला था, एक भगत के मन में आया भगवान का शरीर वैन के अन्दर रखा जाये। उसने driver को पैसे देकर रिझाना चाहा, परन्तु driver ने उसको घूर कर देखा और उसकी बात नहीं मानी

21 SATURDAY * JUNE

उसने अनुभव किया कि भगवान दादा अब भी उस रूप में सुझा रहे हैं कि Money is useless तो तुम money की बात क्यों करते हो। भगवान दादा को माया मंजूर न थी। दादा भगवान के बाद हम देख रहे हैं उनकी ही ज्योति करोड़ों सूरज की तरह चमक लक्ष्मी मं० के रूप में हम सब को प्रकाश का जीवन दे रही है।

22 SUN

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

35 वर्ष
शादी
भगवान
न ने किसी
दादा का
ली से
या को
नहीं
का अजीब
पूछते।
निकली
पर रखा
भगवान
परिवार को
को चूर
धनी मानी
सब भी
useless
भगवान
बाद
सूरज
सब

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

भगवान लक्ष्मी द्वारा दादा भगवान की महिमा ⟶

दादा भगवान पुरुष रूप होकर भी स्त्री के दर्द को जानते थे। और ज्ञान में भी सोचते थे कि कैसे उसको छुटकारा मिले। इसलिये मर्द लोग बोलते थे कि मर्द होकर भी कैसे मर्द को गाली देता है। तो भगवान कहते थे को तो स्वयं भ० है शरीर से ऊपर है तो क्यों नही गाली देंगे। कोई तो अपना जीवन निर्विकारी बनाकर औरों को जीवन देगा। दूसरा साहूकार को भी जानते थे तो दहेज के लिए सिन्ध में बहुत लोग अपने बहुओं को जलाके मारते थे। तो जुल्म औरतों के ऊपर है वो कैसे भी हटे। दादा भगवान तो पहले भी उदार चित होकर घूमना घुमाना खर्चना। रहनी राजाई जैसी - तो सत्संग में भी कोई गरीब या विधवा आती थी तो उनका दिल पिघल जाता था तो उसको कैसे भी दिल का सच्चा प्यार करके उसका सब दुख दर्द दूर करके पीछे ब्रह्म ज्ञान में

ऊपर उठाऊँ। क्योंकि माया तो सब को होती है। पर वो अपने बच्चो में पूरा time देते है। पर उनकी हिम्मत थी जो कितने ही दुखी दिल को आराम देकर बोलते थे. हम तुम्हारे बेटे जैसे है, जैसा भी बोले हम तुम्हारे लिए सब करेंगे मैं मरूं तुम जीओ नही तो बाकी जीवन पशु समान है ऐसा निष्काम यज्ञ किया जो उनका बीज फलता रहा है। सबको जीना सिखा दिया अमर बनाया। अभी किसी को मरने का भी दिल नही है पर जीवन बलीदान कोई पूरी तरह करेगा तो फिर उसको जीवन मिलेगा।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

JUL 97

ॐ

ॐ

25 WEDNESDAY ✲ JUNE 1997

दादा भगवान की दिव्यता और महिमा का एक प्रेमी का श्रद्धा पूर्वक गुणगान करना →

देख तेरे सत्संग की महिमा, मैं हो गई हैरान, कितने भगत बने भगवान। भगवान यह अनोखा प्रत्यक्ष प्रमाण है हमारी आँखो के सामने कि पहली बार जब मैं शरणागति आज से 10-12 साल पहले आया तो उस समय 12 व्यक्ति ही सत्संग में आये हुए थे। इसलिए दादा भगवान साधारण वेश में लगे पर पूजनीय थी। आज ऐसे सत्संग और भक्तों के विशाल समूह को देखकर दादा भगवान और आपके निष्काम कर्म योग महान तपस्या और आदर्श जीवन की याद आती है। जैसे फूल बगीचे में खिलता है तो अपनी महक से चारों दिशाओं को भर देता है सूरज जब पहाड़ो से निकलता है तो अपनी तेज मयी किरणों से

26 THURSDAY ✲ JUNE

सबको अलौकिक कर देता है दादा भगवान ने तेज से सबको मुग्ध कर दी करुणा जैसे सबके हृदय को हर लिया ऐसी महान विभूतियो ने पहली झलक में ही मुझे विशेष रूप से आकर्षित किया। साधारण वेष की प्रसन्नता एक साक्षात उपदेश था। दादा भ० की शान्ति का कोई अंत न था वे एक बहते हुए झरने की तरह थे। उस शान्ति के साथ अपार प्रेम का सागर भरा हुआ था। वे करुणा निधान थे। भक्तो के साथ तो उनका व्यवहार बिलकुल मित्रों जैसा था कोई भी कैसे भी समय — चाहे वो आता है या परिवार को लेकर उनके पास आता तो दादा भगवान बड़े ही आत्मीयता से और एक सच्चे मित्र की तरह उस समस्या को सुलझा देते कुछ ऐसे भी लोग थे जो जुआरी शराबी, पर ज्ञान में आने पर उन्हें दादा भगवान प्रेम की सदृष्टि से देखते और उसको सही रास्ते पर लाने के लिये सर्व समय देने को तैयार हो जाते।

दादा भगवान की महिमा प्रभावशाली भक्ति पर मैं आशिक हो गया। एक सच्चे ब्रह्मज्ञानी जिसकी

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

ॐ

1997

JUNE ✲ FRIDAY 27

मुझे खोज की मिल गए। निर्विकार, निर्मल सुन्दर, सरल जैसे अन्दर वैसे बाहर। साधारण परन्तु महान। कभी कोई चमत्कार न दिखाने वाले पर अपने आप में स्वयं चमत्कारी ऐसी महान विभूति को पाकर लगा मैं धन्य हो गया।
दादा भगवान की वाणी में जादू था वे भक्तों के उद्धार में भाव से उपदेश करते थे। सभी भक्त जन चाहे कहते कि दादा भगवान ने मेरी शंकाओं का समाधान किया है। और मेरी ही बात कर रहे है। दादा भगवान कहते प्रकृति की गोद में तुमको जल्दी ज्ञान लगेगा। इसलिये मैथरान, पूना नैनीताल हरिद्वार दिल्ली आदि स्थानों पर लेकर जाते। जंगल में मंगल हो जाता। 70-80 भक्तों का भोजन हमारे भ० अपने हाथों से परोसते। वही प्यार से खिलाते, यहाँ तक कि प्रातः काल उठकर स्वयं पानी के मटके भरते झाड़ू आदि की सेवा करने से भी न हिचकिचाते। मैथरान में आपके साथ की वह प्यार भरी मधुर स्मृतियाँ भक्तों के हृदय में सदैव ताजा रहेगी। दादा भगवान

JUNE ✲ SATURDAY 28

एक धनी परिवार में हुए। Born with the silver spoon in mouth. तो बहुत ठीक होगा। पढ़ने लिखने के बाद अपने पारिवारिक धन्धे हीरे-जवाहरातों का व्यापार सम्भालते पर जवानी में ही भीतर वैराग्य होते होते रही। यह संसार सब परिवर्तन जैसे लगने लगा। कंकड़ जिसके हाथ में हो उसके हाथ में हीरे आ जाये तो वो कंकड़ को वहीं छोड़ देता है हर वक्त उनकी आँखे मस्ती में डूबी रहती। उनके चेहरे पर अलौकिक नूर चमकता था। एक अजीब ईश्वरीय मस्ती की "नाम खुमारी"। भगवान अपनी श्रद्धा सहित नित्य नया भजन बनाकर गुरु जाकर सुनाते थे। उनकी श्रद्धा भावना प्रेम देख कर गुरुदेव बहुत प्रसन्न हुए कहा कि तू जिस श्रद्धा

SUN 29

निर्भयता से झुका है, सारा संसार तुझको झुकेगा और यह गुरु वाक्यम् सत्यम् का प्रत्यक्ष प्रमाण आज हम अपनी आँखों से देख रहे है। दादा भगवान के सम्पर्क में जो एक बार आ गया, उसे उन्होंने अपनी प्रेम धारा में डुबो दिया। जहाँ वे सबके गुरु देव थे, वहाँ उनके माता पिता भी थे हमारे भगवान

JUL 97			
S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

ॐ

ॐ

30 MONDAY ✡ JUNE 1997

दादा के साथ 35 वर्ष रहे। अक्सर हमने शास्त्रों में और संतो से गुरू भक्ति के बहुत दृष्टांत पढ़े और सुने है किन्तु यह हमारे भ० के गुरू भक्ति, त्याग, तपस्या, सेवा, प्रेम का एक अद्भुत अनोखा एंव इस युग का महान सर्वश्रेष्ठ, ऊँचा आदर्श उदाहरण आज हमारी आँखो के सामने प्रत्यक्ष प्रमाण है। और यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि दादा भगवान का दिखाया हुआ रास्ता अद्वैत मत और उनके पद चिन्हो पर उँगली पकड़कर, कदम से कदम मिला कर लक्ष्य तक पहुँचाने वाले केवल आप ही हो सकते है। और भगवान हमारा अटूट विश्वास है कि जो गुरू की कि आत्म रूप है जो ब्रह्म ज्ञान तद् स्वरूप है जो ज्ञान मूर्ति उसका शिष्य है रह जाये, ये वह उसका गौरव नही है, वो शिष्य को वही स्वरूप देना चाहता है। जो परमात्मा स्वयं है। अत: ब्रह्मज्ञानी गुरू निश्चय शिष्य भाव को भी शिष्य की दृष्टि से निकाल देना, हटा देना जरूरी समझते है

01 TUESDAY ✡ JULY

जैसे पत्थर लिंग का विधि अनुसार पूजन करने के बाद उसका विसर्जन करना होता है ऐसे ही गुरू भाव का भी विसर्जन करना होता है परन्तु भगवान यह अद्वैत की बात है लेकिन द्वैत में अर्थात देह में गुरू शिष्य का भेद रहेगा ही। और सच कि जब तक शिष्य का अपना आप एक नही हो जाता, ज्ञान का नूर भी नही मिलता। दा भगवान ये गुरू शिष्य की अजीब बात है इस सम्बन्ध का वर्णन करना एक बहुत कठिन समस्या है, एक चमत्कारिक कलम शमा और परवाने का चित्र तो खेंच सकती है पर न कि उसके सम्बन्ध का। निश्चय सब नाते अवश्य टूट जायेंगे पर एक गुरू शिष्य का सूक्ष्म नाता टूटने वाला नही है। गुरु अगर स्थूल छोड़ भी दे तो भी शिष्य के हृदय के साथ गुरू का सम्बन्ध बना ही रहता है। जाम रहे साधु-रहे गुरु गोबिन्द। कह नानक इस जगत में जिन जापियो गुरु मन्त्र। तमाम सहस्त्र मुनि वेद, शास्त्र इस गुरु शिष्य सम्बन्ध का वर्णन करके खामोश हो गये। यह कैसा सशक्त, शांति दायक नाता है। उनकी आज्ञा पालन के आगे उनके भगत के जीवन का स्वयं मूल्य नही है

S	1	15	29
M	2	16	30
T	3	17	
W	4	18	
T	5	19	
F	6	20	
S	7	21	
S	8	22	
M	9	23	
T	10	24	
W	11	25	
T	12	26	
F	13	27	
S	14	28	

JUN 97

ॐ

ॐ

1997

JULY ✲ WEDNESDAY 02

यही एक .... जो शिष्य में रूह फूंकता है तथा जब भी गुरू शिष्य के अन्दर घर में समा जाता है तो अज्ञानता उसके हृदय से छाटकर निकाल लेता है तो मंजिल पॉव के नीचे, वो है जब शिष्य अपने आप को हृदय मानता है। हां भगवान यही गुरू किरण हमें भी चाहिये।

" गुरू किरण जिन नर ते कीन लीन, ये जागृति पहाणी।
नानक लीन भयो गोविन्द संग ज्यूं पानी संग पानी।"

JULY ✲ THURSDAY 03

दादा भ. के साथ बिताये कुछ क्षणों की झाँकी →

भगवान दादा लख्मी इस धरती पर प्रकट हुए और मुझे मिले यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है मुझ मायावी कीडे को हर वक्त आत्मा की भूँ-भूँ करके मुझे निश्चय के पंख दे कर भिमारी बनाया जो इस संसार रूपी बंधन से मुक्त हुई आकाश रूपी ओ० में उड कर सच्चा जीवन मुक्ति का मजा ले रहे है। सतगुरू दादा भगवान मेरा जीवन ही बदल दिया, इसलिये मैं किस जुबान से शुक्राना करू। पहले दिन ही वे इतनी आत्मीयता से मिले कि लगा ही नहीं कि हम आज नये मिले है। दादा भगवान ऑरव बन्द करके शान्त रूप से वाणी का अमृत रस प्रेमियो को पिला रहे थे। तो मेरे अन्दर शंका उत्पन्न हुई और शंका समाधान करने का मन हुआ तो उसी वक्त भगवान [illegible] ऑंखे खोलकर पूछते [illegible] कि किसी को कोई [illegible] है क्या? किसी को

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

ॐ

04 FRIDAY ✲ JULY 1997

कोई शंका होवे तो मेरे को बीच में भी रोक कर पूछना
मैं हैरान हो गई, मेरे अन्दर की बात कैसे जान ली। फिर
दाता ने ग्रन्थ वाणी का उदाहरण देकर (रख उनू आखियो
जिन विसारया करतार) वाली पंक्ति सुनाकर मेरी शंका का
समाधान कर दिया। ऐसा लगा जैसे कोई खजाना मिल गया
है जब 5 दिन के बाद मिले तो पूछा हम तुम्हारे साथ थे या
नहीं तो एकदम याद आया कि हाँ हर वक्त तो मेरे सामने
खड़े थे। जब बच्चों के ऊपर जोश में आकर हाथ उठाने
जाती तो सामने आकर जैसे हाथ को रोक देते कि भगवान नहीं
देखा है। ऐसे उस दिन से जैसे विकारों से दूर जाती। भला
भगवान के आगे कैसे कोई विकार कर सकता है। कुछ दिनों
के बाद दाता भगवान को साइन गार्डन आने का आग्रह किया
वहाँ रोज शाम 6-8 तक सत्संग होता था जब जाए तो
भगत ने बोला आज मैं भी garden चलूंगा और तुम्हारे भ०
दाता का दर्शन करूंगा और हवा भी खाऊंगा। लेकिन वहाँ

05 SATURDAY ✲ JULY

जब दाता भगवान को सुना तो भगत
हो गए और मन ही मन में अपना गुरु मान लिया।
और घर में आने की प्रार्थना की दाता भगवान इतने दयालु
और सहज थे जो बोले हाँ-हाँ हम तुम्हारे घर आयेंगे
और हफ्ते में एक बार सत्संग भी करेंगे। हम बहुत खुश
होकर घर लौटे मैंने अन्दर में बोला भगवान ने मेरा रास्ता
बताने के लिए गार्डन में बुलाया।

6 SUN

JUL 97

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

ॐ

ॐ

दादा भगवान अन्तरयामी →

एक दिन दादा भगवान ने सत्संग सुनाते बोला मैं सबको अपने जैसा करके देखता हूँ किसी को भी अज्ञानी करके नही देखता हूँ किसी को शंका आई जब अज्ञानी देखते हैं तभी तो किसी को ज्ञान सुनाते हैं। लेकिन शंका में सीधा न पूछकर वशिष्ठ मुनि और रामचन्द्र को बीच में लाकर पूछा। वशिष्ठ मुनि रामचन्द्र को जब ज्ञान सुनाता था तो क्या समझता था। इस सवाल पर दादा ऐसे हँसे जैसे चोरी पकडी हो। यह तो मेरे से पूछता है कि जब अज्ञानी देखते हैं तभी तो ज्ञान सुनाते है। फिर बडे प्रेम से बोले 'सवाल बहुत अच्छा है अभी देखो वशिष्ठ मुनी अगर राम को अज्ञानी समझता था तो कैसे बोलता था "राम तू देह नही है आत्मा है ब्रह्म है।" इसका मतलब राम अपने को भूल गया है पर वशिष्ठ भगवान करके देखता है। ऐसे मैं भी तुमको भ० ही देखता हूँ जैसे मै हूँ बोलो मैने तुम को क्या बोला तू है। इसमें नही शक गुमान

दूसरी बार घर में सत्संग हो रहा था दादा बडे प्रेम से आँखे बन्द करके वाणी का रस प्रेमियों को पिला रहे थे। तो दो स्त्रियां बीच में आकर बैठ गई। इन दोनों स्त्रियों ने सफेद कपडे पहने हुए थे। इसके बाद दादा ने शिव रूप धारण कर लिया। खूब जोश की वाणी चली कि तुम इधर आके खाना क्यों खाते हो। सफेद कपडा पहनकर आते हो पर मन सफेद नही हुआ। तुम हजार दर भटकने वाली हैं - तुम्हारा किधर भी विश्वास नही है। तुम फिर क्यों आई हो - तुम्हारे कुत्ते जैसा स्वभाव है भौंकना और नूस-२ करना। ऐसा खूब जोश का सत्संग करके और फिर समय से पहले उठकर चले गये। हम अन्दर में हैरान थे कि क्या हुआ। बाद में पता चला ये दोनों स्त्रियां ऐसी थी-वह Kitchen में नूस-२ करती थी-क्या पका है क्या खाना है कितने बडे गुरु आया-फिर बाहर जाकर भौंकती थी ऐसे थे मेरे दादा भ० अन्तरयामी-बेपरवाह। गुरू के लिए लोग बहुत बातें व निन्दा करते थे पर सच्चा गुरू निन्दा से नही डरता। सच का सौदाई सच का ही सौदा करता है।

ॐ

ॐ

09 WEDNESDAY ✲ JULY 1997

सेवाधारी है उदारचित दादा →

दादा भगवान कहते थे ज्ञान सब फुरनों से निश्चिन्त होकर आकाश की खुली हवा में सुनने से तुम्हारे अन्दर जाता है तब जाकर आत्मा का निश्चय होता है। लेकिन हम जो माया में फंसे थे, उनकी कहाँ थी पहुँच की कि ऐसे समय और वातावरण का इंतजाम कर सके। तो दादा भगवान मैथेरान hill station वगैरह का बन्दोबस्त करके आते थे और जिनको जैसे-2 सहूलियत मिलती दो तीन दिन वैसे-2 निश्चिन्त होकर ज्ञान लेते। प्रेम, सेवा, नम्रता गुरु का आदर्श देखते थे। वैसे ही अपना जीवन बनाने की कोशिश करते। तीन दिन में जैसे तीन वर्ष का अनुभव मिल जाता। रात दिन ज्ञान यज्ञ चलता था दादा गुरु सेवा लेते नहीं थे देते थे। सेवा करते थे। सबके खाने का खास ख्याल रखते। रात-2 को भी ज्ञान सुना-2 कर सोते।

10 THURSDAY ✲ JULY

मैथेरान में सुबह शाम सब walk पर जाते थे। रास्ते में वाणी चलती थी दादा भगवान ने कभी आलस्य नहीं किया हमेशा उत्साह में रहते थे।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

JUL 97

ॐ

ॐ

पक्षपात रहित दादा भगवान →

दादा भगवान के पास कोई लक्ष्मी भगवान, कोई या किसी सत्संगी यानी की शिकायत करता तो दादा भ० किसी का पक्ष लेकर उसको शांत नहीं करते थे। यह जानते हुए भी कि शिकायत गलत है। तो भी कहते अपने समझ से ठीक होगा। परन्तु ज्ञान में ऐसी वाणी चलाते जो कि अनुभव मिल जाता कि right क्या है wrong क्या है। और कौन कितना गलत है। ऐसे ज्ञान से ज्यादा से बात मिलती थी। भगवान जोरों से ज्यादा नहीं रखते थे। एक बार मेरा भगवान लक्ष्मी से मतभेद हो गया। लक्ष्मी भगवान ने समझाया भी पर मेरी बुद्धि में बात बैठी नहीं क्यों कि totally दे० [illegible] आखिर मैंने दादा के आगे बात रखी। वे बहुत धीरज से बो… तुम्हारे लिए तो बहुत अच्छा है। एक से बात नहीं समझा तो दूसरे से पूछ सकती है पर उसके बाद दादा भ० पूरा ध्यान मुझ पर ही देते थे जिससे लक्ष्मी भ० की महिमा को जान सके

खोई हुई श्रद्धा वापस आ गई। साथ लक्ष्मी भ० की महिमा करने की ताकत भी इस कलम और जुबान में नहीं है।

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

ॐ

14 MONDAY ✲ JULY 1997

पूर्ण दादा भगवान →

दादा भगवान जब कभी भी कहते मैं ही तो हूँ - मैं भगवान हूँ, पर देह नहीं हूँ। और दादा भगवान से कहती ऐसा न बोलो कि मैं भ० हूँ कोई गुस्से में आकर मार डालेगा, तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत न डाल दे। ऐसा न बोलो परन्तु भ० तो हँसते रहते। ब्रह्म के नारे लगाते। आज भी दादा अमर है। और लक्ष्मी भ० के रूप में वे हमारे सामने है।

15 TUESDAY ✲ JULY

निर्बल को बल देना →

एक बार दादा भगवान के एक बहू को बच्चा हुआ जो वह चूहे जितना था तो दादा भ० ने ख्याल किया तो उसको तो कोई प्यार ही नहीं करेगा। तो उन्होंने उसको प्यार करना शुरू किया जब भी घर आते लाजोरी करके उनको बुलाते प्यार करते कुछ महीनों के बाद वह आम घर जैसी तन्दुरुस्त हो गई और बड़ी होकर आम बच्चों जैसी हो गई। प्यार ने उसकी कमी पूरी कर दी। पीछे भगवान ने उसको देखा भी नहीं। ब्रह्म ज्ञानी प्यार कर भी सकता है छोड़ भी सकता है।

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

JUL 97

ॐ

ॐ

निर्माण दादा भगवान →

दादा भगवान का घर दादा भगवान का बड़ा भाई ही सम्भालता था दादा भ० तो मौन में ही रहते थे। एक दिन उसकी बहू रूठकर मायके चली गई। फिर सबने दादा भ० को बोला कि उसको लेकर आओ तो भ० दादा और लक्ष्मी भ० ~~ब~~ उसके मायके गये। तो जैसे ही वो सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, वह सीढ़ियाँ उतर रही थी। उसने कहा मैं तो Picture जा रही हूँ दादा भगवान ने कहा तुम जाओ, हम तुम्हारे पिता जी के पास बैठेंगे। तो वह चली गयी। दादा लक्ष्मी भगवान उसके पिताजी के पास तीन-चार घंटे बैठ गये। पिताजी ने यह बात अपनी बेटी की सुनी कि भ० को देखकर कैसे वह पिक्चर चली गई। दादा भगवान तो निर्माणी थे ही उसने दिल ही दिल दादा भगवान की महिमा की। और फिर भ० बहू को लेकर आये। भ० का कितना धीरज निर्माणिता व प्यार है।

करोड़ो में एक को ज्ञान →

(एक प्रेमी का अनुभव) →

एक दफा जब मैं बम्बई आया तो दादा भगवान से प्रश्न किया कि वेद शास्त्र में आता है कि लाखों करोड़ों में कोई ज्ञानी निकलता है। दादा भगवान ने जवाब दिया कि ठीक लिखा है। उस समय दादा भगवान के पास 14-15 कुल बैठे थे जिसमें दो जने दिल्ली के थे और बाकी 12-13 बम्बई के थे। दादा भगवान ने बम्बई वालो से पूछा - यहाँ की आबादी कितनी है तो उन्होंने बोला 50-60 लाख होगी। तभी दादा भगवान ने कहा एक करोड़ 15 लाख की आबादी में से मेरे पास कितने बैठे हैं तो कुल लाखों में हो तो मेरे पास गिने चुने आये हैं हर एक 7-8 लाख में से एक हुआ। तब वेद शास्त्र में आता है लाखो से करोड़ों में कोई एक ज्ञानी होता है।

ॐ

ॐ

18 FRIDAY ✲ JULY

दादा भगवान के जीवन की कुछ झाकियाँ →

दादा लक्ष्मी भगवान को प्रणाम - लाख -२ प्रणाम।
जब जब धर्मग्लानि होती है तब -२ अवतार प्रकट होता है
ऐसे हमारे दादा भ० विश्वविकार स्त्रियों के उद्धार के लिये प्रकट
हुए। कमजोर को शान्ति देने वाले, विधवा को साधवा बनाने
वाले, शाहूकार को गरीब व गरीब को शाहूकार बनाने
वाले झूठ से सच में लाने वाले दादा भगवान थे। उनके
बारे में जितना लिखें वह लिखने से परे है वे पूर्ण ब्रह्म थे
हर पैगम्बर की history में एक mystory छिपी
होती है पर उसको वही जान सकता है। जो उसकी गहराई
में जाये। जैसे समुन्द्र में मोती होता है पर वह समुद्र में
डुबकी लगाने से मिलता है ऐसे दादा भगवान को भी साधारण
मनुष्य नहीं जान सकता था।
दादा भगवान उन दिनों इतने प्रसिद्ध न थे मतलब
दादा भगवान की महिमा को, उनको उस

19 SATURDAY ✲ JULY

समय इतना नहीं जाना जो आज लक्ष्मी भ० ने प्रकट किया है।
परन्तु हमको उनसे बहुत कुछ मिला। पैगम्बर एक gift लेकर
आते है। राम जैसा शीतल, कृष्ण जैसा असंग, मै ही तो हूं का
जाप, गुरु नानक जैसे शरीर करके कुछ भी नहीं। इतना झुक
जाते जो बच्चे को भी इज्जत देते, बुद्ध जैसे बुद्ध स्वरूप और
Christ जैसे प्रेम स्वरूप।
सब पर प्रेम [illegible] [illegible] रखते कि बस उनके लिये शब्द
ही नहीं थे उनके एक-२ वचन में इतनी ताकत थी कि सुनते
ही आत्म [illegible] हो जाता था और नशा चढ़ जाता था हमने
उनके जीवन में बहुत बार अनुभव किया, वे बराबर भ० थे।
कहा भी साधारण मनुष्य जैसी बात न थी। हम तो उनको

20 SUN

बोलते नहीं थे। पर पहले ही दिन से जानते थे। ऐसे
लगा जैसे कृष्ण गुरु नानक मिल गया क्यूँ कि पहले
मैं उनकी पूजा करती थी। इतनी सेवा करते थे और
अब तो साक्षात रूप में भ० मेरे सामने थे। जैसे कृष्ण
ने भक्तों की झूठी पत्तल उठाई, ऐसे दादा भगवान ने
मैंने पेशाब झूठी पत्तल उठाई। गर्म पानी करके सबको देते

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

JUL 97

ॐ

ॐ

थे। इतनी सेवा करते थे बाथरूम में जाकर सबके कपड़े धो देते थे। किसी को तकिया न होता उसको अपना तकिया कम्बल दे देते। स्वयं बिना तकिये के सो जाते। परिश्रम इतना करते थे कि 4 बजे उठ कर अपने शरीर की क्रिया करते, 5 बजे हम सबको घुमाने के लिये लेके चलते थे प्रैक्टिशन में इतनी सेवा करते थे जो हम देखकर हैरान हो जाते थे। दादा भ० इतनी उम्र में इतनी सब्जियों की टोकरी कैसे उठाते थे। ऐसा गुरु तो हमने कहीं नहीं देखा था - जैसे हम भक्तों के भक्त हमारे। ऐसा बोलते नहीं थे पर करके दिखाया। इक घड़ी जो बिसरू राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय। ऐसा बोल कर करके भी दिखाया। एक घड़ी भी उनको ब्रह्म भूलता नहीं था। हम एक दफे बीमार हो गये हम को पकड़कर कुर्सी पर बिठाकर दूध नाश्ता कराके फिर घर में लेकर चलते कहते पहले खाओ, आराम से बैठो, शरीर भी मेरा है इसे दुख मत दो। जो भी भगवान की शरण में आता है उनके साथ ऐसा बैठ जाते जैसे उनका कोई कुड़म

जमाई या लड़की। तो बोलते तू मेरे एक हूँ। प्रेम का पूरा सागर तत्वों का तत्व था। 5 तत्व से न्यारा भी था प्यारा भी था। आकाश जैसा निर्लेप, जल जैसा शीतल, धरती जैसा धीरजवान। मिश्री जैसा मीठा, फूल जैसा कोमल व सुगन्ध देने वाला। सागर जैसा गम्भीर, अग्नि जैसा सब विकार जलाने वाला दादा भ० थे। कई करामते देखी। एक दफा हम बोरिवली में थे। खाना खाके बैठे, ऐसे तो हमेशा 5 बजे निकलते थे परन्तु उस दिन बोले अभी चलो सुलक्षणी के पास चर्चगेट पहुंचते [illegible] उसका आदमी अन्तिम स्वासें ले रहा था। और [illegible] याद कर रहा था। हम 4 बजे पहुँचे और 5 मिनट के बाद ही उसका शरीर शान्त हो गया। समय के इतने पाबन्द थे जो 5 मिनट भी देर न करते। इत्तफाक से कोई बीमार होता तो उसके पास स्वयं जाते या किसी को भेजते तो पूरे समय पर भेजते। ट्रेन पर समय से पहले पहुँचते और लोग बाद में taxi वालों को जल्दी-2 करते पर भ० स्वयं पहले ही चलते। विधवा को इतना प्यार करते थे जैसे उसका दिल टूटा हो जाये। स्त्रियाँ बहुत कमजोर

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

ॐ

23 WEDNESDAY ✡ JULY

होती है इसलिये उनको बहुत प्यार करते। मर्दों को
बहुत गुस्सा आता था यह स्त्रियों को इतना क्यों उठाते
है। वो प्रेम व ज्ञान से स्त्रियों में इतनी शक्ति भरते थे
जो वे अपने को ownself समझकर चलने लगती।

कोई सन्तसाधु, महापुरुष, महेश्वर ऐसा ज्ञान नहीं
देता था। जैसे हमारे दादा भ० के प्यार से ज्ञान का अनुभव
हो जाए। दादा भगवान शाहूकार को बहुत गाली देते थे
क्योंकि शाहूकार को बहुत बड़ा अहं०, विषय विकार होते है
इसलिए हमेशा बोलते सुई के पाखे से ऊँट निकल जायेगा
यह मुमकिन है। पर शाहूकार को ज्ञान नहीं होगा। परन्तु
जब वो अहं० छोड़कर गुरु की शरण लें, गरीबी खरीद करें
मैंपना गवाएँ तो ज्ञान हो सकता है। उनके सामने कोई
झगड़े करते कोई आये, बहस करने भी आते पर वे तो
शान्त मौन हो जाते कि सब स्वयं ही लौट जाते। उनका शरीर
इतना शीतल था जो कोई हाथ लगाता वह भी शीतल हो

24 THURSDAY ✡ JULY

जाता। हम कई बार अपने जीवन में धक्का
खाते तो हमको अच्छी तरह बैठकर समझाते कि हर
एक दिल अल्लाह है। किसको ठेस न करो। तू आत्मा
को जान किसी को धर्म-कर्म में नहीं जाना। हम पढ़ते
थे कि अवतार प्रकट होता है, उसको सब नहीं जानते।
ऐसे भ० दादा के पास कई आए, कई चले गए। हमने
एक दिन भ० दादा से पूछा आप इतनी मेहनत करते हैं ये
फिर आपको छोड़कर चले जाते है तो आपको दुख नहीं होता
तो [illegible] भ० बोलते उन्होंने अपनी अमानत लिया जितनी
अमानत थी ली, और गुरु से निभाना बहुत कठिन है मुझको
मन में आता था प्रेमी प्रीत निभाना कठिन है। पर दादा भ०
हमेशा मौन शान्त में रहते थे। कोई सवाल हम पूछते थे सब
सवालों का जवाब था तू अपनी आत्मा में रह, देह
में आने का नहीं है। जैसा भ० लक्ष्मी ने दादा भ० को
पहचाना और निभाया। ऐसा कोई भी नहीं था हमने
बहुत देखा जिससे बहुत कुछ सीखने को मिला। दादा
भ० कहते तू ब्रह्म में हाजिर रख। यह सुनते ही बहुत
आनन्द आता था। एक तो मैं भी गुरु से प्रीत न हुई

JUL 97

S		13	27
M		14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

ॐ

ॐ

JULY ✲ FRIDAY 25

तो आज हमको इतना आनन्द मिल रहा है। हमेशा बोलते थे ना। मैं मुआ तो खुद खुदा हुआ। दादा भ० हमेशा अपनी आ० की समाधि में रहते। हमेशा उठते बैठते कर्मयोगी, प्रेम योगी नजर आते थे। दादा भ० के पास कोई भी आता कहते मान न मान पर तू है भगवान। तो कोई कहता हम कैसे भगवान बनेंगे तो दादा भगवान कहते तुमको भगवान बनायेंगे हमारे पास भ० बनाने की मशीन है। कई इस बात को समझते नहीं थे जो भ० को ऐसा करेगा वो ही भगवान बन जायेगा। जैसे संत और पारस में बड़ा अन्तर जान। हमने सुना था कि अवतार करामते दिखाते है। हम कभी बेचैन हो जाते तो दादा भगवान सामने उनका खड़े हो जाते। अंदर में ज्ञान की आवाज आती थी और उनकी मोहिनी मूर्ती आगे खड़ी हो जाती थी बोलते तुमने मुझे तंग किया है, मुझे आराम से बैठने नहीं देते हैं अभी शांत कर। मैं हैरान हो जाती थी और कहती भ० अभी आपको तंग न करूँगी। बहुत ही दादा भ० से मैंने लिया। उनसे हर वक्त खुजागी मिलती ~~थी~~ थी, भगवान दादा

JULY ✲ SATURDAY 26

की महिमा अपरमपार है, उनका झंडा हमारे भ० झुला रहे है। जिनको विश्वास नहीं थी उनको अभी है। अभी सारी सृष्टि में भगवान का प्रकाश फैल गया है। अब घर-२ में ज्ञान की चर्चा हो रही है। यह सारी कमाई हमारे प्रीतम की है। जिन्होंने दादा भगवान से उनका एक-२ वचन सिद्ध कर दिया है कर रहे है। हमारे लक्ष्मी भगवान ने दादा भ० का झंडा ऐसा झुलाया है जैसे हिन्दुस्तान का झंडा - हमारा ज्ञान का झंडा भी ऐसा ही है। प्रेम, सत्य, और अहिंसा। सत्य माना आत्मा में रहो, हर एक से प्रेम करो। अहिंसा माना अपने मन वचन, कर्म से किसी को दुख न दो।

SUN 27

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

ॐ

दादा भगवान की महिमा →

जब से दादा भगवान के साथ मिलन हुआ, हमने उनको देखा। उन्होंने पूरी फकीरी कमाई। उनका जीवन बिल्कुल सच्चा था। सुबह से रात तक वो ज्ञान सुनाने के लिये घर घर जाते थे। वो न धूप न छाँव, न गर्मी, न सर्दी न बरसात कुछ भी न देखते। दिल में एक ही लगन थी कि यह सब आत्म ज्ञान सुनकर उठ जागें। मेरे दरवाजे से कोई भीखारी न जाए। चाहे कोई मान करे या अपमान, अच्छा कहे या बुरा, सुने या ना सुने, चाहे वो दोपहर को आ जाए या रात को देरी से आए। अपनी तन मन से पूरी सेवा करते उसको ज्ञान से तृप्त करते।

गुरु नानक ने अपने को दास कहलाया, कृष्ण ने कहा मैं ही तो हूँ दादा भगवान ने दोनों को मिलाकर एक-2 करके समझाया। शरीर करके मैं कुछ भी नहीं हूँ। उनकी कहनी रहनी बिल्कुल एक थी। पूरे निर्भय

थे किसी से डरते नहीं थे कई मर्द उनसे झगड़ा करने आते थे, तो बोलते थे हमारी औरतों को यह खराब करते है। उल्टा ज्ञान सुनाते है। हमारी सेवा नहीं करती। हमको पूरा साथ नहीं देती। स्त्रियाँ भी जब ज्ञान सुनाती थी तो उनमें वैराग्य आ जाता था। ब्रह्मचर्य में रहती थी तो मर्दों को पसन्द नहीं था। इसलिए वह झगड़ा करते ब्रह्मचर्य सत्य जगत मिथ्या उन्होंने कहा नहीं पर करके दिखाया। एक बार हम दादा भगवान के साथ train से उतरे तो देखा दादा भ० की लड़की का ससुर सामने से गुजरा। परन्तु दादा भगवान ने उससे कुछ भी न बोला कि तेरे बाप ने मुझे राम-2 भी नहीं बोला हमने देखा तो लोकरीत, मर्यादा से बिल्कुल ऊपर थे बड़े भाग्य से पैगम्बर मिलता है बहुत कुछ सीखने को मिलता है। समय-2 पर उनकी कई करामतें देखी, एक दो बातें है।

यह शरीर पहले देहली रहती था हर हफ्ते एक दो बार बम्बई आते थे। दादा भगवान प्रारब्ध पर पूरा विश्वास रखते थे। बच्चे बड़े होते हैं तो

S		13	27	
M		14	28	
T	1	15	29	J
W	2	16	30	U
T	3	17	31	L
F	4	18		
S	5	19		
S	6	20		
M	7	21		
T	8	22		
W	9	23		
T	10	24		9
F	11	25		7
S	12	26		

ॐ

शादी की भी चिन्ता होती है इस कारण लडका देखने बम्बई आए। दादा भगवान ने कहा तुम शांत होके बैठो जिसको होगा आपे ही दरवाजा खटखटाकर लेके जायेगा। उस समय इतना विश्वास न था कि आपे ही कौन होगा। पर वापस चली गई। और भ० की वाणी सत्य निकली। चारों लडकियों की शादी आपे आप ही अच्छे-2 घरों में हो गई। दूसरी बात देहली में एक बंगला भी था। एक किरायेदार ऐसा था जो न किराया देता था और न उठता था तंग भी करता था हमने दादा भ० से बात की। दादा भ० ने कहा तू शांत करके बैठ, ऐसा समझ कि मकान उसी का है। उसी के मकान में बैठी है थोडे ही दिनों में वो किरायेदार किराया भी देकर गया। और मकान भी खाली कर गया ऐसी कई करामते देखी है। कोई एक वचन भी कमाई करे फायदा न हो, ऐसा हो नहीं सकता। इनके एक-एक वचन की कीमत लाख-2 रुपया हम करे तो भी कम है। फिर मन में सं० उठता था कि ज्ञानी गुरु के पास रहे, अपना काम पूरा करें

ज्ञान भी उस समय इतना नहीं था। ज्ञान सुनने के लिए दिल्ली में भी बहुत आते व हमको छोडते नहीं थे, लेकिन अपना सं० पूरा होता है। हम बम्बई आ गये, सात वर्ष बम्बई में रहे। लगातार दादा भ० का संग किया। वे जहाँ जाते वृन्दावन, मथुरा लखनऊ, कानपुर दिल्ली हरिद्वार तो मैं भी जाती। दादा भ० की करामत है जिन्होंने अन्दर ही अन्दर शावते सरकाके इस संसार सागर से पार लगाया।

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
					1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30	31						

AUG 97

ॐ

01 FRIDAY ✲ AUGUST

1997

दादा भगवान का मोहिनी को ज्ञान देना →

इस धरती पर समय-2 पर ऐसे महापुरुष प्रगट होते है। जो वह भटकते हुए लोगो को उच्च आत्म ध्यान से जगाते है व शान्ति की राह दिखाते है। कहते है दुख दारू सुख रोग भया। जब मनुष्य को बहुत दुख होते आती है उसके हृदय में वैराग्य आता है जो कोई भी संसारी चीज उसको प्रिय नहीं लगती। उस वक्त उसके अन्दर में एक ही लगन रहती है। प्रभु आओ दुख दर्द मिटाओ और मेरे मन को शान्ति दो। इस शरीर को भी 20 साल पहले, ऐसी ठोकर लगी जो भगवान की तड़प जागी। मैंने अचानक जीवन साथी खोया उसके बाद जीवन सूना हो गया। सब तरफ से परीक्षाएं आयी, बच्चे सब छोटे थे। दुकान का कारोबार, सब धन्धे जकार्ता में मेरे सिर पर अकेले आ गए। उस समय मैं बहुत रोई चिल्लाई भगवान शक्ति दो, तुम मेरा हाथ पकड़ो मेरे को भव सागर से पार करो। सुबह

02 SATURDAY ✲ AUGUST

शाम मेरे अन्दर ऐसी लगन थी। अमृत वेले उठकर जप पाठ करके पुकारती थी दर्शन दो मुझे ~~बनवारी~~ बनवारी। भ० भक्त के हृदय की पुकार जरूर सुनते है। मेरी भी उसने सुनी। सुलक्षणी सत्संगयानी पहले बम्बई में भ० का ज्ञान सुनकर आई थी। जिसके पति का देहान्त हो गया। वहाँ पर दादा भ० ने उस समय उसको सहारा दिया था वह दादा भ० का पैगाम लेकर जकार्ता में आई थी। मैंने भी उसका संग किया उससे ज्ञान सुनने से शान्ति मिली। उसने नई बात सुनाई। गोल्हा करी जंहिंजी सो तू आंहो पाण। पाण बिना पासे केया तोखे लुडिंहिंजी जाग। मैंने दादा लख्मी भ० को चिट्ठीयाँ लिखी। मेरे को सुलक्षणी जैसा सुहागीन

3 SUN

बनाओ। दादा भ० तो करुणा के सागर थे। पत्र मिलते ही मुझे पत्रों के द्वारा ज्ञान लिखा। तू कौन है। किस लिए आए है। अपनी इच्छा से शरीर धारण किया है इस जीवन में ही जीवन मुक्ति का मजा लो। दादा भ० के हर पत्र से मुझे शक्ति मिली। मैं जो दुकान चलाती थी वह छोड़कर बम्बई आ गई। दादा भगवान के पास पहुँची। वह पहला दिन मुझे याद है जब शरणागति

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

ॐ

पहुँची। दादा भ० से कहा कृपा का अर्थ है किस्मत पाई। दादा भगवान ने सच में हमको अन्धकार से निकाला। २४ घंटे एक ही नारा था - घड़ी एक बिसरूँ राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय कभी २-४ दिन हम सत्संग में न आते तो सत्संगियों को बुलाने के लिए भेजते या खुद आ जाते। सच में उनका इतना प्यार न मिलता तो जगत नहीं भुला सकते थे। ये सत्संग ऐसा है जो रोते आओ और हँसते जाओ।

एक बार दादा भ० के साथ बगीचे गये। दादा भ० ने कहा तू मुझे अभी भी नहीं जानता है कृष्ण मैं, नानक मैं, अब मैं ही नंदलाल का शरीर धारण किया है। तुमको जगाने के लिये। ये सब सुना तो मुझे लगा सच में मैंने दादा भगवान को गुरु देखा पर अवतार नहीं जाना। सच में जब दृष्टि सूक्ष्म होती है तब जान सकते है। अब अन्दर में येही भावना है कि यह जीवन भ० के अर्पण हो जाये।

ये शरीर चलता फिरता मंदिर होना चाहिए, जिससे सबको सुख शान्ति व आदेश मिले। दादा

भ० बड़े कुल से आये थे। परिवार भी बड़ा था वहाँ से निकल कर किस तरह से ज्ञान शान्ति दिया, वो सब आदेश हमारे सामने है। दादा भ० की वाणी किताब में छिपी उसने कहा था इस किताब का कोई कदर नहीं करता है अपने हाथ से लिखकर पढ़ेगा तो कदर करेगा। तैसे ही सुना कि महिमा वेद न जाने। उनका जीवन ही ग्रन्थ है था।

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

S		14	28
M	1	15	29
T	2	16	30
W	3	17	
T	4	18	
F	5	19	
S	6	20	
S	7	21	
M	8	22	
T	9	23	
W	10	24	
T	11	25	
F	12	26	
S	13	27	

SEP 97

ॐ

ॐ

एक प्रेमी द्वारा महिमा →

दादा भगवान कई बार सत्संग में मर्दों को खूब गालियाँ देते थे
जो कई बार गालियाँ सुनी तो मन में गुरु के प्रति शंका उठी
कि जब ये समता का ज्ञान है फिर मर्दों को गालियाँ क्यों?
यह तो अद्वैत न हुआ - ये स्त्री पुरुष का भेद क्यों? जो भ०
के सामने पड़ने पर यह मन से भ्रम निकला ।

एक बार बाहर शहर में सत्संग पर जाना हुआ, वहाँ
दादा भ० किसी के घर में गए वहाँ जाने की लालसा हुई। वहाँ
पार्क में दादा लक्ष्मी भ० बैठे थे और चारों ओर स्त्रियों का
सत्संग चल रहा था। वहाँ चुपचाप पीछे खड़ा हो गया। तो
हमारे कानों में दादा भ० का स्त्रियों के पीछे गालियाँ इतनी दे
रहे थे। जो मेरा माथा ठनका। बस उसी समय लौट पड़ा-
भ० ने निश्चय कराया। वहाँ कोई मर्द नहीं, कोई स्त्री नहीं
कोई द्वैत नहीं, केवल समता है। जहाँ जिसको बीमारी है वहाँ
उसका इलाज है ये समता का ही एक

Part है। ~~जो~~ जो मर्दों पर गालियाँ पड़ती है। ताकि वे
मर्दपने का अहं० मिटे और स्त्री का भाव लिये नम्रता में आए।
जब अपने से मर्दपने की बू निकली तो ज्ञान समझना सरल
हो गया। दादा भगवान की महानता थी कि बच्चों के सदृश
होकर चलते जैसे कोई उठाये बिठाये, वैसे ही चलना। एक
बार उनके मुँह में किसी ने काजू डाला। इतने में उनके प्रेमी जो
उनकी पूरी देखभाल करते थे आए तो देखा दादा भ० का मुख
चल रहा है। तो उसने गुस्से से, जैसे बच्चों को कहा जाता है
कहा - दादा मुख खोलो, क्या खा रहे हैं? मैंने मना किया था
कुछ नहीं खाना। दादा ने कहा बादाम है। मुख खोला तो देखा
काजू चबा रहे थे। उसने कहा आप तो काजू खा रहे हैं। बस
इतना बच्चे के सदृश दादा ने कहा मैं क्या करूँ मेरे
को कोई मुँह में डाल गया। ऐसा भोलापन जिसका
कोई वर्णन नहीं - वाह गुरु तेरी लीला ।

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

ॐ

देह से न्यारे →

दादा भगवान को एक बार शरीर में ज्यादा कष्ट आया, जिसमें उनको बहुत समय तक बेहोशी चल रही थी। Dr. खूब उनकी सेवा में लगे हुए थे। एक दिन जैसे ही दादा को समय-2 पर दवाईयाँ, injection दे रहे थे एक दिन जैसे ही दादा को Dr. ने बाजू में injection लगाया तो उसका reaction हुआ और वह जोर से बाहर निकल गया और रक्त बहने लगा। इस पर भी उस समय दादा एक दम से सुजाग होकर बैठ गए और सत्संग शुरू किया - कहने लगे देखो हमारी हिम्मत और थोड़ी वाणी बोली और शांत होकर सो गए। यह दृश्य देखकर लगा कितना न देह से अलग होकर अपने आत्म निश्चय में रहे हैं इतना गहराई में जो unconcious में भी उनको आ० ही आ० याद है। यह दृश्य को हृदय पर छाप छा गई।

एक बार दादा भ० ने बोला तुम्हारे अन्दर इतनी शक्ति है जो पहाड़ को बोलो हट जाओ तो वह हट जायेगा। हमारे अंदर शंका आई कि चेतन पर तो असर हो सकता है पर जड़ पर हमारा हुक्म या वाणी का असर कैसे होगा? परन्तु प्यारे दादा भ० ने अनुभव कराया दादा भ० के पास कोई tape मशीन के लिये लेकर आया, जिसमें पहले एक फिल्मी भजन भरा हुआ था जैसे ही वाणी भरने लगे कि भजन चला। इस पर मैंने कहा इसको मिटाओ और दादा भ० की वाणी भर दो। इस पर दादा भगवान ने कहा नहीं इसको पूरा चलने दो फिर भरो। जो ऐसा ही हुआ। गुरु वाक्यम् सत्यम्। कुछ दिनों के बाद बात भूल गई। जब उसी भजन के ऊपर किसी के भजन भरने लगे तो भजन भरे ही

नहीं - फिर-2 भरा, Tape recorder में भरा, फिर भी निष्फल रहा तो दादा भ० की आकाशवाणी याद आई - इसको मत काटो इसके बाद भरना। इसके बाद विश्वास हो गया कि जड़ पर भी असर होता है।

एक बार एक प्रेमी बीमारी की छुट्टी लेकर आया दादा भ० के पास। अभी उसको तीन ही

SEP 97		
S		14 28
M	1	15 29
T	2	16 30
W	3	17
T	4	18
F	5	19
S	6	20
S	7	21
M	8	22
T	9	23
W	10	24
T	11	25
F	12	26
S	13	27

ॐ

ॐ

11 MONDAY ✲ AUGUST 1997

दिन हुए तो दादा भ० ने कहा तुम आज अपने शहर में जाओ। उस प्रेमी को पहले तो समझ न पड़ी कि 15 दिन की छुट्टी में आया हूँ। परन्तु गुरु वाक्यम्_ सत्यम् करके चला गया। ऐसा सोचते चलके जाकर लेट गया। उसी समय उसका officer घर में आया क्योंकि उसको शंका आई यह सच में बीमार है या ऐसे ही बहाना किया। देखा तो शांत हो गया। उस प्रेमी ने उसी समय दादा भ० को लिखा आपकी हर बात में राज है। जो पहले नहीं समझ पाया। गुरु जो निराकार देखता है वो पग-2 पर करामत देखता है।

जैसे कृष्ण भ० ने द्रौपदी के जूते उठाये थे ऐसे इस तरह दादा भ० ने भी किया। एक बार सत्संग में जब सब प्रेमी उठे तो एक सत्संगवासी ने कहा हमारे जूते बाग में रह गए हैं। उधर से अंधेरा भी हो गया था। उसको जूते नहीं मिले तो दादा भ० स्वयं बाग में गए ढूँढने और ढूँढकर अपने हाथों

12 TUESDAY ✲ AUGUST

में उठाकर ले आए। वाह कितनी आपकी सरलता एक-2 के लिए तैयार है। दादा भ० ने कभी अपने को गुरु और सामने वाले को शिष्य नहीं देखा था। पर स्वयं अपना रूप अपनी मौज माला जानकर सेवा करते थे जो कह नहीं सकते।

एक माई को हड्डियों की बीमारी थी उसकी सेवा ऐसे की जैसे अपनी नैमित्तिक क्रिया करते हैं। कर्ता भाव न आया हमें आदर्श दिखाया। दादा भ० बोलते थे दिल की खिड़की खोल दो मैं झाड़ू लेकर खड़ा हूँ तो साफ करूँ। अपने प्यारों की खातिर भ० स्वयं क्या-2 न थे। सच में हमारे लिये ही धरती पर साकार हुए। बार-2 आपको नमस्कार, कोटि-2 प्रणाम।

दादा भगवान ने बताया शंकराचार्य कहता है गौ हत्या बन्द करो पर उसको यह नहीं मालूम ब्रह्म हत्या न हो उसको हर मनुष्य करता है कृष्ण की लीला तो पढ़ी है। पर यहाँ पर देखी है जब दादा लक्ष्मी भ० पालम में Dr. के पास जाते थे तो वह जगह मिलिट्री area में थी। बिना पास के कोई नहीं जा सकता था पर वहाँ इतने भक्तों की कहाँ तक पर्चियाँ बने तो

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	AUG 97
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

ॐ

तो फुरसत नहीं देता था। जैसे सत्संगी आते थे सब पहरेदार सो जाते थे, जैसे कृष्ण के समय ताले खुल गये थे। और पहरेदार सो ~~गये~~ थे। लीला भ० ने दिखाई यह सब उन्हीं की कृपा है।

दिल्ली से एक प्रेमी का अनुभव →

दादा भगवान ने निर्बल को बलवान, शाहों को शाह बनाया आतम ध्यान देकर। आज मेरे पास क्या है - खाना भी मुश्किल से खाते हैं। पर ऐसा शाहूकार अपने को लगता है कि अमीर से अमीर मैं हूँ। दिल इतना शहंशाह कर दिया है। कभी सपने में भी अपने को कम नहीं समझते हैं। भगवान ने अन्दर ऐसी शक्ति भर दी जैसा कोई न हुआ है ना हुआ होगा। एक बार पहली बार सूरत में गई थी

दो महीने के लिये। अचानक ~~थोड़े~~ थोड़े दिनों में दादा भगवान ने कहा घर जाओ। दिल न हुआ पर गई तो ऐसी ही बात हो गई थी बहुत ही परेशान था। उस ध्यान से शान्ति मिल गई। वह सत्संग के vibration का असर था। अन्दर में आत्मा भ० सात समुन्द्र दूर बैठकर भी ध्यान रखते हैं।

दूसरे प्रेमी का अनुभव →

इनकी महिमा का तो वर्णन किया नहीं जा सकता, अपरमपार है। आतम ज्ञान क्या है यह नहीं जानते थे। मुक्ति क्या है हम नहीं जानते थे। केवल स्वर्ग जानते थे। परन्तु दादा भ० ने आतम ज्ञान दिया। दादा भ० ने कहा सब शास्त्रों से मक्खन निकालकर तुम्हें दे रहा हूँ पर तुम खाने में भी हिचकिचाते हैं। यह समय है पर तब हम इसको नहीं समझते थे।

अन्दर जो आत्मा था दादा भ० कृष्ण हैं। इनसे आतम ज्ञान अच्छी तरह अर्जुन के सदृश्य सुनूं

S		14	28
M	1	15	29
T	2	16	30
W	3	17	
T	4	18	
F	5	19	
S	6	20	
S	7	21	
M	8	22	
T	9	23	
W	10	24	
T	11	25	
F	12	26	
S	13	27	

SEP 97

ॐ

15 FRIDAY ✲ AUGUST

1997

✧ INDEPENDENCE DAY ✧

पर संकोच होता था। बात करने में एक बार संकोच आया तो दादा भ० स्वयं उठ कर बात करने लगे मैं ही कृष्ण बन कर आज की dress में आया हूँ तुम लोग मुझे पहचानते नहीं है। तुम कहते हो इनकी शक्ल तो मेरे भाई बाप से मिलती है फिर भी तुम विश्वास नहीं करते सच बात बोलता हूँ उस दिन, मैंने दादा के कृष्ण रूप में देखा जो कल्पना करता था।

16 SATURDAY ✲ AUGUST

प्रेमी का अनुभव →

दादा भ० से मेरा पहला दिन factory सन् 1937 सत्संग में पहली बार परिचय हुआ। उस दिन दादा भ० सत्संग कर रहे थे उनका कहना कि सब कुछ करने वाला भ० है। तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं है। ऐसा जादू का काम किया कि उस वक्त मैं एक factory चला रहा था। जिसमें अपने अहं० के कारण कि मैं factory चलाता हूँ। factory चलाता नहीं था 1100 तरह की मुसीबतों के कारण परेशान था। सत्संग से बाहर निकलने पर कि सब कुछ भ० करेगा, वो ही करने वाला है। मेरे पाँव जमीन पर टिकते नहीं थे खुशी के मारे हवा में उड़ रहा था। factory की tension न जाने कहाँ उड़ गई। यह ऊपर की बात सिद्ध करती है। कि एक वचन ब्रह्म-ज्ञानी के मुख से निकला हुआ बन्दूक की गोली की तरह असर करता है। पहले भी सुना था पर भ० के मुख से जैसे चमत्कार हो गया।

17 SUN

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

र से बोच
करने लगे
तुम लोग
तो मेरे
करते
प में

ग में पहली
थे उनका
प में कुछ
रखा
ना कि
1100 तरीके
निकालते
मेरे पाँव

S		10	24	AUG 97
M		11	25	
T		12	26	
W		13	27	
T		14	28	
F	1	15	29	
S	2	16	30	
S	3	17	31	
M	4	18		
T	5	19		
W	6	20		
T	7	21		
F	8	22		
S	9	23		

ॐ

दादा भगवान से ब्रिलयनट फ्यूचर का आशीर्वाद →

✧ RAKSHA BANDHAN ✧

जब सत्संग में लगातार जाना शुरू किया तो घरवालों को डर लगा कि जवान बेटा तो हाथों से निकला जा रहा है। उन्होंने सत्संग में जाने से रोक लगायी। सत्संग में जो जाता है शादी नहीं करता है। अगर तुम मर्द की जुबान दो तो शादी अवश्य करोगे तो सत्संग में जा सकते है अन्यथा नहीं। उस समय भगवान न जाने कैसे उसके घर में बैठ गया और उनको कहा शादी क्यों नहीं करूँगा, अवश्य करूँगा, जरूर करूँगा। उसके बाद सत्संग की छुट्टी मिली। शादी की बात से दिमाग बहुत चलने लगा। क्यूँ न भगवान के साथ शादी की जाए। अभी मैं पूरा फैमालियर भी नहीं था। सत्संग में जाने वालो से पूरी सलाह भी न ले सकता था करू तो क्या करूँ। सोचा सोने की अंगूठी बना दूँ फिर सोचा अगर दादा ने अंगूठी फेंक दी तो घबराहट हो जायेगी। अजीब बात हो गई कि शादी कैसे की जाए।

जहाँ चाह है वहाँ राह भ० दे ही देते है। अचानक गली में फूलो वाला बहुत सुन्दर फूलो की अंगूठियां बेच रहा था उसे देखकर बात सुलझ गई। फूलो की अंगूठियां लेकर हिम्मत करके चला। डर भी था। वहाँ पहुँचते-२ रात हो गई। सोच रहा था। कैसे कहूँ भ० आपसे शादी करने आया हूँ। जब वहाँ पहुँचा तो भ० बाहर चक्कर कार रहे थे। उन्होंने देखते ही कहा भ० से शादी करने आया है। कहा दादा से मिले होर जैं तो हैरान हो गया सत्संग में फिर दादा भगवान के पास ले कर गये और कहा दादा तहां सां शादी करण आयो आहे। फिर तो सब बैठ गये। घर वाले भी वहाँ पहुँचे। दादा भ० ने दस्ताना निकाला - वो छिपी हुई अंगूठी उन्हे पहनाई - अजीब दृश्य हो गया, सब तालियाँ बजाने लगे। फिर सब टाफियाँ खायी। उन्हे खुश देख कर सवाल करने की हिम्मत बढ़ी और मैंने C.A. course शुरू किया था। तीन-चार दिन ही ज्ञान सुना था पर पढ़ाई में मन नहीं लग रहा था। तो दादा भ० ने पूछा यह कैसे

S		14	28	SEP 97
M	1	15	29	
T	2	16	30	
W	3	17		
T	4	18		
F	5	19		
S	6	20		
S	7	21		
M	8	22		
T	9	23		
W	10	24		
T	11	25		
F	12	26		
S	13	27		

ॐ

ॐ

20 WEDNESDAY ✲ AUGUST 1997

पूरा होगा। तो भगवान ने आशीर्वाद दिया कि Brilliant future is awaiting for you. तुम Merit list में आओगे सारी दुनिया देखकर हैरान होगी। तुम जो पढ़कर जाओगे उन्हीं सवालों का पेपर बनेगा। तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। 10-15 मिनट दादा भ० ने आशीर्वाद दिया उस समय तो सुन-2 कर थक गया जो पास होने का भी डर था सो Merit list कैसे मिलेगा। exam में तीन बार फेल हुआ पर दादा भगवान की बात सच निकली। मेरा नाम मेरिट लिस्ट में आया। North India में चौथा स्थान व All India में 25 वां स्थान था। मेरिट लिस्ट देखकर भ० की बात याद कर वहीं रोया कि पहले कभी नहीं विश्वास आया।

21 THURSDAY ✲ AUGUST

लखनऊ में बिताई रातें →

दादा भगवान की लखनऊ में हालत बहुत नाजुक थी। घर में सब ने मना भी किया, पर दिल नहीं माना पहुँच गया भ० लक्ष्मी से कहा दादा कहाँ है मुस्कराते कहा उस रूम में, पर कहा कोई डि० न करना। कमरे में कदम रखा, बिल्कुल शांत वातावरण था। दादा शांत सोये हुए थे। कमरे में बैठ गया। लगा दादा को तो कुछ नहीं है। लोगों ने बेकार में कहा दादा Serious है। पर जब 2-3 घंटे के बाद, एक Dr. आया उसने एक मशीन से नली में जमा हुआ खून निकाला, वह कलेजी के जितना था, अब मेरा सिर घूम गया, यह Serious नहीं तो और क्या? यह तो ज्ञान के कारण शांत सोये पड़े है। सारी रात दादा के कमरे में सोया रहा। देखा कितना शांत वातावरण था। इतना शांत कि कोई खटका नहीं, कोई आवाज नहीं। बिल्कुल शांत। सवेरे 4 बजे एक पक्षी आया वह अपनी कू-कू करता

S		10 24
M		11 25
T		12 26
W		13 27
T		14 28
F	1	15 29
S	2	16 30
S	3	17 31
M	4	18
T	5	19
W	6	20
T	7	21
F	8	22
S	9	23

AUG 97

ॐ

Brilliant
ते आज्ञाओं
आज्ञाओं
की जरूरत
या उस
भी डर
बार फेल
मेरा नाम
पान क
र, भ०
ही विश्वास

की। घर
य गया
रूम में,
कुल शांत
बैठ गया।
कहा दादा
माया उसने
स्ल जी

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

1997

AUGUST ✲ FRIDAY 22

था। उनकी दूसरी कूँ-कूँ पर लक्ष्मी भ० दादा भ० के कमरे में enter करते थे। मैं उनकी ठीक दूसरी कू-कू पर आने पर हैरान होता था कि कैसे बिल्कुल दूसरी कू-कू पर enter करते थे फिर दर्शन करके भ० walk पर निकल जाते थे। तीन-चार रातें साथ रहे। हमको जानसिन रसिलि करके उपाधि दी। हम शांत में दादा की सारी Picture देखते रहते थे। जो लिखी नहीं जा सकती। एक दिन Dr. दादा को injection लगा रहा था। तो लक्ष्मी भ० ने मना किया कि इनके शरीर से न खेलो - अब यह दवाईयाँ बन्द कर दी पर एक और Dr. ने कहा - दवाईयाँ बन्द कर दें, यह कैसे हो सकता है। Dr. ने Injection लगाई, मगर उससे फायदा कुछ नहीं हुआ। उस समय मैंने ज्ञान इतना समझा नहीं था। जो लक्ष्मी भ० की गहराई वाली बात को समझ कर उसका जरूर पालन करता। क्योंकि वो तो ब्रह्मज्ञानी थे, इसलिये उन्होंने अपनी बात जबरदस्ती नहीं मनवाई, पर आज यह भूल लगती है हमने उस समय

AUGUST ✲ SATURDAY 23

उनकी यह बात नहीं समझी। अन्तिम रात को पहली बार 2:2½ बजे के करीब दादा भगवान के होंठ हिलते देखे, जो कुछ कहना चाह रहे थे। मैं अपने कान उनके होंठों के करीब ले गया तो मैंने सुना - वो कह रहे थे - मैं अजर, अमर, आत्मा हूँ। मेरा कोई मौत नहीं हो सकता आज तक कोई ऐसी तलवार नहीं जो मुझे मार सके उनके यह शब्द सुन कर मैं हैरान हो गया। वैसे तो वो बिल्कुल बेहोशी अवस्था में थे, फिर यह आत्मा का शब्द बोल रहे थे। सवेरे मैंने यह बात लक्ष्मी भ० से पूछी - ये दो बातें कैसे हो रही हैं, एक तरफ इतनी बेहोशी - दूसरी तरफ यह आत्म ज्ञान बोलना। तो लक्ष्मी भ० ने बोला - इतने सालों

SUN 24

की तपस्या है। आत्मा के सिवाय कुछ बोला ही नहीं है तो ऐसा तो होगा ही कि आ० के सिवा कोई बात ही नहीं है। हम ऐसे बैठे यह बात कह रहे थे। कि दादा भ० के रूम से भ० को बुलाया गया। हम दौड़ते हुए अन्दर पहुँचे तो मारवीजनों ने बताया कि दादा ने करवट बदली और जो से खर्राटा आया

S		14	28
M	1	15	29
T	2	16	30
W	3	17	
T	4	18	
F	5	19	
S	6	20	
S	7	21	
M	8	22	
T	9	23	
W	10	24	
T	11	25	
F	12	26	
S	13	27	

SEP 97

ॐ

ॐ

25 MONDAY ✱ AUGUST

1997

ऐसे जैसे उल्टी आने लगी। मैंने मुँह के आगे किनारे पर हाथ भी रखा जैसे हाथ पर उल्टी करे पर उल्टी नहीं की। फिर दादा को करवट से सीधा किया तो सीधा करते समय एक हल्की सी गले में खाँसी जैसे आवाज निकली या शरीर से निकली अन्तिम स्वाँस की और 1:50 से 2:00 बजे के बीच का समय था। 10 मिनट तो बिल्कुल ऐसा वातावरण था जैसे विश्वास नहीं हो रहा था उसके बाद शरीर बर्फ पर रखा गया। सवेरे वाली बर्फ पिघल गई होगी इसलिये दूसरी बर्फ मंगाई जाए। जब दूसरी बर्फ पर शरीर को रखा तो मैं देखकर दंग रह गया बर्फ की सिल्ली वैसे ही पड़ी थी वो पिघली ही नहीं थी। बड़े आश्चर्य की बात थी शरीर 30 घण्टे के बाद भी इतना कोमल था जिसकी कोई हद न थी।

26 TUESDAY ✱ AUGUST

दादा लक्ष्मी भगवान का कल्याण वाली दादी को ज्ञान देना →

कल्याण वाली दादी पाठ पूजा व भक्ति किया करती थी। जब ज्ञान मिला तो उसको बड़ी शान्ति मिली। एक दिन दादा भ० से कहा आप तो सबके घरों में जाते है, मुझ गरीब के पास कल्याण आओ। उसे अन्दर में था भ० आयेंगे या नहीं, पर भ० तो करुणा निधान कल्याण पहुँच गए। वह हैरान हो गई फिर तो कई बार सुबह शाम जाकर उसको तृप्त किया। वह आज तक भ० की महिमा गाती है। कैसे घंटो बैठ जाते, भूख प्यास सब भूल जाते।

दादा भ० का शरीर शांत होने पर उसे बहुत दुख हुआ था। भ० ने उन्हें आकर सम्भाला भ० ने उसके और मोहबंधन काटे। उसने बहुत प्रेमियों को जाग्रत किया। फिर वो उसमें अटक जाए और सुदभी मोह करने लगी। भ० ने उसे इस प्रपंच से छुड़ाकर पूर्ण मुक्त कर दिया। आज वह ज्ञान व प्रेम में सबको मुक्त करती है। और दादा लक्ष्मी भगवान का गुणगान करती है।

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	AUG
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	97
S	9	23	

ॐ

निराकार, परमात्मा, ब्रह्मलीन दादा भगवान के जीवन चरित्र के विषय में अपने अनुभव →

लिखने बैठे पर समझ में नही आता क्या लिखूँ, उनकी अलौकिक जीवन चर्या के विषय में। वे क्या थे और कहाँ तक थे। कुछ भी लिखना व प्रकाश डालना सूरज को दीपक दिखाने जैसी बात भी नही है कोई भी लेखनी उनकी महान महिमा और असीम ऐश्वर्य का वर्णन करने में समर्थ नही है। उनकी मिसाल तो खुद अपनी ही मिसाल है।

यह मेरी निजी अनुभव की परखी हुई बात है कि वे ज्ञान के अखण्ड भण्डार तथा अथाह सागर तो थे ही पर करुणा, उदारता, सहनशीलता, धीरज, नम्रता और अपनीयता उनके रोम-२ में कूट-२ कर भरी हुई थी। तो कोई भी जिज्ञासु उनके सामने आता था तो उसकी बात को या करुण कहानी को बहुत ही प्यार और नम्रता से सुनते थे और प्रेम से उसके प्रश्नों का उत्तर और उलझन को सुलझाया करते थे।

1967 में जब दादा भ० और उनकी Party हरिद्वार से वापस लौटती हुई लखनऊ पधारी, तब मुझे पहली बार उनके सौम्य साकार स्वरूप के दर्शन हुए। जब मैं पहले दिन प्रातःकाल के समय उनके ठहरने के स्थान पर सत्संग में गया तो उस समय लक्ष्मी भगवान की आकाशवाणी चल रही थी। उस समय वहाँ पर दादा भ० उपस्थित नही थे क्योंकि उनको गोपालखेड़ा के राजा अपने साथ अपने गाँव में ले गये थे। वह २-३ दिन के बाद वापस आये थे। तो २-३ दिन तक प्रातः काल बराबर लक्ष्मी भ० को सुनता रहा अन्य बातों को भी observe करता रहा। मैं बहुत लम्बे अवसर तक इधर उधर भटक कर आया था तो मेरे ऊपर सब बातों का बहुत ही प्रभाव पड़ा कि इतना ऊँचा ज्ञान इनके श्री मुख से निकल रहा है और बाहरी आडम्बरों और किसी प्रकार का दिखावा नाम मात्र को भी नही है। तो दूसरे दिन ही मेरे अंदर

29 FRIDAY ✡ AUGUST

ज्यादा जाग्रत हो गई और मैं इनकी ओर खिंच गया तीसरे
दिन मैंने लक्ष्मी भ० से प्रार्थना की मेरे कुछ प्रश्न है जिनका
मैं स्पष्टीकरण करना चाहता हूँ तो उन्होंने कहा दादा भ०
के पास जाईये वही आपके प्रश्नों का उत्तर समझायेंगे।
तब मैं दादा भ० के पास गया और उनसे प्रार्थना की
कि मैं कुछ अपने प्रश्नों का उत्तर चाहता हूँ तो वह कहीं
जाने के लिए खड़े थे। पर वह मेरे कहने पर तुरन्त बैठ
गए। और उन्होंने बहुत नम्रता से, प्यार से, अपने पन से
हरेक मेरे प्रश्न के उत्तर को समझाया। आ० का अहंकार
मन बुद्धि शरीर से क्या संबन्ध है और क्यों है। इन
सब बातों को बहुत ही सीधी सादी सरल भाषा में समझाया
जिसको मैं कभी भूल नहीं सकता। एक बात पर जोर देकर
बताई थी। कि यह हमेशा याद रखना कि तू देह नहीं है
जिस में सब विकार है तू आत्मा है जो निर्विकारी है इसलिये
आज ही विकारी देह से अलग हो जाओ। बस उसी दिन से
आज तक उनके जो मुख से निकले हुए

30 SATURDAY ✡ AUGUST

अमर वाक्य की करामत को अंदर में अनुभव करता
रहा हूँ कि इतनी सरल और आसान में आसान युक्ति बताई।
जिससे जल्द ही आत्म अनुभव की ओर कदम बढ़ने लगा।
इसमें कुछ भी ध्यान, धारणा, समाधि, पूजा, पाठ जाप-ताप
माला कुछ भी नहीं करना पड़ता है और बराबर ऊपर उठता
जा रहा हूँ जिसका अच्छा परिणाम यह हुआ कि आज तक
४-५ घंटे उसी सतगुरु के दिखाए घर में रहता हूँ। उसके
बाद जब दादा भ० की पार्टी 1968 में नेपाल से कानपुर होती
हुई लखनऊ पधारी तो उनके पावन चरणों ने मेरी छोटी सी कुटिया
को पवित्र किया था तब मैंने बहुत नजदीक से उनकी रहनी को

31 SUN

observe किया कि सचमुच वो करुणा के सागर और
प्रेम के अवतार थे। और गीता ज्ञान को अपनी रहनी
में सक्रिय रूप से उतारे हुए एक जीती जागती अवतार
की तसवीर थी। उस समय उनके पास अकेले में
बैठने का, उनसे बातचीत करने का और उनको अन्दर
से जानने का मौका मिलता था। उनके पास एक
छोटी सी अटैची थी। उसमें एक शर्ट, पैंट, बनियान

S		10	24
M		11	25
T		12	26
W		13	27
T		14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	31
M	4	18	
T	5	19	
W	6	20	
T	7	21	
F	8	22	
S	9	23	

AUG 97

ॐ

लूंगी और लंगोटी रहती थी। जिसको वो स्वयं धोकर सुखा देते थे। और सूखने पर स्वयं उठाकर रख देते थे। उनकी हर एक चीज चश्मा, चप्पल, वगैरह बहुत सम्भाल कर रखते थे।

सत्संग में इतनी ठोस और सूत्र में उनकी आकाशवाणी गूँजती थी जो उनके ज्ञान की अंदर में परिपक्वता दिखती थी। वह संक्षेप में ऐसा बोला करते थे सो प्रभु दूर नाही सो तू है। गुरु बिन घोर अंधेरा। अपने को और सबको ब्रह्म समझो। घड़ी इक बिसरू राम - - - - - । ओम ओम सतगुरु प्रसाद। अज्ञानी कर्म में फंस जाता है। कोट कर्म बन्धन के मूल। ज्ञान भया तो कर्म ही नाश। तत्व दर्शी गुरु जिसने बेअन्त का अन्त पाया है, वह तुमको भी मुक्त कर देगा। सूरदास गया है घर कुल परम्परा से आँखे होते हुए अन्धा कहलाने आया है। अब अपने ऊपर कृपा करनी चाहिए। मुक्त अंहकारी मुक्त है। जितना आपने बजाये है उतने बजे है।

गुरु कहे सागर तू पानी मीठा तुम करो हाजी - २। तुम करो भलो हम भला न जाने - - । जो तुद भावै भली कार अक्ल को जुबान देकर इश्क करो। No where को Now here कर के देखो। खुदी छोड़ने से खुदा मिलता है जुदाई छोड़ो तो खुदाई मिले। गंगा सागर से मिली तो गंगा सागर होए। खुद को खुदा समझो। आखिर मिला न जे रब और सब मिला तो क्या हुआ।

एक बड़े ऊँचे घराने में जन्म लेकर और ऊँची सोसाइटी में रहकर भी किस प्रकार से उन्होंने अपने जीवन को change किया। और किस तरह से अपने जीवन को उन्होंने Non-Possesion बनाया यह उनकी अपने में अपनी मिसाल और अलौकिक आदर्श है। जो कोई भी उनके सम्पर्क में आया उसके ऊपर उनके आदर्श की छाप पड़े बिना न रह सकी।

एक बार उन्होंने बताया था कि जब वह फौरेन में थे १९-२-२५ के लगभग तो उन्होंने एक सौदा तय किया और वहीं पर एक दूसरे व्यापारी को

S		12	26
M		13	27
T		14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	
S	5	19	
M	6	20	
T	7	21	
W	8	22	
T	9	23	
F	10	24	
S	11	25	

OCT 97

ॐ

ॐ

03 WEDNESDAY * SEPTEMBER

1997

उन्होंने बेच दिया था जिससे उन्हें एक लाख का Profit हुआ था। जब पहली बार हवाई जहाज से India की यात्रा शुरू हुई थी तो शौकिया जापान से भारत हवाई जहाज से आए थे तो देखो माया में भी इतना सफल और सार्थक जीवन बिताने के बाद भी जब वह सतगुरु की शरण में आए तो किस तरह से अपने उस जीवन को उन्होंने मोड़ा वह एक अजीबोगरीब बात है। उनके ज्ञान भरे जीवन की रहनी देखकर कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि सचमुच वे अपने जीवन में सुखी सम्पन्न और शाह खर्च रहे होंगे। यह किस प्रकार से लोकारीत से ऊपर उठे। यह उनका अपने सतगुरु के वचन पर मर मिटने का जीता जागता और जीवंत उदाहरण आज भी हम सभी प्रेमियों के सामने है है मैं को खत्म करना और लोकारीत से ऊपर उठना ही सतगुरु के वचन को अन्दर बसाना है एक बार उन्होंने मुझे बताया था कि मेरे पास जब कोई भी जिज्ञासु आता है तो

04 THURSDAY * SEPTEMBER

मेरे अन्दर यह लगन रहती है कि जल्दी से जल्दी यह ज्ञान समझ जाएँ, तो माया की आग से बच जायेंगे। बहुत सी ज्ञान की Point उसको समझाने के बाद भी बोलते थे कल फिर आना तो रात में उसके लिए नई-2 Points निकाल के उसको अगले दिन समझाने के लिए रखते थे। यह उनके सहज प्यार और असीम कृपा, करुणा का परिणाम कहें। अपनी एक-2 चीज चश्मा, पैन को इतना सम्भाल के रखते थे कि वास्तव में हर एक वस्तु में वह आ० का ही दीदार करते थे। वह बताते थे कि चीज में जाने से आत्मा का दीदार मिल जाता है। उनकी उदारता का कहाँ तक बखान करें। वह सबको अपना स्वरूप करके तो देखते थे पर जो भी उनके पास पैसा था वह भी सत्संग में प्यारों पर खर्च कर देते थे। यहाँ तक कि बेटे के ससुराल से जो भी केक आता था वह भी सत्संगियों को ही खिला देते थे।

अपने को उन्होंने यहाँ तक खत्म किया

S		14	28
M	1	15	29
T	2	16	30
W	3	17	
T	4	18	
F	5	19	
S	6	20	
S	7	21	
M	8	22	
T	9	23	
W	10	24	
T	11	25	
F	12	26	
S	13	27	

SEP 97

ॐ

ॐ

कि घर में देर से आने पर अगर खाना नहीं बचा है तो बाजार से जाकर डबलरोटी से ही पेट भर लेते थे। कोई कपड़ा रात को ओढ़ने को न मिले तो बरसाती ओढ़ कर बालकनी में ही शरीर को सुला देते थे यह उनका कैसा एक उच्च आदर्श है जो हम सभी उनमें आस्था रखने वालों के सामने है। और आज भी हमें सिखा रहे हैं। और आगे भी हमें सिखाते रहेंगे।

हमने देखा है कि यह मशाल जो दादा भ० ने अपने पुरुषार्थ से अपने आपने को मिटाकर जलाई है वह ज्योति जो अपने अस्तित्व को समाप्त करके उन्होंने प्रकट की, आज किस तरह से एक दूसरे शरीर में समा गई। वह प्रकाश चमचमाती हुई ज्योति लक्ष्मी भ० के रूप में चमक रही है।

हम देखते है कि जो श्रद्धालु उस चमचमाती ज्योति के सामने आता है वह

चकाचौंध हो जाता है। और जब वह उसको अन्दर में अनुभव करता है तो उनकी जबान बन्द हो जाती है

वह ज्योति की चमक जहाँ-2 पहुँचती है वहीं पर उसने अपना चमत्कार दिखाया है। दिल्ली या बम्बई कानपुर हो या लखनऊ, सूरत हो या बनारस, हैदराबाद हो या अहमदाबाद, आगरा हो या ग्वालियर सब जगह प्रकाश दे रही है।

अनेक भटकते हुओं को, मुरझाये चेहरों को दुखी दिलों को कर्मों के सताये प्राणियों को उदास मनो को वह ज्योति सच्चा रास्ता दिखा रही है। और आगे भी सतमार्ग दिखाती रहेगी। क्योंकि उसमें

सच्चाई है, करुणा है, प्रेम का झरना है। निष्कामता की पराकाष्ठा है समानता है अजरता और अमरता का आनन्द है।

"जय दादा लक्ष्मी भगवान की"

OCT 97			
S		12	26
M		13	27
T		14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	
S	5	19	
M	6	20	
T	7	21	
W	8	22	
T	9	23	
F	10	24	
S	11	25	

ॐ

08 MONDAY ✥ SEPTEMBER

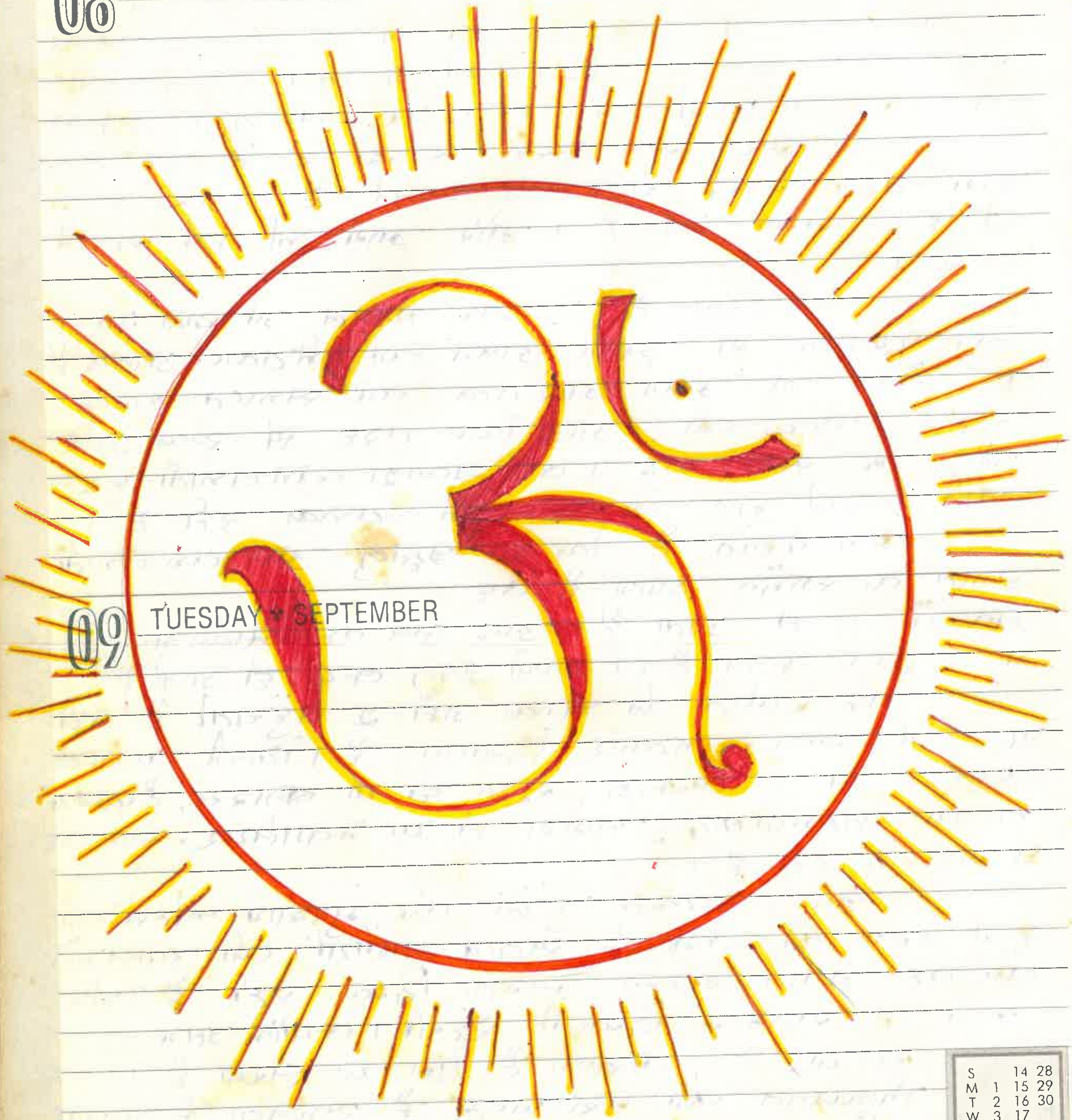

09 TUESDAY ✥ SEPTEMBER

S		14	28
M	1	15	29
T	2	16	30
W	3	17	
T	4	18	
F	5	19	
S	6	20	
S	7	21	
M	8	22	
T	9	23	
W	10	24	
T	11	25	
F	12	26	
S	13	27	

SEP 97